बीकानेरी–नामपद

-: लेखक :-
राम कृष्ण व्यास

203596

प्रकाशक
श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन, बीकानेर

@ सर्वाधिकार सुरक्षित

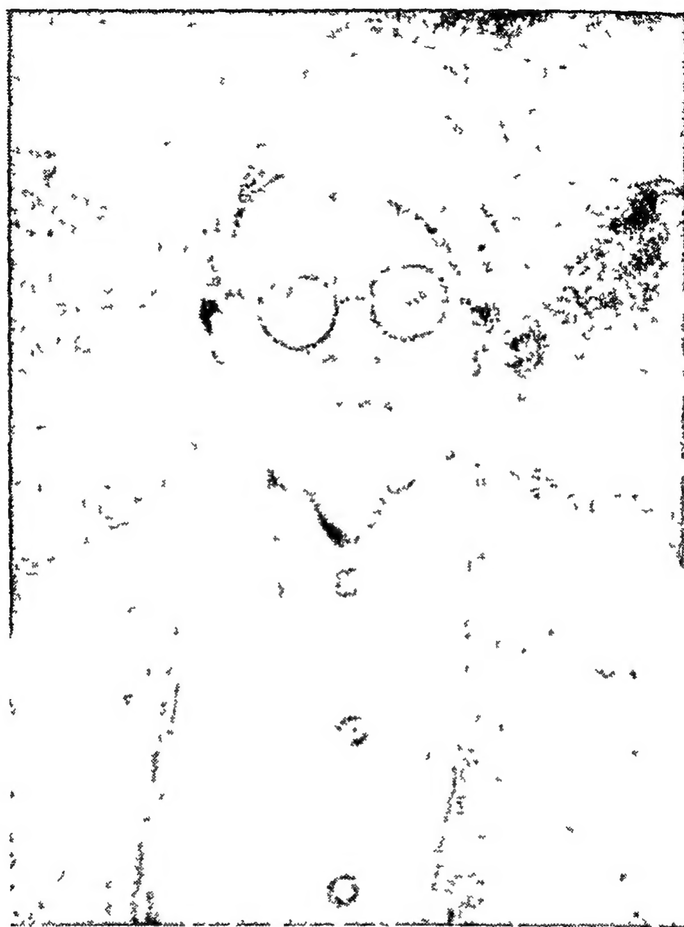
-: मुद्रक :-
मरुदीप प्रिंटिंग प्रेस, कोट गेट, बीकानेर

BIKANERI NAMPAD

Ram Krishna Vyas

Price Rs. 12-50

परमपूज्य स्व० नानाजी पं० हरदास जी पुरोहित पुण्य स्मृति ग्रन्थमाला :



स्व० पं० हरदास जी पुरोहित

भूमिका

निरुक्तकार के अनुसार पद के नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात चार भेद होते हैं[1] और पाणिनि सुबन्तों और तिङन्तों को पद की संज्ञा देते हैं।[2] यास्क के आख्यात तो पाणिनि के तिङन्त या क्रियापद हैं, पर क्या यास्क के शेष तीन पद नाम, उपसर्ग और निपात पाणिनि के "सुवन्त" हैं।। ? सामान्य रूप से सुवन्त के अन्तर्गत नामों-संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषणों पर विचार होता है और 'अव्यय' शीर्षक के अन्तर्गत अनेक व्याकरण-पुस्तकें उपसर्ग एवं निपात पर विचार करती हैं। इस प्रकार प्रयोगतः केवल नाम ही 'सुवन्त' हैं और उपसर्ग और निपात सुवन्त परिधि से वाहर हैं।

पाणिनि ने 'अव्ययादाप्सुपः'[3] कहकर अव्यय में सुप् विभक्ति का लोप माना हैं। उनकी दृष्टि से अव्यय भी सुवन्त ही है। उपसर्ग और निपातों को वाक्य में प्रयोगार्ह बनाने के लिए 'सुप्' प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है; उसके विना वे नामों के समान वाक्य में प्रयुक्त नहीं हो सकते। इस दृष्टि से यास्क के उपसर्ग, निपात और नाम पाणिनि के 'सुवन्त' पद संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं। इन सभी में 'सुप्' विभक्तियां लगती हैं; कहीं वे लुप्त हो जाती हैं और कहीं वे प्रकट रहती हैं।

यदि हम पाणिनि के द्वारा दी गई प्रातिपदिक की परिभाषा[4] पर विचार करते हैं तो पाते है कि धातु और प्रत्यय के अतिरिक्त भाषा के समस्त अर्थवान शब्द प्रातिपदिक हैं। कृदन्त, तद्धित व समस्त शब्दों को भी प्रातिपदिक संज्ञा मिली है।[5] इस प्रकार संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण के अतिरिक्त अव्यय भी प्रातिपदिक है क्योंकि वे अर्थवान हैं और धातु व प्रत्यय नहीं होते तथा वे कृदन्त या तद्धित होते हैं ये प्रातिपदिक शब्द ही वाक्य में प्रयुक्त होने पर विभक्ति प्रत्यय युक्त होने पर 'सुवन्त' संज्ञा प्राप्त करते हैं। प्रातिपदिकों का अस्तित्व भाषा में सैद्धान्तिक

१—चत्वारि पदजातानि नामाख्यातेचोपसर्गनिपाताश्च ॥ निरुक्त १/१/

२—सुप्तिङन्तं पदम्ः ॥ अष्टाध्यायी १/४/१४/

३—पाणिनिः ॥ अष्टाध्यायी २/४/८२/

४—अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्ः ॥ अष्टाध्यायी १/२/४५/

५—कृत्तद्धितसमासाश्चः ॥ अष्टाध्यायी /१/२/४६/

आधार पर हीहोताहै,वास्तव में भाषा व्यवहार में तो पदों का ही प्रयोग मिलता है। ये प्रातिपदिक ही प्रकृति-प्रकारभी हैं। ये ही विकार युक्त होकर पद-स्थान प्राप्त करते हैं।

प्रातिपदिक के अतिरिक्त धातु एवं प्रत्यय प्रकृति श्रेणी में आते है[1] धातु का प्रयोगार्ह रूप तो क्रियापद (तिङन्त) है और प्रातिपदिक का प्रयोगार्ह रूप नामपद (सुबन्त) है। प्रत्यय उन्हें शब्द से रूप या पद बनाते हैं। अत: अर्थ की दृष्टि से भाषा के दो केन्द्र हैं—प्रथम मूल केन्द्र है धातु एवं द्वितीय उप केन्द्र है प्राति-पदिक। ये दोनों ही सबध तत्व-प्रत्यय से जुड़कर भाषा का निर्माण करते हैं।

भारतीय आर्य भाषाओं में धातु शब्द का नाभिक होती है। उस पर जब प्रत्यय प्रक्रिया प्रकट होती है तो विभिन्न प्रकार के प्रातिपदिक शब्द बनते हैं। इन व्युत्पादक प्रत्ययों के अतिरिक्त व्याकरणिक प्रत्यय भी होते हैं जो शब्द को वाक्यांग रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। सामान्य रूप से यह स्वीकार किया गया है कि ये विभक्ति चिन्ह (व्याकरणिक प्रत्यय) नामिक शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं। [2] जहां इनकी प्रकट प्रक्रिया नहीं दिखाई देती वे नामिक नहीं होते। इसीलिए अव्यय नामपदों की श्रेणी में नहीं आते।

संकुचित अर्थ में केवल संज्ञापद ही नामपदों की श्रेणी में आते हैं, क्योंकि किसी के भी नाम को 'संज्ञा' कहते है। [3] पाणिनि द्वारा प्रयुक्त सर्वनाम शब्द में सर्वादि शब्द के व्याकरणिक प्रयोगों की एक रूपता के साथ 'नाम' शब्द से उनकी संज्ञा के स्थान पर होने का संकेत था,जो उत्तर-काल में सर्वनाम के वर्तमान अर्थ में विकसित हो गया। वस्तुतः सर्वनाम नाम न होकर वस्तुओं के निर्देशक होते हैं। विशेषण तो नाम' ही होते हैं, इन्हें संस्कृत में भी नाम-रूप में स्वीकृति मिल गई थी। 'नाम धातुए" वे धातुए होती हैं जो संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण आदि से बनती हैं। अतः स्पष्ट है कि नाम का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण के अर्थ में हो रहा था, पर उनके अतिरिक्त भी नाम शब्द का प्रयोग होता था।

संज्ञा शब्दों, विशेषणों, सर्वनामों तथा क्रिया-विशेषणों से बनी क्रियाए 'नामिक क्रियाएं'होती है।[4] इस प्रकार नाम सीमा में क्रिया-विशेषण भी आते है।

१—डॉ० भोलानाथ तिवारी : भाषा विज्ञान कोश, पृष्ठ ३७३
२—डॉ० ज० म० दीमाशित्स : हिन्दी व्याकरण की रूप रेखा पृ० २६
३—डॉ० भोलानाथ तिवारी : भाषा विज्ञान कोश पृ० ६७३
४—डॉ० ज० म० दीमशित्स : हिन्दी व्याकरण की रूप रेखा पृ० २५०

अव्,तव्,तवसर्: आदि ही हैं, पर ऐसे क्रिया-विशेषणात्मक नाम अपने व्यापक अर्थ में प्रत्ययों को भी अपनी सीमा में समेट कर चलता आ रहा है। प्रत्ययों के विभक्ति के अन्तर्गत ले इनकी एक अलग श्रेणी बन गई है और वैयाकरणों ने इन पर दूसरे ढंग से विचार किया। इस अध्ययन का विद्यार्थी नाम, सर्वनाम व विशेषणों के रूपों की खड़ाई कर सका था पर अलग रूप-रचना के अभाव में होते हुए भी अलग श्रेणी स्थापित कर, पद और शेष नामपदों से दूर जा पड़े।

प्रस्तुत लघु प्रबन्ध के लेखक श्री रामकृष्ण व्यास सीताडेगी 'नामपदों' में संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण पर ही विचार करते हैं, अतएव इनकी अध्ययन सीमा में आदर के विषय हैं। इतिहास-क्रम में एक विदेशी प्रभाव से शाब्दिकों के रूप में जिन व्याकरणिक शब्द-भेदों को स्वीकार किया जा रहा है उन्हीं पर विस्तार से अपने प्रबन्ध में विचार किया है। प्रबन्ध के दूसरे, तीसरे व चौथे अध्यायों में नामपदों पद-संज्ञापद, सर्वनाम-पद व विशेषण-पद पर विचार हुआ है।

आधुनिक भाषाविज्ञों में यह प्रवृत्ति दिखाई देती है कि जो-कुछ हमारा प्राचीन ज्ञान है (चाहे वह किसी क्षेत्र का हो) वह हेय है; अतः त्याज्य है और पाश्चात्य ज्ञान श्रेष्ठ है; अतः ग्राह्य है। पर यह दृष्टि-दोष है। जब ब्लूमफील्ड पर पाणिनि के व्याकरण पर विचार करते हुए लिखते हैं कि 'संस्कृत के अतिरिक्त संसार की अन्य किसी भाषा का इतना पूर्ण वर्णनात्मक अध्ययन नहीं हुआ है'— तथा पाश्चात्य विद्वानों के लिए भारत का ज्ञान अध्ययन का आधार बना है। तब भारतीय व्याकरणिक उपलब्धियों की उपेक्षा करना भ्रम को स्वीकार करना है। श्री व्यास ने अपने अध्ययन में भारतीय और पाश्चात्य दोनों शैलियों को अपनाया है। इसलिए दोनों की पारिभाषिक शब्दावलियों का उपयोग प्रबन्ध में हुआ है। संज्ञापद अध्याय में समासों के अध्ययन का आधार रूप-रचनात्मक रहा है, पर पदांशगत अर्थाश्रित विश्लेषण भी उपेक्षित नहीं रहा है। सर्वनामों के अध्ययन में केन्द्रक रूपों की खोज का प्रयोग सुन्दर है।

प्रत्येक भाषा या बोली में ऐसे अनेक शब्द होते हैं जो अपनी भगिनियों से भिन्न होते हैं। नामपदों के निर्माणकारी प्रत्ययों के अध्ययन में ऐसे शब्दों के प्रत्यय का विश्लेषण गवेषणा बुद्धि की अपेक्षा रखता है। जो शब्द अन्य भाषाओं

से मिलते-जुलते हैं उनका अध्ययन सरलता से अनुकरण के आधार पर हो जाता हैं। पुस्तक के पाँचवें अध्याय में दोनों प्रकार के शब्दों की खोज हुई है। जहां लेखक ने केवल बीकानेरी में प्राप्त शब्दों का विश्लेषण किया है, वहां उसका बुद्धि-कौशल प्रकट हुआ है।

प्रबन्ध का प्रथम अध्याय बीकानेरी बोली का परिचय ध्वनि, रूपादि की दृष्टि से प्रस्तुत करता है। इस अध्याय में लेखक द्वारा जिन नवीन ध्वनियों का अनुसंधान किया गया है, वे विद्वानों को अवश्य ही आकर्षित करेंगी, पर उनके लिए जिन लिपि-संकेतों का उपयोग किया है वे सर्वथा निजी होने से विद्वानों को सहज ग्राह्य बन सकेंगे, यह संदिग्ध है।

मैं श्री व्यास के इस भाषा–वैज्ञानिक अध्ययन का स्वागत करता हूं। उन्होंने अपने अनवरत अध्यवसाय और अथक् बुद्धि-श्रम द्वारा बोली का अध्ययन, वर्गीकरण, विश्लेषण, संश्लेषण और तथ्य निरूपण प्रक्रिया द्वारा किया हैं। अपने अध्ययन से यथा संभव वे पूर्वाग्रह से मुक्त तथा विषय-निष्ठ रहे हैं।

मुझे आशा है कि यह प्रबन्ध राजस्थानी की अनेक बोलियों के अध्ययन के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

डॉ० कन्हैयालाल शर्मा,
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर (राज०)

प्राक्कथन

जब वाक्यान्तर्गत ध्वनियों के समूह में व्याकरणिक प्रयोग के अनुसार अर्थबोध की क्षमता होती है तो उसे 'पद' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। संस्कृत वाङ्मय में सुप् (सु, औ जस्) एवं तिङ् (तिप् तस, झि) के अभाव में पदों का निर्माण असंभव है। भारोपीय परिवार की आर्य भाषा संस्कृत में पद रचनात्मक प्रक्रिया-संयोगात्मक होने के कारण दुरूह एवं जटिल है। मध्यकालीन भारतीय भाषाओं में सरलीकरण की प्रवृत्ति प्रारंभ हो गई थी, जिसको थाती के रूप में आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं एवं बोलियों ने स्वीकार किया। फलस्वरूप संस्कृत की दुरूह पद रचना प्रक्रिया भी सरल बन गई। आधुनिक भाषाओं व बोलियों में तो जो भी शब्द वाक्यान्तर्गत प्रयुक्त होकर अर्थाभिव्यक्ति में सहायक होते हैं वे ही 'पद' संज्ञक होते हैं; चाहे उस शब्द में /-०/ विभक्ति की ही कल्पना क्यों न करनी पड़े।

संस्कृत वैयाकरणों ने 'सुप्तिङन्तम् पदम्' १/४/१४/ सूत्र में पदों को दो भागों में विभाजित किया है - (अ) नामपद (सुबन्त) एवं (आ) क्रियापद (तिङन्त)। नामपद से अभिप्राय है जिनकी रचना में प्रातिपदिकों के पश्चात् लिंग, वचन एवं कारक बोधक विभक्तियां परिलक्षित होती है। नामपद तीन प्रकार के होते हैं- संज्ञापद, सर्वनामपद तथा विशेषणपद। संज्ञा एवं विशेषणवत् प्रयुक्त होने वाले कृदन्त एवं तद्धितान्त शब्द भी 'नामपद' की सीमा में आते हैं। अस्तु! प्रकृतमनुसरामः।

मेरा विवेच्य विषय 'बीकानेरी - नामपद' है जिसे मैंने पांच अध्यायों में विश्लेषित किया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक 'विषय-प्रवेश' है। इसमें बीकानेर के प्रागैतिहासिक स्वरूप, बीकानेरी शब्द की व्युत्पत्ति बीकानेरी शब्द के विविध अर्थ एवं उसका बोली रूप में प्रयोग, बीकानेरी क्षेत्र व सीमाएं बीकानेरी भाषी जनसंख्या, मारवाड़ी एवं बीकानेरी में अन्तर, आदर्श बीकानेरी एवं बीकानेरी की भाषा वैज्ञानिक विशेषताएं आदि विविध पहलुओं पर विचार किया गया है। शोध-प्रबंध का यह अध्याय वस्तुतः प्रस्तुत

अध्ययन के लिए भूमि तैयार कर देता है ।

द्वितीय अध्याय में बीकानेरी संज्ञापदों पर विचार किया गया है । संयोग की दृष्टि से संज्ञापदों को दो भागों में विभाजित किया गया है – एक स्वतंत्र रूपाँश युक्त नामवाची-पद (संज्ञापद) एवं दो या दो से अधिक स्वतंत्र रूपांश युक्त नामवाची-पद (समस्तसंज्ञा-पद)। एक स्वतंत्र रूपाँश युक्त पदों में संज्ञा के विविध तत्त्वों- प्रातिपदिक, लिंग, वचन एवं कारकों का विवेचन किया गया है। समस्त संज्ञापदों में, वर्णनात्मक आधार पर समस्त संज्ञा-पदों के विविध पहलुओं पर विचार किया गया है ।

तृतीय अध्याय में सार्वनामिक पदों पर विचार किया गया है । सर्व प्रथम बीकानेरी में उपलब्ध सर्वनाम पदों का वर्गीकरण किया गया है । तदनन्तर सार्वनामिक केन्द्रक रूपों एवं उनके मूल व तिर्यक् आधार विधायक प्रत्ययों का विश्लेषण किया गया है। इसी अध्याय में सार्वनामिक समस्त-पदों पर भी विचार किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय 'विशेषण-पद' है। बीकानेरी विशेषणों को दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया है— प्रथम वे विशेषण पद जो अपने विशेष्य के लिंग, वचन एव कारक से प्रभावित होते हैं एवं द्वितीय वे जो विशेष्य के लिंग,वचन एवं कारक से सर्वथा अप्रभावित रहते हैं। इसी अध्याय में क्रियामूलक विशेषण पदों पर भी विचार किया गया है ।

पंचम अध्याय में नामपदों के निर्माणकारी प्रत्ययों पर विचार किया गया है। इस अध्याय में नाम निर्माण की पद्धति पर विचार किया गया है । पद रचनात्मक प्रक्रिया में प्रत्ययों का योग अनिवार्य रूप से रहता है। पूर्व, पर एवं मध्य प्रत्यय सर्वनाम पदों के अतिरिक्त धातुओं एवं प्रातिपदिकों में संलग्न होकर अभिनव पदों की रचना करते हैं। अतः इस अध्याय में इन पर विस्तार से विचार किया गया है ।

भाषा के इस चरम 'अवयव' 'नामपद' के विश्लेषण की प्रेरणा मुझे अपने श्रद्धेय गुरुवर डॉ० कन्हैयालाल जी से मिली और मैंने बीकानेरी नामपदों के अनुसंधान का निश्चय कर लिया। मुझे ज्ञात है कि

अद्यावधि इस विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। इतना ही नहीं नामपदों के परिपार्श्व में भी अत्यल्प ही कार्य हुआ है।

साहित्यिक एवं भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से राजस्थानी एक महत्त्वपूर्ण भाषा है। राजस्थानी की बोलियों में मारवाड़ी प्रमुख बोली है एवं बीकानेरी इस मारवाड़ी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शाखा है; किन्तु यह खेद का विषय है कि इस बोली पर अद्यावधि कोई शोध कार्य नहीं हुआ। यद्यपि पाश्चात्य विद्वान ग्रियर्सन ने इस बोली पर कुछ प्रकाश डालने का प्रयास किया है पर वह नाम मात्र का ही कहा जा सकता है। छुट-पुट पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित एतद् विषयक निबन्ध भी नाम मात्र के हैं। बीकानर का मूल निवासी एवं बीकानेरी भाषी होने के कारण मुझे यह अभाव खलता था। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध इस अभाव की पूर्ति की दिशा में विनम्र प्रयास है।

यह तो स्पष्ट है कि बोली का ऐसा उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य केवल मुझसे तब तक संपन्न नहीं हो सकता था जब तक भाषा एवं साहित्य के समरूप से अधिकारी विद्वान प्रो० कन्हैयालाल जी शर्मा का निदेशन नहीं होता। इतना ही नहीं डॉ० साहब ने समयाभाव में भी सस्नेह भूमिका लिख कर अपार अनुकम्पा की है। इसके लिए गुरुवर को कोटिशः नत मस्तक करने के अतिरिक्त कर ही क्या सकता हूँ।

परम पूज्य गुरुवर डॉ० प्रभाकर जी शास्त्री एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत) पी. एच. डी, डी. लिट्. के परिश्रम का ही यह फल है कि मैं इस उत्तरदायित्व को सफलता पूर्वक निभा सका। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाषा विज्ञान के विभिन्न विद्वानों, बीकानेरी बोली के मर्मज्ञों — पं० नरोत्तमदास जी स्वामी, विद्याधर जी शास्त्री, डॉ० मनोहर शर्मा प्रभृति विद्वानों की प्रेरणा एवं सहपाठीगणों की शुभकामनाएँ यदि मेरे साथ न होती तो इस प्रवंध की पूर्ति दुष्कर हो जाती अतः मैं वड़ी विनम्रता से उन सब के प्रति आभारी हूँ।

इस सुअवसर पर मैं अपने परम पूज्य पिताजी पं० वगसी रामजी एवं माताजी चाँदा देवी को कोटिशः नत मस्तक करता हूँ जिन्होंने अपार

कठिनाइयों का सामना करते हुए भी मुझे इस प्रबंध लेखन के योग्य बनाया है। पांचा मासीजी व पं० गिरधरलालजी का आशीर्वाद ही कृति रूप में फलित हुआ है। परमपूज्य स्वर्गीय नानाजी पं० हरदासजी एवं नानीजी, श्रद्धास्पद मामाजी सर्वश्री पं० लक्ष्मीनारायणजी, हरनारायणजी, युगलनारायण जी व ब्रजनारायण जी, एवं मातृवत् लक्ष्मी मासी, चौथा मासी, वार्डसा मासी, सूरज मासी व परिवार के अन्य सदस्यों का आशीर्वाद ही प्रस्तुत प्रबंध के रूप में प्रतिफलित हुआ है। अतः इन सभी के प्रति मैं श्रद्धावनत हूँ। मेरे भ्रातागण गोपालनारायाण एम.ए., एलएल.बी.,शास्त्री भगवानदास किराडू एम. ए., शिवशंकर नारायण एम. ए., शिवकिसन एम.ए. मदन गोपाल, जुगलकिशोर, ब्रजनाथ एम.ए. वेदप्रकाश एम. कॉम, श्रीमती पुष्पा शर्मा एम. ए, एवं मित्रगण शिवधनदास, दुर्गादास ने इस कार्य की पूर्ति में मेरी सहायता की है अतः सभी का आभारी हूँ। प्रवध की समय पर मुद्रण व्यवस्था में मरुदीप प्रेस के व्यवस्थापक मक्खन भाई साहव व जुगलकिशोर जोशी ने विशेष तत्परता दिखाई है अतः इनके प्रति मैं आभारी हूं।

संभव है, मेरे सारे प्रयत्नों व अध्यवसायों के उपरांत भी विचारों या वोली के विश्लेषण में कहीं त्रुटि रह गई हो, किन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि विद्वज्जन उदारता पूर्वक मेरे इस प्रथम प्रयास की भूलों को क्षमा करेंगे एवं अपने बहुमूल्य सुझावों द्वारा लाभान्वित करेंगे। मैं अपनी सफलता इसी में समझूंगा कि मेरी यह कृति मेरी मात्र न रह कर सर्व सुलभ व सर्व ग्राहय हो जाय क्योंकि– 'आपरितोषाद् विदुषाँनसाधुमन्ये प्रयोग विज्ञानम्'।

अंत में 'करकृतमपराद्धं क्षन्तुमर्हन्ति संतः'– इस अभ्यर्थना के साथ अपनी त्रुटियों के प्रति क्षमा याचना करते हुए अपनी श्रम–साधना का यह पुष्प मां भारती को समर्पित करता हूँ।

व्यास – निकेतन
नत्थूसर गेट के भीतर, बीकानेर।
विजयदशमी, सं० २०२८

रामकृष्ण व्यास 'महेन्द्र'
एम.ए. (हिन्दी संस्कृत)



हिन्दी साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान

श्रद्धेय गुरुवर डॉ० सरनामसिंह जी शर्मा 'अरुण'

को

सादर समर्पित

नए लिपि एवं संकेत-चिन्ह

अ- यह अर्द्ध संवृत पश्च अति ह्रस्व स्वर है। हिन्दी की ऐ, इ एवं कभी-कभी अ ध्वनि का उच्चारण बीकानेरी में इस ध्वनि में होता है यथा — हि० ऐसा - बी० अस्सों, हि० कितना - बी० कत्तों, हि० रक्षा- बी० रख्या आदि ।

एँ- यह अर्द्ध विवृत् अग्र ह्रस्व स्वर हैं। बोली में इस ध्वनि का उच्चारण अंग्रेज़ी शब्द Men, Then, Pen आदि के एँ ध्वनि के समान होता हैं, यथा केँरा आदि।

ओं- यह अर्द्ध विवृत ह्रस्व पश्च स्वर है। इस ध्वनि का उच्चारण बोली में अंग्रेजी शब्द 'on' के ओं की तरह होता है यथा बों, थों ओं आदि। हिन्दी की अधिकांश आकारान्त ध्वनियों का उच्चारण इसमें होता हैं।

॰ब. ॰द- बीकानेरी में इन दोनों ध्वनियों में क्रमशः व् + भ् = ॰ब एवं द्+ध् = ॰द का योग है। इन ध्वनियों का उच्चारण न तो 'ब' के समान होता है और न द के समान, यथा ॰बड़वोर में प्रथम ॰ब का उच्चारण द्वितीय 'ब' के उच्चारण से भिन्न है ।

शेष ध्वनियां अधिकतर हिन्दी के समान ही उच्चरित होती है अतः यहां प्रस्तुत नहीं की गई है।

ഗ ध्वनि प्रक्रियात्मक दृष्टि मे संपरिवर्तक का द्योतक।

' ' तथ्य के स्पष्टीकरण के लिए प्रयुक्त संकेत

् हलन्त

→ व्युत्पन्न या सिद्ध रूप का द्योतक

> ऐतिहासिक पूर्व रूप से पर रूप का द्योतक

/ पर प्रत्यय एवं विभक्ति का विभाजक संकेत

√ धातु संकेत

- प्रत्यय के पश्चात् लगने से पूर्व रूप एवं उसके पूर्व में लगाने से पर रूप की द्योतक।

संक्षिप्त-रूप

अप०	अपभ्रंश
आ० भा० आ० भा०	आधुनिक भारतीय आर्य भाषा
आ० ई० ऊ० व्यं० वि०	आकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त, व्यंजनान्त विशेषण
ई०	ईसा
ई० पू० प्र०	ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी
एल० एस० आई०	लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया
गौ० ही० ओ०	गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
ति० आ० वि० प्र०	तिर्यक् आधार विधायक प्रत्यय
पृ०	पृष्ठ
पं०	पंडित
प्रा०	प्राकृत
पु०	पुल्लिग
पु० सं०	पुल्लिग संज्ञा
पप्र०	पर प्रत्यय
बी० रा० इ०	बीकानेर राज्य का इतिहास
भा० वा० सं०	भाव वाचक संज्ञा
मू० आ० वि० प्र०	मूल आधार विधायक प्रत्यय
मू० एवं वि० सं० वि० रूप	मूल एवं विकारी संज्ञा व विशेषण रूप
लि० व० का०	लिंग-वचन-कारक
स० आ० वि० प्र०	सम्बोधन आधार विधायक प्रत्यय
स्त्री० सं०	स्त्री वाचक संज्ञा
सं०	संस्कृत

विषयानुक्रमणिका

३. सर्वनाम–पद

४. विशेषण-पद

५. नामपदों के निर्माणकारी प्रत्यय

बीकानेरी-नामपद

राम कृष्ण व्यास
एम. ए. (हिन्दी, संस्कृत)

अध्याय / १

विषय-प्रवेश

१.१. बीकानेर की प्रागैतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय प्रान्तों में राजस्थान प्रान्त का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वर्णाभ सिकता के विशाल टीलों से आवृत्त बीकानेर नगर इसी प्रान्त के पश्चिम-उत्तर में स्थित है। भूगर्भ शास्त्रियों का अनुमान है कि यह प्रदेश जूरेशिक, कीटेशियम एवं इसोसिन के युगों में समुद्राप्लावित था। टेरीशरी युग में इस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति में परिवर्तन हुआ एवं पृथ्वी की आन्तरिक शक्तियों के संक्रमण से वह भाग ऊपर उठने लगा। शनैः शनैः समुद्र समाप्त हो गया एवं रेतीला भाग निकल आया। वाल्मीकि रामायण में भी समुद्र से मरुस्थल की उत्पत्ति विषयक एक रोचक गाथा मिलती है।[1] वेदों की ऋचाओं से भी उक्त भू-विद्या

१— तस्मात् तद् बाण पातेन त्वपः कुक्षिष्वशोषयत् ।

विख्यातं त्रिषु लोकेषु मरुकान्तार मेव तत् ॥

(युद्ध काण्ड / सर्ग २२ / श्लोक ३६-३७)

अन्वेषण की पुष्टि हो जाती है। ऋग्वेद की ऋचाओं में उल्लेख मिलता है कि सतलुज, व्यास और सरस्वती नदियाँ रथियों की तरह समुद्र में आकर गिरती थीं।[1] बीकानेर के वर्तमान रेतीले भाग पर यद्यपि आज हमें किसी भी नदी के दर्शन नहीं होते तथापि पुरातत्त्वान्वेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि इसकी पश्चिमी सीमा पर कभी सरस्वती नदी बहा करती थी जो पूर्ण रूपेण सूख गई है।[2] पं० विद्याधर शास्त्री की भी यही मान्यता है कि बीकानेर का उत्तर-पूर्वी भाग शतद्रू-सरस्वती की सहायता से अनुप्राणित रह चुका है।[3] इसके अतिरिक्त सिन्धु नदी की सहायक नदी घग्गर भी, जो पहले "हाकड़" के नाम से विख्यात थी, इसके उत्तरी भाग में बहती हुई सिन्धु में जाकर गिरती थी। सरस्वती नदी का लुप्त होना ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी से भी पूर्व मानना उचित है, क्योंकि महाकवि कालिदास ने अपने ग्रन्थों में जहां कहीं सरस्वती नदी का वर्णन किया है, "अन्तः सलीलता" कह-कर ही किया है एवं कालिदास का समय ई० पू० प्र० शताब्दी ही विद्वानों को मान्य है। महाभारत में भी सरस्वती नदी के लुप्त होने का उल्लेख मिलता है।[4] घग्गर के लुप्त होने का समय विद्वानों को ई० की छठी शताब्दी

१— एका चेतत्सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात्।

(ऋग्वेद, ७ मं / ९५ सू० / २ मंत्र)

इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे समुद्रं रथ्येव याथः।

(ऋग्वेद ३ मं / ३३ सू० / २ मंत्र)

२— गौरी शंकर आचार्य : बीकानेर का परिचय, पृष्ठ ७

३— पं० विद्याधर शास्त्री : वर्तमान बीकानेरी और संस्कृत
राजस्थान भारती, अंक २, भाग ४, अक्टूबर १९५४

४— अवलोकनीय महाभारत—
दृश्यादृश्य च भवति तत्र सरस्वती।
एतत्र दिव्या सप्तगंगा त्रिपु लोकेपु विश्रुता ॥

(भीष्म पर्व ६/५०)

मान्य है। उक्त नदियों के सूखने का मार्ग तो आज भी दृष्टिगत होता है। वर्षा काल में पानी इसी मार्ग से हनुमानगढ़, सूरतगढ़, होता हुआ अनूपगढ़ पहुँच जाता है जिसे आजकल "नाली" कहते हैं।

उपर्युक्त एवं अन्याय प्रमाणों से स्पष्ट हो जाता है कि समुद्र के पीछे हट जाने या सूख जाने के परिणाम स्वरूप मरु प्रदेश उद्भूत हुआ। बीकानेर प्रदेश में आज भी कहीं-कहीं समुद्र के अवशेष के रूप में शंख, सीपी, कौड़ी, गोल पत्थर आदि मिलते हैं, जो बीकानेर का किसी काल विशेष में समुद्राप्लावित होने की सूचना देते हैं एवं जो नदियां (सरस्वती, घग्गर आदि) इसकी उत्तरी-पूर्वी सीमा पर प्रवाहित होती थी वे भी अब पूर्णतः लुप्त हो गई है।

१.२. बीकानेर प्रदेश का नामकरण

पौराणिक विवरणों से स्पष्ट होता है कि बीकानेर का प्राचीन नाम "जांगल" देश था।[1]

१– (क) गौरी शंकर हीराचन्द ओझा : बीकानेर राज्य का इतिहास, पहला भाग, पृष्ठ १

(ख) स्कन्द पुराण के प्रभास माहत्म्य में तीर्थाष्टक की गणना है, जिसमें पुष्कर के साथ (कुरु जांगल) का भी पाठ है। (अध्याय ८८, श्लोक २२)

(ग) अवलोकनीय महाभारत

(अ) कच्छा गोपाल कक्षाश्च जांगला कुरु वर्णकः
(भीष्म पर्व, ९ / ५६)

(ब) तत्रे मे कुरु पांचाला शाल्वामाद्रेय जांगला
(अग्नि पर्व, १० / ११)

(स) पैत्र्यं राज्यं महाराज। कुरवस्ते स जांगलाः।
(उद्योग पर्व ५४ / ७)

संस्कृत के शब्द कल्पद्रुम एवं भावप्रकाश में जो व्याख्या मिलती है, वह भी इस नाम की पुष्टि करती है, क्योंकि आज भी बीकानेर की भौगोलिक परिस्थितियां परिभाषानुकूल ही है ।[1] बीकानेर के नरेशों को अद्यावधि " जंगलधर बादशाह " की उपाधि से अभिहित किया जाना इसका पुष्ट प्रमाण है ।[2] वर्तमान बीकानेर राज्य राव " जोधा " के पुत्र राव 'बीका' ने १२ अप्रैल, सन् १४८८ (सं० १५४५) को अपने नाम पर बसाया था ।[3] इसलिए इस प्रदेश का नाम बीकानेर पड़ा ।

१. २. १. नामकरण विषयक मतमतान्तर

राव " बीका " ने अपने नाम पर ही इस इस प्रदेश का नाम बीकानेर रखा था, इस विषय पर विद्वान मतैक्य नहीं है । निम्न लिखित मत उल्लेखनीय हैं-

१– राव " बीका " के ज्येष्ठ पुत्र का नाम " नरा " था । अतः बीकानेर में यह किंवदन्ती प्रचलित है कि पिता-पुत्र के नाम पर इस प्रदेश का नाम बीकानेर पड़ा ।

२– एक निराधार जनश्रुति यह भी प्रचलित है कि प्राचीन काल में बीकानेर में पानी की कमी के कारण यहां पानी विकता था, इसलिए इस नगर का नाम विक्रयनीय नगर था और विक्रयनीर से बीकानेर बना—

१— स्वल्पोदक तृणोयस्तु प्रवातः प्रचुरातपः ।
स ज्ञेयो जांगलो देशो बहुधान्यादि संयुतः ।।
(शब्द कल्पद्रुम पृष्ठ ५२९)

२– गौ० ही० ओ० : बी० रा० इ०, पृष्ठ २

३– (क) कर्नलटाड : राजस्थान का इतिहास, पृष्ठ ५१५

(ख) बीकानेर की स्थापना विषयक निम्न लिखित पद्य भी प्रचलित है—
पनरै सै पैतालवै सुद वैसाख सुमेर ।
थावर बीज थरपियो बीके बीकानेर ।।

विक्रयनीर>बिक्कनेर>बीकानेर

३— कर्नल टाड ने बीकानेर का नाम राव "बीका" एवं "नेरा" जाट दोनों व्यक्तियों के नाम के मेल से माना है। अपने मत की पुष्टि के लिए उन्होने लिखा है कि "बीकानेर की राजधानी के निर्माणार्थ जो स्थान पसन्द किया गया, उसका स्वामी एक जाट था। बीकाजी ने ज़ाट से उस स्थान की मांग की और आश्वासन दिया कि तुम्हारा नाम जोड़ कर इस राज्य का नाम रखूंगा। उस जाट ने बीकाजी का प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार करते हुए भूमि दे दी। तत्पश्चात् उस भूमि में राजधानी का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ और जिस राज्य की प्रतिष्ठा राव "बीका" ने की, उसका नाम बीकानेर रखा गया। यह दृष्टव्य है कि उस जाट का नाम "नेरा" था।[1]

४—डॉ० गौरी शंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार टाड का यह अनुमान ठीक नहीं है। उनके अनुसार राव बीका ने अपने नाम पर ही इस प्रदेश का नाम "बीकानेर" रखा।[2]

५— भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से देखने पर उपर्युक्त मत युक्ति संगत प्रतीत नहीं होते। वस्तुतः "बीकानेर" शब्द दो शब्दों "बीका + नगर" के मेल से बना है। प्रथम शब्द स्पष्टतः राव "बीका" का ही नाम है एवं द्वितीय शब्द का विकास क्रम डॉ श्याम सुन्दर दास के अनुसार इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

सं० नगरं,>प्रा० णअरो,>अप० नयरु,>आ० भा० आ० भा० नइर, नेर[3]

"नगरं" शब्द से "नेर" शब्द का रूपात्मक एवं ध्वन्यात्मक विकास इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

संस्कृत के "नगरं" शब्द से प्राकृत में "नो णः सर्वत्र"[4] सूत्र से नकार का परिवर्तन णकार में हुआ एवं "कगचजतदपयवां

१— कर्नल टाड : राजस्थान का इतिहास पृष्ठ ५१२

२— डॉ० गौ० ही० ओ० : बी० रा० इ०, (पहला भाग), पृष्ठ ६६

३— डॉ० श्याम सुन्दर दास : भाषा विज्ञान, पृष्ठ १७२

४— वररुचि : प्रोकृत प्रकाश २ / ४२

प्रायोलोपः"[1] सूत्र से अल्पप्राण, कंठ्य स्पर्श व्यंजन " ग " का लोप हो गया। सोर्विन्दुर्न पुंसके[2] सूत्र से " अम् " बिन्दु में परिवर्तित होने पर प्राकृत में "णअरं" रूप सिद्ध हुआ। अपभ्रंश काल में णकार पुनः नकार में परिवर्तित हुआ एवं दो स्वरों के बीच " य " श्रुति का आगम हुआ। अपभ्रंश उकार बहुला भाषा है अतः अं > उ में परिवर्तित हुआ। इस प्रकार अपभ्रंश में " नयरु " रूप सिद्ध हुआ। आ० भा० आ० भा० में सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण य > इ में एवं पदान्त स्वर लोप की प्रवृत्ति के कारण अन्त्य 'उ' का लोप हो गया एवं अ + इ (गुण सन्धि) से " नेर " शब्द व्युत्पन्न हुआ।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि " बीकानेर " शब्द की व्युत्पत्ति दो शब्दों " बीका + नगर " से हुई है। प्रथम शब्द तो निर्विवाद रूप से राव " बीका " के नाम से सम्बद्ध है एवं द्वितीय शब्द " नेर " न राव " बीका " के ज्येष्ठ पुत्र " नरा " से सम्बद्ध है और न ही " नेरा " जाट से। दोनों मत कल्पना प्रसूत ही प्रतीत होते हैं जिसे टाड जैसे विद्वान ने बिना किसी गवेषणा बुद्धि के स्वीकार कर लिया। यदि टाड का मत स्वीकार कर भी लिया जाय तो अन्य प्रदेशों (भटनेर, जोबनेर, चांपानेर) जिनके पीछे " नेर " शब्द जुड़ा है वहां भी " नेरा " जाट का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ेगा जो इतिहास विरुद्ध है। " नेर " द्वारा नगरों के नामकरण करने की परम्परा संभवतः १५ वीं शती से पूर्व प्रचलित थी। इसी पूर्व प्रचलित परम्परा के अनुसार " बीका " ने अपने नाम के पीछे नगर वाचक "नेर" शब्द जोड़कर इस प्रदेश का नाम " बीकानेर " रखा।

इसी बीकानेर प्रदेश में बोली जाने वाली बोली को डॉ० ग्रियर्सन[3] डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी[4] डॉ० भोलानाथ तिवारी[5] पं० नरोत्तमदास

१– वररुचि : प्राकृत प्रकाश २ / २

२– वररुचि : प्राकृत प्रकाश ५/३०

३– डॉक्टर ग्रियर्सन : एल० एस० आई०, भाग ९, पृष्ठ १३०

४– डॉक्टर सुनीति कुमार चटर्जी : राजस्थानी भाषा, पृष्ठ ६-७

५– डॉक्टर भोलानाथ तिवारी : भाषा विज्ञान कोश पृष्ठ ५१५

स्वामी [1] प्रभृति विद्वानों ने वीकानेरी वोली नाम से अभिहित किया है क्योंकि देश वाचक शब्दों के साथ "-ई" प्रत्यय जोड़कर भाषा या वोली वाचक शब्द वनाया जाता है यथा— महाराष्ट + -ई = महाराष्टी, पंजाव + -ई = पंजावी, वंगाल + -ई = वंगाली । इसी प्रकार वीकानेर + -ई = वीकानेरी वोली वाचक शब्द वना है।

१. ३. "वीकानेरी" शब्द के विभिन्न अर्थ और उसका बोली रूप में प्रयोग

"वीकानेरी" शब्द के विविध अर्थ हैं। यह शब्द कहीं संज्ञावत् एवं कहीं विशेषणवत् प्रयुक्त होकर वस्तुओं एवं प्राणियों का वाचक वनता है। परन्तु 'वीकानेरी' शब्द से मेरा आशय उस वोली से है जो वीकानेर प्रदेश में वोली जाती है। वोली रूप में इस शब्द का प्रयोग कव हुआ निर्विवाद रूप से नहीं कहा जा सकता। श्री अगरचन्द नाहटा को जैन संग्रहालयों में तीन रचनाएं उपलव्ध हुई हैं। तीसरी प्रति में दिल्ली, वीकानेर मारवाड़ तथा गुजरात की भाषाओं एवं ढूढ़ाड़ी, मेवाड़ी एवं दक्षिणी के एक एक सवैये हैं।[2] इस प्रति का रचना काल उन्होंने १७ वीं शती वतलाया है। सवत् १८७३ (सन् १८१६) में कैरी मार्श मैन और वार्ड नाम के पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय आर्य भाषाओं के सम्वन्ध में एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें भारतवर्ष में वोली जाने वाली ३३ भाषाओं एवं वोलियों के नमूने दिये गये थे। उनमें राजस्थानी की छः वोलियों मारवाड़ी, वीकानेरी, उदयपुरी, जयपुरी, हाडोती और मालवी के नमूनों का समावेश किया गया था।[3] कैरी मार्श और वार्ड ने १९ वीं शती के प्रथम चरण में वाइविल के द्वितीय खण्ड (न्यू टेस्टामेन्ट) का मारवाड़ी, उदयपुरी या मेवाड़ी, वीकानेरी, जैपुरी, हाड़ौती तथा उज्जैनी या मालवी वोलियों में अनु-

---

१— पं० नरोत्तमदास स्वामी : राजस्थानी, पृष्ठ ५५

२— अगरचन्द नाहटा : राजस्थान भारती, भाग ३, अंक ३-४, पृष्ठ ११३, जुलाई १९५३

३— पं० नरोत्तमदास स्वामी : राजस्थानी, पृष्ठ ५५

वाद किया ।[1] सर जार्ज ग्रियर्सन ने बीकानेरी को उत्तरी मारवाड़ी की एक उपशाखा स्वीकार किया ।[2]

उपर्युक्त उल्लेखों से स्पष्ट हो जाता है कि "बीकानेरी" शब्द का बोली रूप में प्रयोग अत्यन्त प्राचीन है परन्तु निर्विवाद रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि सर्व प्रथम इस शब्द का बोली रूप में प्रयोग कब हुआ। भारतीय आर्य भाषाओं में प्रायः देशवाचक शब्द के साथ "ई" प्रत्यय जोड़ कर बोली या भाषा वाचक शब्द बनाया जाता है, यथा, मारवाड़+ई= मारवाड़ी, राजस्थान+ई= राजस्थानी आदि। इसी प्रकार से बीकानेर प्रदेश वाचक शब्द के साथ "ई" प्रत्यय जुड़कर ही "बीकानेरी" शब्द बना है और इस शब्द का बोली रूप में प्रयोग भी बीकानेर की स्थापना के पश्चात् ही हुआ है ।

२. ४. बीकानेरी-क्षेत्र

बीकानेरी बोली का क्षेत्र तत्कालीन बीकानेर राज्य का अधिकांश भाग है । तत्कालीन बीकानेर राज्य राजस्थान बनने के पश्चात् तीन जिलों में विभाजित हो गया— बीकानेर, गंगानगर एवं चूरू। इनमें से गंगानगर का अधिकांश भाग बीकानेरी भाषी नहीं है । वर्तमान बीकानेर जिले की चारों तहसीलें—बीकानेर, कोलायत, नोखा व लूणकरणसर बीकानेरी भाषी है। चूरू जिले की रतनगढ़, सरदारशहर, सुजानगढ़ व डूंगरगढ़ तो पूर्ण रूप से बीकानेरी भाषी तहसीले हैं, पर राजगढ़ का एक तिहाई पश्चिमी भाग और चूरू का भी लगभग आधा पश्चिमी भाग बीकानेरी-भाषी है। इसी जिले की तारानगर तहसील बीकानेरी क्षेत्र में आती है।

१. ५. बीकानेरी की सीमाएं

बीकानेरी की उतरी सीमा लंहदा, राठी और पंजाबी बोलियों द्वारा

१– श्री सुनीति कुमार चटर्जी : राजस्थानी, पृष्ठ ५-६

२– ग्रियर्सन : एल० एस० आई०, भाग ६, पृष्ठ १७

बनायी जाती है। इसकी उत्तरी-पूर्वी सीमा पर पंजाबी एवं बागड़ी बोलियां बोली जाती है। बाँगड़ी एवं शेखावाटी इसकी पूर्वी सीमा बनाती है । इसके दक्षिणी-पूर्वी में शेखावाटी बोली जाती है। बीकानेरी की दक्षिणी सीमा पर थाली एवं आदर्श मारवाड़ी बोली जाती है। थाली बोली ही इसकी दक्षिणी-पश्चिमी सीमा बनाती है। पश्चिमी सीमा पर लहंदा भाषी व्यक्ति मिलते हैं और उत्तरी-पश्चिमी सीमा लहंदा एवं राठी बोलियों द्वारा बनाई जाती हैं। बीकानेरी की पश्चिमी सीमा ग्रियर्सन के अनुसार केवल राजस्थान तक ही सीमित नही हैं बल्कि पाकिस्तान का बहावलपुर जिले का दक्षिणी-पूर्वी भाग भी बीकानेरी-क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।[1] परन्तु वस्तु स्थिति यह है कि अब बीकानेरी की सीमाएं सिमिट कर केवल भारत की सीमाओं से लग गई है। लेखक के लिए उपर्युक्त तथ्यों को पुष्ट प्रमाणों के आधार पर प्रमाणित करने की असम्भावना से ग्रियर्सन द्वारा दिये गये मान चित्र को ही आधार बनाया गया है।

१.६. बीकानेरी-भाषी जनसंख्या

डॉक्टर ग्रियर्सन के अनुसार बीकानेरी भाषियों की जनसंख्या ५, ३३, ००० है।[2] सन् १९६१ की जनगणना के अनुसार बीकानेरी भाषियों की जनसंख्या भारत में ४७ एवं राजस्थान में केवल ३९ है। १९६१ की जनगणना में बीकानेरी भाषियों की जो जनसंख्या बताई गई है, वह सर्वथा भ्रामक है, क्योंकि यदि बीकानेरी का स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार किया जाता है, और इसे आदर्श मारवाड़ी से भिन्न माना जाता है तो अधिकांश बीकानेर क्षेत्र की जनसंख्या की बोली बीकानेरी है एवं अकेले बीकानेर नगर में लगभग २ लाख व्यक्ति निवास करते हैं, जिनमें एक तिहाई व्यक्ति ठेठ बीकानेरी भाषी हैं। मैंने बीकानेर एवं निकटवर्ती ग्रामों में बीकानेरी के भाषा वैज्ञानिक स्वरूप को दृष्टि में रखकर लोगों से प्रश्न किये और उत्तर स्वरूप जो तथ्य

१– ग्रियर्सन : एल० एस० आई, भाग ९ पृ०, १२८-२९
२– ,, ,, ,, ,, ,, पृ० १३०
३– सेन्सस ऑफ इण्डिया : सन १९६१

मेरे सामने आये उससे निश्चित रूपेण कहा जा सकता है कि उसमें बीकानेरी भाषियों की जनसंख्या १९६१ की जनगणना के अखिल भारतवर्ष के आंकड़ों से सैकड़ों गुना अधिक है। भाषा विषयक गलत आंकड़े जनगणना के अवसर पर इसलिए एकत्र हो जाते हैं कि भाषा एवं बोलियों का महत्त्वपूर्ण कार्य ऐसे व्यक्तियों के द्वारा संपन्न होता है जो भाषा एवं बोलियों के स्वरूप का विश्लेषण नहीं कर सकते। इसका दूसरा कारण यह है कि जनगणना के अवसर पर बीकानेरी बोलने वालों ने अपनी बोली मारवाड़ी ही बताई है अतः वर्तमान बीकानेरी भाषियों की जनसंख्या क्षेत्र व सीमा के आधार पर ७, १५, ००० मानी जा सकती है।[1]

१. ७. राजस्थानी की विभिन्न बोलियां एवं मारवाड़ी

राजस्थानी की विभिन्न बोलियों में बीकानेरी का स्थान कहां है? इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए यदि हम अधिकारी विद्वानों द्वारा किया गया राजस्थानी बोलियों का वर्गीकरण प्रस्तुत करें तो अप्रासंगिक न होगा। डॉ० ग्रियर्सन ने एल० एस० आई० भाग ९ में राजस्थानी का वर्गीकरण इस प्रकार किया है–

१– पश्चिमी राजस्थानी– इसमें ये बोलियां आती हैं– जोधपुर की स्टैन्डर्ड या "खड़ी राजस्थानी" अर्थात् शुद्ध पश्चिमी मारवाड़ी, ठटकी, तथा थली, और बीकानेरी, बागड़ी, शेखावटी, मेवाड़ी, खैराड़ी, सिरोही की बोलियाँ ("आबू रोड़" की बोली या राठी, तथा साएाठ की बोली इनमें हैं), गोड़वाड़ी और देवड़ावाटी।

२– उत्तर-पूर्वी-राजस्थानी- अहीरवाटी और मेवाती।

३– मध्य-पूर्वी राजस्थानी (ढूंढाड़ी) - तोरावाटी, "खड़ी जैपुरी", काठैड़ा, राजावाटी, अजमेरी, किशनगढ़ी, चौरासी (शाहपुरा), नागरचाल, हाड़ौती (रिवाड़ी के साथ)।

१– सेन्सस ऑफ इण्डिया, सन् १९६१, क्षेत्र व सीमा में दिए गये ग्रामों व तहसीलों में बीकानेरी भाषियों की जन संख्या, के आधार पर।

४– दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी या मालवी-इसके कई रूप भेद हैं, जिनमें रांगड़ी और सौंडवाड़ी हैं।

५– दक्षिणी राजस्थानी-इनमें निमाड़ी आती है।

परन्तु श्री सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या उक्त वर्गीकरण को मान्यता नहीं देते।[1] उनके अनुसार ग्रियर्सन की १ तथा ३ वर्ग की बोलियों को ही राजस्थानी नाम देना उचित है। एक को पश्चिमी राजस्थानी एवं तीन को पूर्वी राजस्थानी कहना वे उचित मानते हैं। वे अहीरवाटी, मेवाड़ी, निमाड़ी को पछाही हिन्दी से सम्पर्कित मानते हैं और अपनी इस मान्यता की संदिग्धावस्था के साथ चरम निष्कर्ष की अपेक्षा रखते हैं। परन्तु चाटुर्ज्या के इस निष्कर्ष से बीकानेरी की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आता और ग्रियर्सन के अनुसार उसे पश्चिमी राजस्थानी के अन्तर्गत रखा जा सकता है। पश्चिमी राजस्थानी की प्रधान बोली मारवाड़ी है।

१. ७. १. मारवाड़ी की विभिन्न शाखाएं एवं बीकानेरी तथा उनमें अन्तर

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि मारवाड़ी पश्चिमी राजस्थानी की प्रमुख बोली है। प्रमुख रूप से मारवाड़ की भाषा होने के कारण इसका नाम मारवाड़ी है। यह नाम नया नहीं है। अबुल फजल के 'आइने अकबरी' तथा कुछ अन्य प्राचीन पुस्तकों में भी यह आया है।[2] मारवाड़ी का क्षेत्र मारवाड़, मेवाड़, पूर्वी सिंध, जैसलमेर, बीकानेर, दक्षिणी पंजाब तथा जयपुर का पश्चिमी-उत्तरी भाग है। मारवाड़ी अपने भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से राजस्थानी की अन्य सभी बोलियों के योग से बड़ी है।[3] बीकानेरी इसी मारवाड़ी की एक प्रमुख बोली है। डॉ० भोलानाथ तिवारी ने मारवाड़ी का वर्गीकरण इस प्रकार किया है।

परिनिष्ठित मारवाड़ी-यह मारवाड़ में बोली जाती है। इसके अतिरिक्त

१– श्री सुनीति कुमार चटर्जी : राजस्थानी भाषा, पृष्ठ ९-१०

२– डॉ० भोलानाथ तिवाड़ी : भाषा विज्ञान कोष, पृष्ठ ५१५

३– वही : पृष्ठ ५१५

पूर्वी, दक्षिणी, पश्चिमी तथा उत्तरी ये चार रूप हैं जिनके अन्तर्गत प्रसिद्ध उप वोलियां इस प्रकार है—

पूर्वी मारवाड़ी–मगरा की वोली, मेरवाड़ी-मारवाड़ी, गिरासिया की वोली, मारवाड़ी ढूंढाड़ी, गोड़ावाटी, मेवाड़ी। मेरवाड़ी-मारवाड़ी।

दक्षिणी मारवाड़ी–गोड़वाड़ी, सिरोही, देवड़ावाटी, मारवाड़ी-गुजराती

पश्चिमी मारवाड़ी,थली, ठटकी

उत्तरी मारवाड़ी-वीकानेरी, शेखावाटी वागड़ी।

डॉ० भोलानाथ तिवाड़ी के उक्त वर्गीकरण से स्पष्ट हो जाता है कि वीकानेरी उत्तरी मारवाड़ी की एक प्रमुख उप शाखा है।

१. ७. २. मारवाड़ी एवं वीकानेरी में अन्तर–

वर्तमान वीकानेरी एवं आदर्श मारवाड़ी में निम्नलिखित अन्तर मिलता है–

१– मारवाड़ी में अस्तिवाचक क्रिया के सामान्य वर्तमान कालिक रूप एवं भूतकालिक रूप 'छो' 'हो' हैं पर वीकानेरी में छो का सर्वथा अभाव है।

२– मारवाड़ी में संयोजक समुच्चय वोधक अव्यय " और " के लिए " नै " का प्रयोग होता है पर वीकानेरी में इसका पूर्ण रूपेण अभाव है।

३– मारवाड़ी की अधिकांश अल्प प्राण ध्वनियां वीकानेरी में महाप्राण हो गई है–

मारवाड़ी	वीकानेरी
कनै	खनै
काकड़ी	खाखड़ी
ऊंट	ऊंठ्
भाटो	भाठो

४– वीकानेरी में व्यंजनान्त ध्वनियों का वाहुल्य हो गया है, पर मारवाड़ी

के आदर्श रूप में इसकी अत्यल्पता है।

५– वीकानेरी में " ण " ध्वनि का प्रयोग आदर्श मारवाड़ी की अपेक्षा बहुत कम हो गया है।

मारवाड़ी	वीकानेरी
इणनै	इनें
उणनै	वेनें
इण	इयें
जिण	जिकें

६– निश्चयार्थ भाव को प्रकट करने के लिये वीकानेरी में भविष्यार्थ क्रिया के साथ /ईज्/ का प्रयोग होता है जवकि आदर्श मारवाड़ी में केवल क्रिया के साथ / सी / प्रयुक्त होता है–

मारवाड़ी	वीकानेरी
खासी	खांईसीज
जासी	जाईसीज
लासी	लाईसीज

१. ८. आदर्श बीकानेरी

डॉ० भोलानाथ तिवाड़ी के अनुसार वीकानेरी एक उपबोली है। इस बोली के यहाँ अनेक रूप देखने को मिलते है। वीकानेर नगर में मुख्य रूप से चार वर्ण निवास करते हैं– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र (विभिन्न निम्न कोटि की जातियाँ)। इन चारों वर्णों की बोली में भेद पाया जाता है। यह भेद अत्यन्त सूक्ष्म है और विभिन्न वर्गों की तत्स्थानीय भाषाओं की विशेषताओं पर आधृत है जहां से वे आकर यहाँ वसे हैं। चार पांच सौ वर्ष साथ रहने से यह अन्तर अत्यन्त सूक्ष्म रह गया है। प्रश्न है, कहां की वीकानेरी आदर्श मानी जाय ? इस सन्दर्भ में लेखक ने पद्धति यह अपनाई है कि जो क्षेत्र मध्यवर्ती हैं एवं अन्य भाषा क्षेत्रों तथा भाषा भाषियों के प्रभाव से अलग हैं उन्हीं क्षेत्रों की बोली को आदर्श वीकानेरी माना गया है। इस

दृष्टि से वर्तमान बीकानेर जिले का अधिकांश भाग आदर्श अथवा परिनिष्ठित बीकानेरी का क्षेत्र माना जा सकता है। इस क्षेत्र में भी बीकानेरी का आदर्श रूप ग्रामों में ही मिलता है क्योंकि इस क्षेत्र के निवासी अन्य भाषा भाषियों से कम प्रभावित हैं।

१. ६. बीकानेरी की भाषा वैज्ञानिक विशेषताएं

बीकानेरी की प्रमुख ध्वन्यात्मक एवं रूपात्मक विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

१. ६. १. ध्वन्यात्मक विशेषताएं

बीकानेरी की ध्वन्यात्मक विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

१– अन्त्य ध्वनि की दृष्टि से बीकानेरी ओकार बहुला है–

बीकानेरी	हिन्दी
घोड़ौ	घोड़ा
मीठौ	मीठा
दादौ	दादा
गयौ	गया
छोटौ	छोटा

२– बीकानेरी में नासिक्य ध्वनियों से पूर्व आने वाली " आ " ध्वनि " ऑ " में परिवर्तित हो जाती है–

बीकानेरी	हिन्दी
रॉम्	राम
कॉम्	काम
कॉन्	कान
हॉण्	हानि
ऑम्बौ	आम

३– बीकानेरी में शब्दों के आदि स्वर, विशेषकर अ के दीर्घीकरण की प्रवृत्ति पायी जाती है–

बीकानेरी	हिन्दी
पाड़ोसी	पड़ोसी
खाखड़ी	ककड़ी
बान्दरो॑	बन्दर
आँन्धो॑	अन्धा

४– बीकानेरी में हिन्दी के संयुक्त स्वर "ऐ" एवं "औ" क्रमशः "अ" एवं "ओ॑" में परिवर्तित हो जाते हैं—

बीकानेरी	हिन्दी
अस्सो	ऐसा
कस्सो॑	कैसा
वस्सो॑	वैसा
जस्सो॑	जैसा
दो॑ड़	दौड़
फो॑रन्	फौरन
ओ॑रत्	औरत

५– बीकानेरी में आरम्भ का "य" प्रायः "ज" में परिवर्तित हो जाता है—

बीकानेरी	हिन्दी
जुग्	युग
जम	यम
जोग	योग

६– बीकानेरी में अन्त्य "य" का संयुक्त व्यंजन होने पर लोप हो जाता है—

बीकानेरी	हिन्दी
पुन्	पुण्य

यदि अन्त्य " य " संयुक्त व्यंजन न हो तो उसका लोप नहीं होता यथा—

बीकानेरी	हिन्दी
भाय	आय
दाय	पसन्द
गाय	गाय

७– मध्यग " ह् " ध्वनि बीकानेरी में " य " एवं कभी-कभी " व " में परिवर्तित हो जाती है—

बीकानेरी	हिन्दी
मोयन्	मोहन
मनवार्	मनुहार
कोंवार्	कुम्हार
पाँवणा	पाहुना
गायक	ग्राहक

यदि " ह " ध्वनि " व " या " य " में परिवर्तित नहीं होती तो वह लुप्त होकर पूर्ववर्ती ध्वनियों को दीर्घ कर देती है—

बीकानेरी	हिन्दी
शैर्	शहर
नैर्	नहर
जैर्	जहर
कांणी	कहानी
पाड़	पहाड़

अधिकांशतः अन्त्य " ह् " ध्वनि भी लुप्त हो जाती है–

बीकानेरी	हिन्दी
लो	लोह
मो	मोह

८— बीकानेरी में 'क्ष' ध्वनि का प्रयोग नहीं होता। 'क्ष' के स्थान पर 'छ' अथवा 'ख' का प्रयोग होता है—

बीकानेरी	हिन्दी
लछमी	लक्ष्मी क्ष > छ
राखस्	राक्षस क्ष > ख
रख्या	रक्षा क्ष > ख

९— स 'श', 'ष', उष्म व्यंजनों में केवल दन्त्य 'स्' ध्वनि ही उपलब्ध होती है।

बीकानेरी	हिन्दी
सल्ला	शिला
सुसरो	श्वशुर
भासा	भाषा

१०— बीकानेरी की अपनी कतिपय विशेष ध्वनियाँ है, जो ध्वनि ग्राम रूप में प्रतिष्ठित हैं —

१— न्ह़	न्हावणो (नहाना)
२— म्ह़	म्हे, (हम) म्हात्मा
३— ल़	बाल़ (जलाना)
	गाल़ (गाली)

११— बीकानेरी में 'ल' का उच्चारण दो प्रकार से होता है। 'ल' हिन्दी के समान ही है, पर ल़ उच्चारण के आधार पर बोली में कहीं उत्क्षिप्त कहीं मूर्द्धन्य एवं कहीं पार्श्विक ध्वनियों की तरह व्यवहृत होता है —

ल	ल़
काल (कल)	काल़ (अकाल)
गाल (कपोल)	गाल़ (गाली)
वालो (प्यारा)	बाल़ो (जलाना)
बोली	बोल़ी (बहरी)
बोलो (कहो)	बोल़ो (बहरा)

१२— बीकानेरी की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि शब्द की उदात्त एवं अनुदात्त ध्वनियों में अन्तर आने से अर्थ में अन्तर आ जाता है—

अनुदात्त	उदात्त
कोड (चाव)	को' ढ़ (कुष्ठ रोग)
चड़ (चढ़ाई)	च' ड़ (गाय)
मेड़ (मकड़ी)	मे'' ल (महल)
नाथ् (स्वामी), (जाति विशेष)	ना'थ (आभूषण)

१३— बीकानेरी में 'ऋ' और 'ष' क्रमशः र, स, और खकार में परिवर्तित हो जाते हैं —

बीकानेरी	हिन्दी
रिसि	ऋषि
रतु	ऋतु
करम्	कर्म
धरम्	धर्म

१४— व्यापक अनुनासिकता की प्रवृत्ति बीकानेरी की मुख्य विशेषता है।

१५— बीकानेरी में 'ह' ध्वनि उपलब्ध नहीं होती। हिन्दी की 'ह' ध्वनि बीकानेरी में एक विशेष ध्वनि अ के रूप में उपलब्ध होती है।

१. ६. २. रूपात्मक विशेषताएं

१— बीकानेरी में अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के समान दो लिंग एवं दो वचन ही उपलब्ध होते हैं।

२— बीकानेरी में कर्त्ता-कारक चिन्ह का अभाव है साथ ही सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूपों के साथ भी कर्त्ता बिना किसी परसर्ग की सहायता के प्रयुक्त होता है यथा —

बीकानेरी	हिन्दी
हरियो पढ़े है।	हरि पढ़ता है।

बीकानेरी	हिन्दी
म्हैं रोटी खाई ।	मैंने रोटी खाई ।
छोरों दूध पियो ।	लड़कों ने दूध पिया ।
म्हैं ॰कताव पढ़ाई ।	मैंने पुस्तक पढ़ाई ।

कर्म कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'नैं' परसर्ग का प्रयोग होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
रोंम् नें पढ़ाय् दे ।	राम को पढ़ा दो ।
कुत्तों नें काढ ।	कुत्ते को निकालो ।

सम्प्रदान कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'रैं', 'नैं' परसर्ग का प्रयोग होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
घोड़ों रैं घास् लायों हूँ ।	घोड़ों के लिए घास लाया हूँ ।
छोरों नें आसीस् ।	लड़कों के लिए आशीर्वाद ।

करण एवं अपादान कारक में 'सूं' परसर्ग का प्रयोग होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
पंडत् जी सूं बात्यों होई ।	पंडित जी से बातें हुई ।
डागलें सूं पड़ग्यों ।	छत पर से गिर गया ।

सम्बन्ध कारक की अभिव्यक्ति के लिए रों, रा, री परसर्गों का प्रयोग होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
रोंम रों घोड़ों ।	राम का घोड़ा ।
रोंम् री घोड़ी ।	राम की घोड़ी ।
रोंम् रा घोड़ा ।	राम के घोड़े ।

अधिकरण कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'में' परसर्ग का व्यवहार

ऊकारान्त एवं व्यंजनान्त) में अपने विशेष्य के लिंग-वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तन नहीं होता ।

६– बीकानेरी में वर्तमान काल में तिङन्तीय क्रिया-पद प्रयुक्त होते हैं यथा–

बीकानेरी	हिन्दी
छोरों करें है ।	लड़का करता है ।
छोरी आवें है ।	लड़की आती है ।
छोरा खावें है ।	लड़के खाते हैं ।

७– बीकानेरी में वर्तमान निश्चयार्थ, वर्तमान कृदन्त की सहायता से बनाये जाने के स्थान पर सामान्य वर्तमान के साथ सहायक-क्रिया द्वारा बनाया जाता है –

बीकानेरी	हिन्दी
हूं मारूं हूं ।	मैं मारता हूँ ।
हूं जाऊं हूं ।	मैं जाता हूँ ।

८– वर्तमान कालिक सहायक क्रिया √ह् धातु बीकानेरी में अन्य स्वतन्त्र क्रिया रूपों के समान ही तिङ -प्रत्यय ग्रहण करती है, यथा–

	एकवचन	बहुवचन
(अन्य पुरुष)	है	है
(मध्यम पुरुष)	है	हों
(उत्तम पुरुष)	हूं	हों

९– बीकानेरी में भूतकालिक सहायक क्रिया रूप धातु में कृत प्रत्यय के योग से बनते हैं । साथ ही हिन्दी की भांति सहायक क्रिया, धातु ही मानी जा सकती है । किन्तु ओकारान्त बोली होने के कारण बीकानेरी में जहां आकारान्तता बहुवचन का बोध कराती है वहां हिन्दी में एक वचन का, यथा–

छोरों हों	(लड़का था)
छोरा हा	(लड़का था)

छोरी ही	(लड़की थी)
छोरों थो	(लड़का था)
छोरा था	(लड़के थे)
छोरी थी	(लड़की थी)

१०– हिन्दी की √ कर् धातु के भूत कालिक कृदन्त रूप किया, किये, की, के स्थान पर पर बीकानेरी में क्रमशः कियो, करियो, करिया, करी रूप उपलब्ध होते हैं।

११– बीकानेरी में भूत काल के निर्माण के लिए प्रायः धातु में -यों प्रत्यय (स्वारान्त धातु एक वचन में य् + ओं) एवं बहुवचन में –या (स्वरान्त धातु बहुवचन में य्+आ) प्रत्यय जोड़े जाते हैं। -इयों प्रत्यय व्यंजनान्त एकवचन में एवं –इया प्रत्यय व्यंजनान्त बहुवचन में जोड़ा जाता है। यथा–

स्वरान्त धातु

	एक वचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	वें खायों	वों खाया
मध्यम पुरुष	तूं आयों	थे आया
उत्तम पुरुष	म्हें खायों	म्हों खाया

व्यंजनान्त धातु

	एक वचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	वें मारियों	वों मारिया
मध्यम पुरुष	थूं पढियों	थे पढिया
उत्तम पुरुष	म्हें काढियों	म्हों काढिया

१२– बीकानेरी में भूतकालिक कृदन्त की रचना के लिए '–ड़' स्वार्थक प्रत्यय का बहुलता से प्रयोग होता है, यथा—

एकवचन	बहुवचन
खायोड़ों केलों	खायोड़ा केला
तलियोड़ों पापड़	तलियोड़ा पापड़

[सूचनाः—

स्वार्थक प्रत्यय —ओड् भी माना गया है क्योंकि —ओ, पर लिंग-वचन–कारक का प्रभाव नहीं पड़ता ।]

१३– वीकानेरी में भविष्यत् काल का निर्माण दो प्रकार से होता है –

(अ) सामान्य वर्तमान में 'लोँ' या 'ला' के योग से —

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	मारेँ लोँ, ला	मारेँ ला
मध्यम पुरुष	मारेँ लोँ	मारोँ ला
उत्तम पुरुष	मारुं लो, ला	मरोँ ला

(आ)

	एक वचन	वहु वचन
अन्य पुरुष	मारसी	मारसी
मध्यम पुरुष	मारीस्	मारसोँ
उत्तम पुरुष	मारीस्	मारसोँ

निश्चयार्थ भाव का बोध कराने के लिए वीकानेरी में -ईज प्रत्यय का प्रयोग क्रिया रूप के भविष्यत् काल में होता है —

- वोँ आसीज्, हूं खाईसीज् आदि

–१४ वीकानेरी में पूर्व कालिक क्रिया के निर्माण के लिए –'र' क्रिया के अन्त में लगाया जाता है। स्वरान्त धातु से पूर्व –व् श्रुति का आगम होता है--

स्वरान्त-	व्यंजनान्त
खाय्र्=खाकर	पढर्=पढ़कर
आय्र्=आकर	जीमर्=भोजन करके
जाय्र्=जाकर	रमर् =खेलकर

अध्याय / २

संज्ञा–पद

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं जिसमें प्रकृत किंवा कल्पित सृष्टि की किसी वस्तु का नाम सूचित हो,[1] यथा राम, कृष्ण, गोपाल, भगवान, आदि। उक्त परिभाषा में 'वस्तु' शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, वह केवल प्राणी व पदार्थ का ही बोधक नहीं, अपितु उनके धर्मों का भी बोध कराता है।

'बीकानेरी' में संज्ञा-पद, प्रातिपदिक अंश (अभिधार्थ बोधक) तथा लिंग-वचन-कारक-सम्बंध-दर्शी विभक्ति-प्रत्ययों (व्याकरणिक अर्थ बोधक) के योग से निर्मित होता है। सर्व प्रथम ऐसे संज्ञा-प्रातिपदिक अंशों के निर्धारण की आवश्यकता है, जो व्याकरणिक अर्थ के व्यक्ता विभक्ति प्रत्ययों (लिंग-वचन-कारक सम्बन्ध-दर्शी) को ग्रहण करके 'पद' की कोटि में पहुंचते हैं। इस प्रकार संज्ञा-पद-रचना में दो तत्वों-प्रातिपदिक अंश (अभिधार्थ) तथा विभक्ति प्रत्यय (व्याकरणिक-अर्थ) के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। अतः संज्ञा-पद रचना सम्बन्धी अपने अध्ययन की दिशा को हम निम्न चार वर्गों के अन्तर्गत विभाजित कर सकते हैं —

१— प्रातिपदिक अंश

१— कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण पृ० ६३

२– परन्तु वह सार्थक शब्द धातु नहीं होना चाहिए।

३– उस सार्थक शब्द में प्रत्यय भी नहीं होने चाहिए। इसी प्रातिपदिक अंश में लिंग-वचन-कारक-सम्बन्धदर्शी विभक्ति प्रत्ययों के योग से पद रचना होती है। परन्तु संस्कृत की इसी प्राचीन परम्परा के आधार पर बीकानेरी संज्ञा-पदों में से लिंग-वचन-दर्शी विभक्ति प्रत्ययों को निकाल कर प्रातिपदिक अंशों का निर्धारण करेंगे तो हमारे समक्ष अनेकानेक जटिलताएं उपस्थित होगी, यथा–

१–बोली में व्यंजनान्त प्रातिपदिक ही होंगे, जिन्हें निर्विवाद नहीं कहा जा सकता —

(क) पुलिंग

	एक वचन	बहुवचन
संज्ञा-पद	घोड़ों	घोड़ा
संज्ञा-पद विश्लेषण	घोड़्+ओं	घोड़्+आ
प्रातिपदिक अंश	घोड़्	घोड़्

(ख) स्त्रीलिंग

	एक वचन	बहु वचन
संज्ञा-पद	घोड़ी	घोड़्यों
संज्ञा-पद-विश्लेषण	घोड़+ई	घोड़्+ई+ओं
प्रातिपदिक अंश	घोड़्	घोड़्

२– सार्थक शब्द ही प्रातिपदिक संज्ञक हो सकता है। यदि प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं के समान बीकानेरी में लिंग-वचन-कारक सम्बन्ध-दर्शी विभक्ति प्रत्ययों को निकाल कर प्रातिपदिक अंश का निर्धारण किया गया तो वे शब्द सार्थक नहीं कहे जा सकते, यथा–

(क) पुलिंग

	एकवचन	बहुवचन
संज्ञा-पद	नोंनों	नोंना

लि. व. का. रहित	नोँन्	नोँन्
संज्ञा-पद	मोँमोँ	मोँमा
लि. व. का. रहित	मोँम्	मोँम्

(ख) स्त्री लिंग

संज्ञा-पद	नोँनी	नोँन्योँ
लि. व. का. रहित	नोँन्	नोँन्
संज्ञा-पद	मोँमी	मोम्योँ
लि. व. का. रहित	मोँम्	मोँम्

उपर्युक्त संज्ञा-पदों (नोँनोँ, मोँमोँ, नोँनी, मोँमी) में से यदि पु. एक. व. बो.-ओँ, पु. व. व. बोधक -आ, स्त्री. लि. ए. व. बोधक -ई एवं स्त्रीलिंग बहुवचन (ब. व.) बोधक -ओँ, लि. व. का. विभक्ति प्रत्ययों को निकाल दिया जाय तो नोँन्, मोँम्, प्रातिपदिक अंश के रूप में अवशिष्ट रहते है जिनका बोली में कोई अर्थ नहीं है ।

(३) प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल में कारक बोधक विभक्तियों का प्रयोग संश्लिष्ट कोटि का था परन्तु आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं व बोलियों की भाँति बीकानेरी में भी परसर्गों का प्रयोग विश्लिष्ट कोटि का है अतः परम्परानुगत प्रातिपदिक अंशों का निर्धारण नहीं किया जा सकता ।

४– इस आधार पर प्राप्त प्रातिपदिक अंशों के कारण बोली में श्लेपार्थी अंशों का बाहुल्य हो जायगा जिससे अर्थ बोध में अस्पष्टता आ जायेगी, यथा—

बीकानेरी	हिन्दी पर्याय
१– घोड़्+ओँ (घोड़ोँ)	घोड़ा
घोड़्	तन्वंगी कन्या के लिये प्रयुक्त शब्द
२– तार्+ओँ (तारोँ)	तारा

तार्	तार
३– साल् + ओं (सालों)	साला
साल्	नीचे का कमरा

स्पष्टतः इस प्रकार प्रातिपदिक अंशों के निर्धारण से अर्थ का अनर्थ होने लगेगा क्योंकि कितने ही स्वरान्त शब्द अपने अन्त्य स्वर को खोकर अन्य व्यंजनान्त शब्दों में जा मिलेंगे । अतः उपर्युक्त विधि से प्रातिपदिक अंशों का निर्धारण अवैज्ञानिक एवं अव्यवारिक होगा । इसलिए पुलिंग हो, अथवा स्त्रीलिंग, कर्त्ता कारक एक वचन के मूल रूप को (विकारी नहीं) प्रातिपदिक रूप में स्वीकार करना पड़ेगा और उपर्युक्त उदाहरणों में बीकानेरी संज्ञाओं के प्रातिपदिक अंश होंगे घोड़ों, घोड़ी, घोड़्, तारों, तार्, सालों, साल् इत्यादि ।

संज्ञाओं के कर्त्ता एकवचन के मूल रूप को ही प्रातिपदिक अंश स्वीकार कर लेने पर बीकानेरी में अन्त्य ध्वनि की दृष्टि से प्रातिपदिक अंशों की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है —

२. १. १. १. स्वरांत प्रातिपदिक

आकारान्त — राजा, आतमा, मां, काया
ईकारान्त — दरजी, मोती, छोरी, इलायची
ऊकारान्त — भालू, लाडू, जूं, चक्कू
एकारान्त — दूबे, पोंण्डे, चौबे
ओंकारान्त — खरबूजों, घोड़ों, दादों, सूओं (तोता)

२. १. १. २. व्यंजनान्त प्रातिपदिक

क् — नाक्, आक्, ढाक्, (अंग का नाम) फाक्
ख् — दाख्, लीख्, पोंख्, राख्,
ग् — भाग्, (भाग्य) आग्, साग्, मूंग्
घ् — वाघ्

[सूचना— बोली में अधिकतर अन्त्य 'घ्' महाप्राण ध्वनि का उच्चारण अल्पप्राण ध्वनि 'ग्' के समान होता है ।]

च् — चूंच्, ॰मरच्, नाच्, काच्
छ् — रींछ्, मूंछ्, पूंछ्, गछ्
ज् — बाज्, राज्, सूरज्, तीज्,

[सूचनाः— 'झ' के स्थान पर बीकानेरी प्रातिपदिकों में सामान्य रूप से अल्पप्राण ध्वनि 'ज' हो जाती है।]

ट् — टाट्, घाट्, अखरोट्, पेट्,
ठ् — सूंठ्, (सूखी अदरक) सेठ्, जेठ्, काठ्
ड् — रोंड्, माड्, खोंड्, हाड्
ड़् — पड़्, (एक प्रकार का सर्प) लड़्, राड़्, (लड़ाई)
ढ् — गढ्, ढेढ्,
ण् — ॰मण्, वोंमण्, 'चूण्, लूण्
त् — सेंत्, (शहद) चेंत्, परात्, (स्नान करने का पात्र), खेत्
थ् — नाथ् (आभूषण) हाथ्, रथ्, तीरथ्
द् — लीद्, दाद्, लाद्, पेंलाद्
ध् — दूध्, ॰सराध्, साध्, (उत्सव)
न् — पोंन्, खूंन्, कोंन्, घन्
प् — सरप्, छाप्, पाप्, तप्, लप्
फ् — सूंफ्, डफ्, वाफ्, बरफ्
ब् — ॰दोब्, (दूर्वा), जीब्, (जिह्वा)
भ् — लाभ्, डाभ्, लोभ्,
म् — ॰वदोंम्, नोंम्, करम्, ॰जनम्
य् — छाय्, (छाछ), लाय्, (आग) गाय्, राय्,
र् — हार्, (मोतियों की माला) केंर्, (एक सब्जी का नाम) तार्, घर्,
ल् — ॰बेल्, (बिल्व) खाल् (चमड़ी), गाल् (कपोल)
ल़् — जाल़्, सोंकल़्, साल़्
व् — तलाव्, गोंव्, ओंव्
स् — ॰वोंस्, (बांस) भेंस्, केस् (बाल) रस्

१. 'पाठशाला' के पर्यायवाची

मदरसों (पुल्लिग)
पोसवाल् (स्त्रीलिंग)

१– पुस्तक के पर्यायवाची

गरन्थ (पुलिग)
पोथी (स्त्रीलिंग)

(ग) संस्कृत के अनेक शब्दों का बीकानेरी में लिंग परिवर्तित हो गया है। यथा—

संस्कृत	बीकानेरी
१. आत्मा (पु०)	आतमा (स्त्री०)
२. अग्नि (पु०)	अगनी, आगी, आग् (स्त्री)
३. देवता (स्त्री०)	देवता (पु०)

(घ) प्राणी वाचक संज्ञा शब्दों का लिंग उनके प्राकृतिक लिंग के अनुसार होता है।

१. मोर्, ऊंठ्, (पु०)
ढेलरणी, सॉंढ्, (स्त्री०)

कुछ ऐसे भी शब्द हैं जो या तो केवल पुल्लिग में ही प्रयुक्त होते हैं या स्त्री लिंग में, यथा—

केवल पुल्लिग में प्रयुक्त होने वाले शब्द

	बीकानेरी	हिन्दी पर्याय
१.	माछर्	मच्छर
२.	पपैयों	पपीहा
३.	तीतर्	तीतर
४.	ममोलियों	बीर वहूटी

केवल स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होने वाले शब्द

	बीकानेरी	हिन्दी
१.	जूं	यूक
२.	चीलड़्	चील
३.	चमचेड़्	चमगादड़
४.	बतक्	बतख
५.	टालोड़ी	गिलहरी

कुछ शब्द उभय लिंगी भी हैं, यथा– टावर्, मोनखों, माईत् आदि।

कुछ संज्ञा शब्द ऐसे हैं, जिनका लिंग बोध उनका युग्म रूप ज्ञात होने पर होता है। यथा – मोर्-ढ़ेलनी, ऊंठ्-सोंढ़्, हड़ाऊ-मेंरी आदि ।

(ङ) विदेशी शब्दों में भी लिंग परिवर्तन मिलता है। ये शब्द हिन्दी के माध्यम से बीकानेरी में आये हैं, अतः हिन्दी के समान ही बीकानेरी में उनका वही लिंग होता है, यथा- अदालत्, कागद्, कलम् आदि ।

२. १. २. २. रूपगत लिंग ज्ञान

संज्ञा शब्दों के वाक्य गत रूपों के आधार पर उनके लिंगों का विवेचन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

(क) बीकानेरी के विशेषण पदों में लिंग के कारण रूपगत परिवर्तन होता है एवं इन विशेषणों का रूप निश्चित प्रायः ही है (बीकानेरी विशेषण पुल्लिंग एक वचन में ओंकारान्त एवं स्त्रीलिंग एक वचन में ईकारान्त उपलब्ध होते हैं) परिणामतः इन विशेषणों से हमें संज्ञाओं के लिंग का ज्ञान होता है, यथा–

छोटों विल्
छोटी ॰वेल्

उपर्युक्त वाक्यांशों में 'छोटों' और 'छोटी' क्रमशः पुलिंग एवं स्त्रीलिंग हैं, जो अपने विशेष्यों 'वल्' एवं '॰वेल्' के पुलिंग एवं स्त्री लिंग की ओर इंगित करते हैं।

२. १. २. ३. अन्त्य ध्वनि के आधार पर लिंग परिचय

(अ) बीकानेरी में समस्त ओंकारान्त संज्ञाएं पुल्लिग है, यथा–

बीकानेरी	हिन्दी
१– दादों	दादा
२– ॰बॉन्दरों	बंदर
३– घोड़ों	घोड़ा
४– छोरों	लड़का
५– तावड़ों	धूप
६– आटों	आटा

(आ) –ई में अन्त होने वाली संज्ञाएं अधिकांशतः स्त्रीलिंग होती है, यथा–

बीकानेरी	हिन्दी
१– काकी	चाची
२– लुगाई	स्त्री
३– खाखड़ी	ककड़ी
४– छोरी	लड़की
५– रोटी	रोटी
६– ॰दवाई	दवा

परन्तु इसके कुछ अपवाद भी उपलब्ध होते हैं, यथा– नाई, धोबी, घी, माली, लोई (रक्त) मोती, दई, (दही), दरजी आदि ।

(इ) –आ में अन्त होने वाली अधिकांश संज्ञाएं स्त्रीलिंग हैं, यथा–

बीकानेरी	हिन्दी
१– छंया	छाया
२– भूवा	बूआ
३– मां	माता
४– दया	दया

५– माया	माया
६– काया	शरीर

अपवाद स्वरूप राजा. म्हात्मा, देवता, परमातमा, आदि रूप भी उपलब्ध होते हैं।

(ई) –ऊ में अन्त होने वाली संज्ञाएं दोनों ही लिंगों में समान रूप से उपलब्ध होती है, यथा–

–ऊ में अन्त होने वाली पुल्लिंग संज्ञाएं

वीकानेरी	हिन्दी
१. लाडू	मोदक
२. गऊं	गेहूँ
३. ओंसू	अश्रु
४. आलू	आलू
५. चक्कू	चाकू
६. साढू	साली का पति

–ऊ में अन्त होने वाली स्त्रीलिंग संज्ञाएं

वीकानेरी	हिन्दी
१. लू	गर्म हवा
२. जूं	यूक
३. ०वऊ	वहू
४. दारू	मदिरा
५. गऊ	गाय

(उ) वीकानेरी में समस्त एकारान्त संज्ञाएं पुल्लिग है, यथा-- दूबे, पोंडे, चौवे आदि।

[सूचना–

वीकानेरी में एकारान्त संज्ञाएं केवल जाति बोधक है, साथ ही मात्रा

की दृष्टि से अत्यल्प है।]

(ऊ) बीकानेरी ऐकारान्त संज्ञाएं भी मात्रा की दृष्टि से अत्यल्प हैं, और लिंग की दृष्टि से ये सामान्यतः स्त्रीलिंग हैं, यथा—

गै (गम) सै (स्याही)

२. १. २. ४. स्त्री-प्रत्यय

बीकानेरी में स्त्री-प्रत्ययों की सहायता से विभिन्न पुल्लिग संज्ञा शब्द स्त्रीलिंग में परिणत किये जा सकते हैं। ये प्रत्यय निम्नलिखित हैं।

'-ई'

प्राणी वाचक ओंकारान्त पुल्लिग संज्ञाओं में '-ई' प्रत्यय संलग्न कर उनको स्त्रीलिंग में परिवर्तित कर दिया जाता है। -ई लगने से पूर्व अन्त्य स्वर -ओं का लोप हो जाता है, यथा—

पुल्लिग रूप	-ओं	स्वरहीन रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिंग रूप
१. दादों	-ओं	दाद्	-ई	दादी
२. सालों	-ओं	साल्	-ई	साली
३. ॰बोंन्दरों	ओं	॰बोन्दर्	-ई	॰बोन्दरी
४. छोरों	-ओं	छोर्	-ई	छोरी
५. काकों	-ओं	काक्	-ई	काकी
६. घोड़ों	-ओं	घोड़्	-ई	घोड़ी

'-अण्'

कुछ पुल्लिग संज्ञाओं में अण्' प्रत्यय संलग्न करके उनके स्त्रीलिंग रूप बनाये जाते हैं। यदि संज्ञाएं स्वरान्त हो तो प्रत्यय जुडने से पूर्व स्वर का लोप हो जाता है, और यदि संज्ञाएं व्यंजनान्त हो तो अविकारी रूप से यह प्रत्यय जुड़ जाता है, यथा—

स्वरान्त संज्ञाएं व '-अण' प्रत्यय

पुंलिग रूप	स्वरहीन रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिंग रूप
१. धोबी	धोब्	-अण्	धोबण
२. तेली	तेल्	-अण्	तेलण
३. भंगी	भंग्	-अण्	भंगण
४. सेंसी	सेंस्	-अण्	सेंसण

व्यंजनान्त संज्ञाएं व '-अण्' प्रत्यय

पुंलिग रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिंग
१. स्वांस्	-अण्	स्वांसण
२. चमार्	-अण्	चमारण
३. कुंभार्	-अण्	कुंभारण

'-अणी'

बीकानेरी में कुछ व्यंजनान्त पुंल्लिग संज्ञाओं में -अणी प्रत्यय जोड़ कर उनका स्त्रीलिंग रूप बनाया जाता है ।

पुंल्लिग रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिंग रूप
१. ढेढ्	-अणी	ढेढणी
२. ठग्	-अणी	ठगणी
३. जाट्	-अणी	जाटणी
४. डूम	-अणी	डूमणी
५. नट्	-अणी	नटणी

कुछ व्यंजनान्त पुंल्लिग संज्ञाओं में -ऑणी प्रत्यय लगाकर उन्हें स्त्रीलिंग में परिवर्तित किया जाता है, यथा—

पुंल्लिग रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिंग रूप
१. सेठ	-ऑणी	सेठॉणी

२. जेठ्	-ओँणी	जेठोँणी
३. ठाकर् ᔕ ठकर्	-ओँणी	ठकरोँणी
४. देवर्	-ओँणी	देवरोणी ᔕ देरोँणी
५. पंडत्	-ओँणी	पंडतोँणी
६. नोकर्	-ओँणी	नोकरोँणी

बीकानेरी में कुछ प्रत्यय पुरुष वाचक है, जिससे स्त्रीलिंग रूप पुल्लिग में परिणत हो जाते हैं, यथा–

स्त्रीलिंग रूप	प्रत्यय	पुल्लिग रूप
नणद्	ओई	नणदोई
वेन्ँ	–ओई	वेँन्दोई[1]

२. १. २. ५. प्रयोग के आधार पर लिंग निर्णय

उपर्युक्त विवेचन के अतिरिक्त भी कुछ संज्ञा शब्द इस प्रकार के हैं, जिनका लिंग निर्णय लोक प्रयोग के आधार पर ही संभव है, क्योंकि कोई सुविधा जनक आधार नही मिलता, अतः इस संबंध में कोई निश्चित नियम भी नहीं बनाया जा सकता । इस प्रकार के संज्ञा शब्दों के अन्तर्गत व्यंजनान्त शब्द ही अधिक हैं । यहां कुछ शब्द प्रस्तुत किये जा सकते हैं–

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
वल्	०वेल्
चावल्	दाल्
पाप्	छाप्
साग्	आग्
०वड़् (वट वृक्ष)	हड़् (श्रंखला)

२, १. ३. वचन

वचन–विधान की दृष्टि से वीकानेरी संज्ञाओं के दो रूप उपलब्ध होते हैं-

---

१— यहां' वेँन्दोई' में' द' श्रुति' नणदोई साहश्य के कारण है ।
वेन् + द + -ओई = वेन्दोई

१– एकवचन

२– बहुवचन

एकवचन से वस्तु के एकत्व का बोध होता है, और बहुवचन से एक से अधिकत्व का। यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि संज्ञा-पदों में पाये जाने वाले वचन के विभक्ति प्रत्ययों को कारक सम्बन्धों के द्योतक विभक्ति प्रत्ययों से पृथक् करके नहीं देखा जा सकता ।

२. १. ३. १. वचन-विधान

(अ) पुंल्लिग

१. बीकानेरी में पुंल्लिग व्यंजनान्त शब्दों के बहुवचन में रूप अधिकांशतः अपरिवर्तित ही रहते हैं, यथा—

एकवचन	बहुवचन
१. पोँन्	पोँन्
२. बोर्	बोर्
३. चावल़्	चावल़्
४. ऊंठ्	ऊंठ्
५. सरप्	सरप्
६. रींछ	रींछ

२. बीकानेरी में पुंल्लिग ईकारान्त व ऊकारान्त शब्दों के रूप भी बहुवचन में कुछ अपवादों को छोड़कर अपरिवर्तित ही रहते हैं, यथा—

'पुंल्लिग ईकारान्त'

एकवचन	बहुवचन
१. दरजी	दरजी
२. नाई	नाई

३. धोबी	धोबी
४. माली	माली

'पुंल्लिग ऊकारान्त'

एकवचन	बहुवचन
१. आलू	आलू
२. ॰बच्छू	॰बच्छू
३. गऊ	गऊ
४. डाकू	डाकू

३– पुंल्लिग एकारान्त शब्दों के बहुवचन के रूपों में अन्त्य -ए लुप्त होकर '-आ' में परिणत हो जाती है ।

एकवचन	स्वरहीन रूप		बहुवचन
१. पोंडे	पोंड्	-आ	पोंडा
२. दूव्	दूव्	-आ	दूबा
३. चौव्	चौवे	-आ	चौवा

४-- पुंल्लिग ओंकारान्त शब्दों के एकवचन को बहुवचन के रूपों में परिवर्तित करते समय अन्त्य -ओ के स्थान पर -आ जुड़ जाता है ।

एकवचन	बहुवचन
१. काकों	काका
२. घोड़ों	घोड़ा
३. दादों	दादा
४. छोरों	छोरा
५. खरबूजों	खरबूजा

[सूचना:–

उपर्युक्त सभी पुंल्लिग के शब्दों विकारी बहुवचन में '-ओं' प्रत्यय लगता है—]

(क) पुल्लिग व्यंजनान्त शब्दों के विकारी बहुवचन में -ओं प्रत्यय अविकारी रूप से जुड़ता है, यथा–

१. पोंन् + -ओं = पोंनों
२. वोर् + -ओं = वोरों
३. चावल् + -ओं = चावलों
४. ऊंठ् + -ओं = ऊंठों
५. सरप् + -ओं = सरपों
६. रींछ् + -ओं = रीछों

(ख) ईकारान्त व ऊकारान्त शब्दों के बहुवचन विकारी रूपों में अन्त्य -ई और -ऊ लुप्त हो जाते हैं, और -ओं प्रत्यय लगने से पूर्व क्रमशः 'य्' और 'व' श्रुति आ जाती हैं,[1] यथा–

ईकारान्त पुल्लिग

दरजी
१– दरज् + ई + -ओं = दरज् + य् + -ओं = दरज्यों
धोबी
२– धोव् + ई + -ओं = धोव् + य् + -ओं = धोब्यों
माली
३– माल् + ई + -ओं = माल् + य् + -ओं = मालयों

ऊकारान्त पुल्लिग

आलू
१– आल् + ऊ + ओं = आल् + व् + -ओं = आलवों
ॱवच्छू
२– ॱवच्छ् + ऊ + ओं = ॱवच्छ् + व् + ओं = ॱवच्छवों

१— पाणिनि : इकोयणचि /५/१/७७/
अर्थात् अच् परे होने पर इक् के स्थान पर यण् आदेश होता है। बीकानेरी में संस्कृत की यह प्रक्रिया अब भी क्रियान्वित होती है। यथा–
दरज् + ई + ओं = दरज्यों, आल् + ऊ + ओं = आलवों आदि।

डाकू

३– डाक् + ऊ + -ओं = डाक् + व् + ओं = डाक्वों

ग– पुंलिग एकारान्त शब्दों के विकारी वहुवचन के रूप में '-ए' लुप्त करके -ओं प्रत्यय जोड़ा जाता हैं, यथा— पो`डों, दूवों चांत्रों आदि।

घ– पुल्लिग ओंकारान्त शब्दों के वहुवचन में केवल अनुस्वार जोड़ा जाता है। यथा– घोड़ों, छोरों, तालों, दादों, काकों, खरबूजों आदि ।

(आ) स्त्रीलिंग

१– स्त्रीलिंग व्यंजनान्त शब्दों के वहुवचन में -ओं प्रत्यय लगता है ।

	एकवचन	वहुवचन
१.	॒बेल्	॒बेल्यों
२.	दाल्	दाल्यों
३.	लात्	लात्यों
४.	भींत्	भींत्यों
५.	मूंछ्	मूछ्यों
६.	वात्	वात्यों

[सूचना:–

व्यंजनान्त स्त्रीलिंग शब्दों में -ओं प्रत्यय लगने से पूर्व 'य्' श्रुति का समावेश हो जाता है ।]

२. ईकारान्त स्त्रीलिंग व ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के वहुवचन के रूपों में -'ओं' प्रत्यय जुड़ता है और जुड़ने से पूर्व क्रमशः 'य्' और 'व्' श्रुति का आगम हो जाता है, यथा—

ईकारान्त स्त्रीलिंग

	एकवचवन	वहुवचन
१.	काकी	काक्यों
२.	रोटी	रोट्यों
३.	लुगाई	लुगायों
४.	खाखड़ी	खाखड़्यों

५.	छोरी	छोर्‍यों॑
६.	डोकरी	डोकर्‍यों॑

ऊकारान्त स्त्रीलिंग

	एकवचन	बहुवचन
१.	०बऊ	०बयों॑
२.	गऊ	गवां॑
३.	सासू	सासवों॑

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में -ओं॑ प्रत्यय लगने से पूर्व क्रमशः 'य्' और 'व्' श्रुति का समावेश हुआ है। विश्लेषण पु० ईकारान्त व ऊकारान्त शब्दों के अन्तर्गत दिया जा चुका है।

उपर्युक्त विवेचन के अतिरिक्त यहाँ पर उल्लेख कर देना नितान्त आवश्यक है कि बोली में वचन-विधान की इस संश्लिष्ट विधा के अतिरिक्त विश्लिष्ट विधा भी है।कुछ ऐसे संज्ञा शब्द हैं जिनके साथ कहीं अनिवार्य रूप से और कहीं वैकल्पिक रूप से स्वतन्त्र शब्दों को रखकर अनेकत्व का बोध कराया जाता है। ये बहुवचन बोधक शब्द निम्नलिखित हैं—

ओर, लोग, हर, ०जणा, ०जणों॑ आदि।

उपर्युक्त सभी शब्द सर्वनाम-पदों में अधिकतर प्रयुक्त होते हैं, और संज्ञा शब्दों के साथ अधिकतर 'लोग', ओर,' आदि शब्द ही प्रयुक्त होते हैं—

रां॑म ओर आया था
सासू लोग भेला होया है

उपर्युक्त उदाहरणों में 'ओर' तथा लोग बहुत्व का बोध कराते हैं।

२. १. ४. कारक

संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध क्रिया अथवा दूसरे शब्द के साथ सूचित किया जाता है, उसे कारक कहते हैं।

मुख्य रूप से बीकानेरी में संज्ञा के दो कारक भेद उपलब्ध होते हैं:-

१. अविकृत कारक
२. विकृत कारक

२. १. ४. १. अविकृत या मूल कारक

अविकृत या मूल कारक संज्ञा का वह रूप है, जो यथावत (अपरिवर्तित) रूप में रह कर ही कुछ कारक सम्बन्धों को अभिव्यक्त करता है। यथा—

छोरों ०दौंड़्ग्यों = लड़का भाग गया।
छोरों पाछों आय् ग्यों = लड़का वापिस आ गया।

२. १, ४. २. विकारी या विकृत कारक

विकारी या विकृत कारक संज्ञा का वह रूप है, जो मूल रूप की तुलना में कुछ परिवर्तित (विकृत) रूप में प्रयुक्त होता है, और वाक्यान्तर्गत सदैव परसर्गों को ग्रहण करता है, यथा—

रों म नें काढ दीयों	राम को निकाल दिया
घर् सूं आय् ग्यों	घर से आ गया
हरियें रें लायों हूं।	हरि के लिए लाया हूँ

मूल और विकृत (कारक) रूपों के अतिरिक्त बीकानेरी में संज्ञाओं का सबोधन रूप भी प्राप्त होता है, जो उपर्युक्त दोनों रूपों से अलग विशेषता रखता है। अत: यहाँ उन्हें अलग (मूल और विकारी कारकों से) स्वीकार किया गया है।

संबोधन रूप संज्ञा का वह रूप है जिससे किसी प्राणी विशेष को, यदा-कदा भावुकता में जड़ पदार्थो को भी संबोधित किया जाता है। वैसे यह रूप भी विकारी रूप (कारक) माना जा सकता है (संरचना की दृष्टि से) किन्तु इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय बात यह है कि इनके साथ कारक चिन्हों का प्रयोग न होकर कुछ विस्मयादि बोधक चिन्हों का प्रयोग किया जाता है। यथा—

हे रोंम्!	हे राम!

अरें छोरा ! अरे लड़के ! (एकवचन)
अरें छोरों ! अरे लड़कों ! (बहुवचन)

इस प्रकार बोली में मूल और विकारी रूपों के अतिरिक्त सम्बोधन रूप भी स्वीकार किया गया है । अतः अब विविध (लिंग एवं अन्त्य की दृष्टि से) संज्ञा शब्दों की (उपर्युक्त तीनों रूपों– मूल-विकारी-सम्बोधन की) रूप रचना को दोनों वचनों में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

२. १. ४. १. पुल्लिंग संज्ञा शब्द

ईकारान्त – धोबी

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल-रूप	धोबी	धोबी	-० (शून्य)	-० (शून्य)
विकारी-रूप	धोबी	धोब्यों	-० (शून्य)	-ओं
सम्बोधन-रूप	धोबी	धोब्यों	-० (शून्य)	-ओं

ऊकारान्त–आलू

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल-रूप	आलू	आलू	-० (शून्य)	-० (शून्य)
विकारी-रूप	आलू	आलवों	-० (शून्य)	ओं
सम्बोधन-रूप	आलू	आलवों	-० (शून्य)	ओं

एकारान्त–दूबे

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल-रूप	दूबे	दूबा	-० (शून्य)	-आ

विकारी-रूप	दूवे	दूवाँ	-०(शून्य)	-ओँ
सम्वोधन-रूप	दूवे	दूवोँ	-०(शून्य)	-ओँ

ओकारान्त–छोरोँ

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल-रूप	छोरोँ	छोरा	-०(शून्य)	-आ
विकारी-रूप	छोरेँ	छोरोँ	-एँ (अँ)	-ओँ
सम्वोधन-रूप	छोरा	छोरोँ	-आ	-ओँ

व्यंजनान्त – घर्

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल-रूप	घर्	घर्	-०(शून्य)	-०(शून्य)
विकारी-रूप	घर्	घरोँ	-०(शून्य)	-ओँ
सम्वोधन-रूप	घर्	घरोँ	-०(शून्य)	-ओँ

२. १. ४. २. स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द

आकारान्त-भूवा

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल-रूप	भूवा	भूवायोँ	-०(शून्य)	-ओँ
विकारी-रूप	भूवा	भूवायोँ	-०(शून्य)	-ओँ
सम्वोधन-रूप	भूवा	भूवायोँ	-०(शून्य)	-ओँ

ईकारान्त – छोरी

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल-रूप	छोरी	छोर्योँ	-०(शूय)	-ओँ

उपर्युक्त परसर्गों की प्रयोग-प्रक्रिया वीकानेरी में इस प्रकार है—

२. १. ४. ३. १. कर्त्ता कारक[1]

वीकानेरी में कर्त्ता-कारक के विकरी या अविकारी रूपों के साथ कोई भी परसर्ग प्रयुक्त नहीं होता, यह इसकी अपनी निजी विशेपता है। सावारणतः कर्त्ता-कारक का प्रयोग किसी कार्य के सावक के रूप में ही होता, हैं, यथा—

१. छोरी आवें है	लड़की आती है।
२. छोरों दोड़ें है	लड़का भागता है।

२. १. ४. ३. २. कर्म कारक—नें

वीकानेरी में कर्म कारक की अभिव्यक्ति 'नें' परसर्ग को विकारी रूपों के परे रख कर की जाती है, यथा—

१. वल्धों नें काढ	वैंलों को निकालो
२. टोगड़ियें नें पों णी पाव्	वछड़े को पानी पिलाओ
३. रों म् नें वुला	राम को वुलाओ
४. छोरों नें पढाव्	लड़कों को पढ़ाओ

२. १. ४. ३. ३. करण—कारक[2]

वीकानेरी में 'सूं' परसर्ग करण कारक की अभिव्यक्ति के लिए व्यवहृत

संस्कृत में कारकों की संख्या केवल छः ही वताई गई है।

अपादान सम्प्रदान करणाधार कर्मणाम्

कर्तुश्च भेदतः षोढ़ा कारक परिकीर्तितम् - हिन्दी कारकों का विकास

पृ० २० पं० शिवनाथ

१— 'प्रातिपदिकार्थलिंगपरिमाण वचन मात्रे प्रथमा।'

अष्टाध्यायी २/३/४६/

२— सावकतमं करणम्

अष्टाध्यायी /१/४/४२/ पाणिनि

होता है, साथ ही तुलनात्मक अभिव्यक्ति में भी 'सूं' परसर्ग ही प्रयुक्त होता है, यथा–

१. हाथ सूं रोटी खावें है	हाथ से रोटी खाता है।
२. मदन दूध सूं रोटी खावें है	मदन दूध से रोटी खाता है।
३. रोंम पोंणी सूं हाथ धोवें है	राम पानी से हाथ धोता है।
४. मनोर सूं मक्खणियों तकड़ो है।	मनोर से मक्खन (लाल) वलिष्ठ है।

२. १. ४. ३. ४. सम्प्रदान कारक[1]

बीकानेरी में सम्प्रदान कारक की अभिव्यक्ति 'रें' 'नें' परसर्गों को विकारी रूपों के परे रखकर की जाती है, यथा–

१. मदन रें लायों हूं	मदन के लिए लाया हूं।
२. रोंम रें दवाई लायों	राम के लिए दवाई लाया।
३. वडों नें पगेलागणा	बुजुर्गों के लिए प्रणाम।
४. छोरों नें आसीस	लड़कों के लिए आशीर्वाद।
५. गुरुजी नें दंडोत	गुरुजी के लिए प्रणाम।

२. १. ४. ३. ५. अपादान कारक[2]

बोली में 'सूं' परसर्ग ही अपादान कारक की अभिव्यक्ति के लिए व्यवहृत होता है, और साथ ही तुलनात्मक स्थितियों में भी सूं परसर्ग प्रयुक्त होता है। यथा–

१. छोरों ड़ागलें सूं पड़ग्यों	लड़का छत से गिर गया।
२. रोंम अठें सूं गयों परों	राम यहां से चला गया।

१— 'कर्मणा यमभि प्रैति स सम्प्रदानम्' —अष्ठाध्यायी १/४/३२/ पाणिनि

२— 'ध्रुवमपायेअपादानम्' —अष्ठाध्यायी १/४/२४/ पाणिनि

३. कसनें सूं हरियो बडो़ँ है	किसन से हरि बड़ा है।
४. वोँ म्हारेँ सूं छोटोँ है	वह मेरे से छोटा है।

२. १. ४. ३. ६. सम्बन्ध कारक

बीकानेरी में सम्बन्ध कारक की अभिव्यक्ति के लिए पुल्लिंग एकवचन में 'रोँ' बहुवचन में 'रा' तथा स्त्रीलिंग एकवचन व बहुवचन में 'री' परसर्ग का प्रयोग होता है, यथा–

१. मदन रोँ छोरोँ है	मदन का लड़का है।
२. मदन रा छोरा है	मदन के लड़के हैं।
३. सीता री घोड़ी है	सीता की घोड़ी है।
४. सीता री घोड़्योँ	सीता की घोड़ियां है।

'रोँ', 'रा', 'री', आदि परसर्गों के अतिरिक्त बीकानेरी में सम्प्रदान कारक का परसर्ग 'रेँ' भी प्रयोग में आता है। विशेषतः यह संतान आदि की सूचना देने के लिए एवं नीचेँ, ऊपर, आगेँ, लारेँ आदि शब्दों के पूर्व व्यवहृत होता है, यथा–

१. रोँम रेँ तीन छोरा है	राम के तीन लड़के हैं।
२. मदन रेँ दो छोरा एक छोरी है	मदन के दो लड़के एवं एक लड़की है।
३. हरियेँ रेँ एकी टाबर कोयनी	हरि के एक भी बच्चा नहीं है।
४. घर रेँ आगेँ खाडोँ है	घर के आगे खड्डा है।
५. घर रेँ लारेँ ढूंढ्योँ हैं	घर के पीछे नल है।
६. खेजड़ेँ रेँ नीचेँ	वृक्ष के नीचे
७. मन्दर रेँ ऊपर	मन्दिर के ऊपर

२. १. ४. ३. ७. अधिकरण कारक

बीकानेरी में मेँ, माथेँ, ऊपर, आदि परसर्ग अधिकरण कारक की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त होते हैं।

में परसर्ग सामान्यतः स्थान (अन्दर या बाहर) तथा समयावधि की सूचना देता है।

१. म्हारो घर गाँव में है	मेरा घर गांव में है।
२. राँम दुकाँन में है	राम दुकान में है।
३. डागलै माथै पड़ियो है	छत पर पड़ा है।
४. अलमारी ऊपर पड़ियो है	आलमारी पर पड़ा है।

२. २. दो या दो से अधिक स्वतंत्र रूपाँश युक्त नामवाची-पद (समस्त-संज्ञा-पद)

एक स्वतंत्र रूपांश युक्त नामवाची पदों में केवल एक ही शब्द में विविध लिंग-वचन-कारक बोधक आवद्ध अंशों को जोड़कर पद रचना की जाती है परन्तु दो या दो से अधिक स्वतंत्र रूपांशों में परस्पर भिन्न दो स्वतंत्र रूपांशों के योग में विविध लिंग-वचन-कारक बोधक आवद्ध अंशों को जोड़ कर पद रचना की जाती है और इस संयोग के परिणाम स्वरूप उसमें अर्थ अभिनवता आ जाती है। पारिभाषिक शब्दावली में इसे 'समस्तपद' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि समस्त पदों को नाम पदों के अध्ययन में क्यों स्वीकार किया जाय ? उत्तर स्वरूप हम निम्नलिखित तर्क उपस्थित कर सकते हैं —

१— जिस प्रकार शब्द के अन्त में विविध अर्थ बोध कराने वाले व्याकरणिक कोटि के आवद्ध अंशों का योग होता है, उसी प्रकार समस्त-पद में भी इनके योग के द्वारा विविध व्याकरणिक कोटि के अर्थों की व्यंजना की जाती है।

२. यद्यपि समस्त-पद की रचना दो या दो से अधिक स्वतंत्र रूपांशों के योग से होती है परन्तु ये दोनों स्वतंत्र रूपांश मिल कर वाक्यान्तर्गत एक स्वतंत्र रूपांश युक्त पद के समान एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं यथा— राजकंवर (राजकुमार)।

इस उदाहरण में राज (राजा) और कंवर (कुमार) दो भिन्न-भिन्न पद है जब वे मिलकर एक हो जाते हैं तो एक ही शब्द के समान अर्थ को व्यक्त करते हैं।

३. शब्द में वल एक ध्वनि के ऊपर ही प्रमुख होता है, उसी प्रकार समस्त पद में भी एक ही ध्वनि के ऊपर वल की प्रधानता रहती है ।

४. वाक्य रचना एवं अन्य शब्द संरचना में शब्द के समान समस्त-पद में भी योग्यता विद्यमान रहती है ।

५. शब्द का जो स्वरूप और लक्षण होता है उसके अनुरूप ही समस्त-पद का स्वरूप होता है ।

६ शब्द के समान समस्त-पद में भी उच्चारण के दोनों भेद युक्त एवं मुक्त संक्रमण विद्यमान रहते हैं ।

७ उच्चारण में स्वास का एक झटका [1]

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर समस्त-पदों को भी नाम पदों के अध्ययन में स्थान दें तो किसी प्रकार की अत्युक्ति न होगी । इस अध्याय में केवल समस्त संज्ञा-पदों का ही विश्लेषण प्रस्तुत किया है ।

'समस्त-पदों के तात्विक निष्कर्षों पर पहुँचने के लिए यदि हम तत्सम्बधित कतिपय विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का अवलोकन करें तो अप्रासंगिक न होगा—

'समर्थः पदविधि अर्थात् पदविधि समर्थ होती है ।[2]

समस्यते अनेकम पदमिति समासः अर्थात् अनेक पदों को एक पद मे मिला देना ही समास है । [3]

१— इस श्वास के झटके को अक्षर उच्चारण के झटके में भिन्न समझना चाहिए । श्वास प्रवाह वाक्यान्त या वाक्यांश तक पहुँचने से पूर्व अनेक छोटी बड़ी तरंगों में बंट जाता हैं । यदि अक्षर उसकी लघु तरंग है तो समस्त शब्द गत तरंग उससे दीर्घतम तरंग है ।

२— पाणिनि – अष्टाध्यायी २/१/१/

३— सिद्धान्त कौमुदी : बाल मनोरमा टीका

'दो या दो से अधिक शब्दों का परस्पर संबंध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर, उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतंत्र शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं, और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है वह समास कहलाता है ।[1]

अनेक शब्द मिलकर एक पद जब बन जाते हैं तो वह समास कहलाता है ।[2]

समास रचना में उन दो शब्दों का योग होता जो वाक्य के स्वतंत्र अंग होते हैं, परन्तु समास रचना में वाक्य के प्रत्येक शब्द का योग प्रत्येक शब्द के साथ नहीं हो सकता । केवल सन्निकट रचनाओं के साथ ही समास रचना हो सकती है ।[3]

धातु तथा प्रत्यय के योग से शब्द बनते हैं और जब एक से अधिक शब्द मिलकर वृहद शब्द की सृष्टि करते हैं, तब उसे समास कहते हैं ।[4]

शब्दों का कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार आपस में मिल कर एक होना ।[5]

दो या अधिक पदों को एक करने पर समास होता है ।[6]

दोय के दोय सूं घणा शब्द, अपणा सम्बंधी शब्दां ने छोड़ एक साथै मिल जावे तो अंड़ा मेल सूं बणियोड़ा शब्दां ने 'समास' केवीजै ।[7]

१— कामता प्रसाद गुरू – हिन्दी व्याकरण-नागरी प्रचारणी सभा काशी, पृ० ४८१

२— किशोरीदास वाजपेयी – हिन्दी शब्दानुशासन न:० प्र० स० पृ० ३०६

३— डॉ० रमेश चन्द्र जैन – हिन्दी समास रचना का अध्ययन पृ० १०

४— डॉ० उदयनारायण तिवारी – हिन्दी भाषा का एद्गम और विकास पृ० ४७०

५— डॉ० श्यामसुन्दर तथा अन्य (सम्पादक) हिन्दी शब्दसागर काशी नागरी प्रचारिणि सभा, पृ० ३४६०

६— हिन्दी विश्वकोश : त्रयोविंश भाग पृ० २९५

७— सीताराम लालस राजस्थानी व्याकरण पृ० २९५

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं में विद्वानों के मत भिन्न-भिन्न शब्दों में एक ही आशय को अभिव्यक्त करते हैं तथा उदाहरणों द्वारा उन्होंने अपने मत का जो पुष्टिकरण किया है वह भी अभेद-सूचक ही है । अनेक विद्वानों के सार को लेकर डॉ० रमेशचन्द्र ने समस्त-पद के सम्बन्ध में निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं जो निम्नलिखित हैं —

(अ) दो या दो से अधिक समीपी संघटकों द्वारा एक शब्द का अस्तित्व

(ब) सृष्ट समस्त-पद में अर्थ अभिनवता

(स) समीपी संघटकों के अर्थ से भिन्नता

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि जब दो या दो से अधिक स्वतंत्र रूपांशों के यो। से व्युत्पन एक स्वतंत्र रूपांश अस्तित्व ग्रहण करता हैं और संयोग के परिणाम स्वरूप जब उसमें अर्थ अभिनवता आ जाती है तो पारिभाषिक शब्दावली में उसे समस्त-पद कहा जा सकता है ।

अस्तु 'प्रकृतमनुसरामः, । बीकानेरी के समस्त-नाम-पदों का अध्ययन क्रमशः ध्वन्यात्मकता एवं रूपात्मकता की दृष्टि से नीचे प्रस्तुत किया गया हैं। ध्वन्यात्मक विश्लेषण के अन्तर्गत मूल समीपी संघटकों में ध्वन्यात्मक परिवर्तन होकर समस्त-पद में जो परिणाम लक्षित हुए हैं, उन्हें प्रस्तुत किया गया हैं। उपलब्ध सामासिक पदों का विग्रह करने के उपरान्त समीपी संघटकों में ध्वन्यात्मक परिवर्तन के प्रयोग तथा संयोग के परिणाम स्वरूप ध्वनि नैकट्य का भी विवेचन प्रस्तुत किया गया है । इस प्रकार का विश्लेषण बीकानेरी के मूल नाम पदों के स्वरूप को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है । रूपात्मक विश्लेपण के अन्तर्गत शब्द के व्याकरणिक स्वतंत्र रूप निर्माण की प्रक्रिया एवं प्रयोग को स्वीकार किया गया है । अर्थ विज्ञान की दृष्टि से समस्त-पदों में अर्थ अभिनवता की दिशा एवं उसके स्वरूप पर प्रकाश डाला जाता है जो मेरे 'लघु-शोध-प्रबंध' की सीमा के बाहर है, अतः अर्थ विज्ञान को विश्लेपण के अन्तर्गत स्वीकार नहीं किया गया है । समस्त पदों के इस विश्लेषण के साथ-साथ समीपी संघटकों की प्रधानता अप्रधानता पर भी विचार किया गया है ।

समस्त-पदों के स्वरूप निर्धारण में मैने संस्कृत एवं हिन्दी की पूर्व प्रचलित रूढ़ परम्पराओं को पूर्ण रूपेण अंगीकार नहीं किया है यदि ऐसा करता

तो मेरा 'प्रबंध' गडुलिका प्रवाह मात्र ही सिद्ध होता है । अद्यावधि प्रचलित मान्यताओं के विश्लेषण के उपरान्त सामान्य मान्यताओं का निर्धारण कर उन्हीं के आधार पर समस्त-पद-स्वतन्त्र रूपांश का निर्धारण किया गया है ।

२. २. १. बीकानेरी में प्रयुक्त समस्त-संज्ञा-पद

बीकानेरी में समास रचना के परिमाण स्वरूप समीपी संघटकों के मूल रूप में ध्वनि परिवर्तन होता है, पर कुछ समस्त-पद ऐसे भी हैं जिनमें संयोग उपस्थित होने पर भी ध्वनि की दृष्टि से विकार उत्पन्न नहीं होता है । अतः अध्ययन की सुविधा के लिए हम बीकानेरी समस्त संज्ञा पदों को दो वर्गो मे विभक्त सकते हैं –

१. अविकृत समस्त-संज्ञा-पद
२. विकृत समस्त-संज्ञा-पद

२. २. १. १. अविकृत समस्त-संज्ञा-पद

अविकृत रूपों से हमारा तात्पर्य उन समस्त-संज्ञा-पदों से हैं, जिनमें ध्वनि की दृष्टि से दोनों समीपी संघटकों में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं होता है, वरन वे अपने मूल रूप में प्रयुक्त हुए हैं । बीकानेरी में उपलब्ध समस्त संज्ञा-पदों के अविकारी रूप निम्नलिखित हैं –

ऊंदरों-ऊंदरी, कल़जुग, कण-कण, कालीमरच्यों, कुंजगली, कोंडी-कोंडी, खाटों-मीठों,. घरज्वांई, घर-बार, घर-घर, जनमभूमि, झगलों-टोपी, नन्दलाल, फलफूल, जीवणों-मरणों, मायाजाल, मोरमुगट रायकंवरी, रोटी-बाटी, लट-पट, बेदव्यास, सुख-दुख, हाल-चाल मार-कूट, बोल-चाल, उठ-बैठ, तोड़-फोड़, मां-बेटों, बाप-बेटों, मां बाप, भाई-बेंन, हाथ-मूंडों, आंख-नाक, रसोईघर, कोंम-चोर, लाल़-पील़ों, पाप-पुन, होल़ी-दीयाल़ी, सूझ-बूझ, सूतों-सूतों, सोंवल़ी-सूरत, सरग-वसोंई, ।

२. २. १. २. विकृत समस्त-संज्ञा-पद

विकृत समस्त-संज्ञा-पदों से हमारा तात्पर्य उन समस्त पदों से हैं जिनमें

ध्वनि की दृष्टि से दोनों समीपी संघटकों की आदि, मध्य अथवा अन्त्य ध्वनि में किसी न किसी प्रकार का विकार व्युत्पन्न हुआ है। विकृत रूपों को को ध्वनि विकृति के आधार पर हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं -

आदि समीपी संघटक में विकार
अन्त्य समीपी संघटक में विकार
द्विसमीपी संघटक में विकार

२. २. १. २. १. आदि (प्रथम) समीपी संघटक में विकार

कोँनोकोँन, खटमीठोँ, देई देवता, नकटी, पाड़ पाड़ोस, रजपूतोँ, रातोरात, हाथोहाथ, नोँरतन, ०वड़वोर, धक्कमधक्का,

उक्त सामासिक पदों में ध्वनि परिवर्तन के विभिन्न रूप हमें देखने को मिलते हैं। इनका विश्लेषण निम्नलिखित हैं -

ध्वनि लोप-

(क) स्वर लोप
०वड़वोर—वड्+आ+वोर=०वड़ावोर
लोप / आ / ०वड्+आ+वोर=०वड़वोर

(ख) व्यंजन लोप
देईदेवता—देव+ई+देवता=देवीदेवता
लोप / व् / देव+ई+देवता=देइदेवता

(ग) अक्षर लोप
नकटी=नाक+कटी=नाककटी
लोप—नाक+कटी=नकटी

(घ) स्वर व्यंजन लोप
पाड़पाडोस—पाड़ोस+पाड़ोस=पाडोसपाड़ोस
लोप—पाड़+ओ+स्+पाड़ोस=पाड़पाड़ोस

ध्वनि आगम

(क) स्वरागम

रातोरात, कोंनोकोंन, हाथोहाथ

रात+रात=रातरात

आगम — रात+ओ+रात=रातोरात

कोंन+कोंन=कोंनकोंन

आगम — कोंन+ओ+कोंन =कोंनोकोंन

(ख) व्यंजनागम

धक्कमधक्का

धक्का+धक्का=धक्काधक्का

आगम — धक्क+म्+धक्का=धक्कमधक्का

२. २. १. २. २. अन्त्य (द्वितीय) समीपी संघटक में विकार

राबड़ी-वाबड़ी, आठोंनी, च्यारोंनी, दोयोंनी, एकोंनी, गणगोंर, मोतीचूर, गणपत, बोल-वालों, मनखजमारों, लातघमूका, मूंछ-मरोड़ा

उपर्युक्त सामासिक पदों के द्वितीय समीपी संघटक इकाईयों में विकार उत्पन्न हुआ है। वह कई प्रकार का है जिसके कारण मूल रूप में ध्वन्यात्मक परिवर्तन हुआ है।

ध्वनि लोप

(क) अन्त्य लोप

/ई/ गणपत

गण+पत्+ई= गणपती

लोप— गण+पत्+ई= गणपत

/ओं/ मोतीचूर

मोती+चूर+ओ=मोतीचूरों

लोप— मोती+चूर+ओ=मोतीचूर

(ख) मध्य ध्वनि लोप

/ह/ होठोंवार

होठों+बा+ह+र=होठोंबाहर

लोप— होठों+आ+ह+र=होठोंवार

ध्वनि आगम

अन्त्य ध्वनि आगम

/आ/ वोलवाला, मूंछ-मरोडा

वोल+वाल+आ=वोलवाला

मूंछ+मरोड़+आ=मूंछमरोड़ा

संज्ञा शब्दों की पुनरुक्ति से बनने वाले समासों में भी ध्वनि विकार द्वितीय संयोगी अवयव में देखा जाता है। ध्वनि विकार की दृष्टि से इस वर्ग के दो रूप उपलब्ध होते हैं –

(क) ई, ए तथा ओ > आ यथा–

/ई > आ/	भीड़-भाड़	समूह आदि
/ई > आ/	वील-वाल	वेल (फल) आदि
/ए > आ/	डेरें-ड़ारें	डेरे आदि
/ओ > आ/	छोरों-छारों	लड़के आदि

(ख) आ > ऊ यथा–

/आ > ऊ/	वालबूल	जलाकर
/आ > ऊ/	खाटखूट	खाटादि
/आ > ऊ/	दालदूल	दालादि
/आ > ऊ/	सागसूग	सब्जी आदि
/आ > ऊ/	तालोंतूलों	ताला आदि

संज्ञा प्रातिपदिक की द्विरुक्ति से निर्मित ऐसे भी समस्त-पद उपलब्ध होते हैं जिनके द्वितीय संयोगी अवयव ध्वनि-विकार की दृष्टि से व्यंजन विहीन

हो गये हैं। यथा–

रोटी-ओटी	रोटी आदि
साग-आग	सब्जी आदि
भाई-आई	भाई आदि
सालो़ँ-आलो़ँ	साले आदि

किन्तु यदि आदि रूप स्वर से आरंभ होने वाला है तो पुनरुक्ति में 'व' श्रुति का आगम आदि भाग में हो जाता है –

आटोँ-वाटोँ	आटा आदि
आलू-वालू	आलू आदि
ईंट-वींट	ईंट आदि

२. २. १. २. ३. द्विपद समीपी संघटक में विकार

ऊनालो़ँ (उष्ण + काल), कनफड़ा, चोँवारोँ, चोँमासोँ, भूमाभूमी, रजपूतण, सीयालो़ँ, हथलेवोँ, होडाहोडी, भड़भूंजोँ, धक्का-धक्की, तणा-तणी, बउरूपियोँ

प्रथम पद-विकार	द्वितीय पद-विकार
लोप — /ओं/ – घूंघरमाल	लोप – /आ/ घूंघरमाल
आगम— /आ/- होडाहोडी	आगम– /ई/- होडाहोडी
आगम— /आ/- तणातणी	आगम– /ई/- तणातणी
आगम— /आ/- भूमाभूमी	आगम– /ई/- भूंमाभूमी
लोप — /ओ/- कनफड़ा	लोप – /आ/ कनफड़ा
अल्पप्राणीकरण- ऊनालोँ	लोप - /ओँ/- (ऊनोँ-आलोँ) = ऊनालोँ
आगम — /ई-इय/-सीयालो़ँ	लोप- /आ/ (सी+आलोँ) = सीयालोँ
लोप — /र/- चोँमासोँ	आगम— /ओँ/ चोँमासोँ
लोप — /र/- चोँबारोँ	आगम— /ओँ/ -चोँबारोँ
लोप — /र/- – चोँरायोँ	आगम— /आ-ओ/, लोप /ह/, श्रुति /य/ -चोँरायोँ

जहां भाषा या बोली के लिखित रूप में यह व्यवधान मुक्तसंक्रमण के द्वारा किया जाता रहा है वहां पर हम सामासिक पदों के इन दो ही रूपों का स्वरूप संश्लिष्ट एवं विश्लिष्ट प्रस्तुत कर सकते हैं। भाषा या बोली के उच्चरित रूप में यह संक्रमण विभिन्न मात्रा में घटित होता है। अतः लिपि के अन्तर्गत इस प्रकार के व्यवधान को प्रस्तुत करने के लिये हमारे पास पर्याप्त ध्वनि संकेत उपलब्ध नहीं हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति प्रायः संसार की सभी भाषाओं में लक्षित होती है। बीकानेरी के उच्चरित रूप को ध्यान में रखकर ध्वनि-संयोग का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है जिसका आधार संश्लिष्ट और विश्लिष्ट पद है। ध्वनि लक्षणों को दृष्टि पथ में रखकर विश्लिष्ट पदों के स्थूल भेद किये गये हैं। यह कार्य सरल नहीं हैं, फ़िर भी कतिपय अनुमानों के आधार पर निष्कर्षों तक पहुंचने का प्रयास किया गया है। परिणामतः विश्लिष्ट पदों को दो भागों में विभाजित किया गया है—आंशिक और पूर्ण। इसी प्रकार संश्लिष्ट पदों को भी दो भागों में विभाजित किया गया है। इसका आधार भी प्रथम, जहाँ ध्वनि-परिवर्तन संधिगत नियमों के अन्तर्गत हुआ है और दूसरा वहाँ जहां ध्वनि परिवर्तन संधिगत नियमों से पृथक् और परे है।

२. २. १. ३. १. संश्लिष्ट समस्त-संज्ञा-पद

संधि नियमों से प्रभावित सजातीय वर्ग दीर्घत्व को प्राप्त होते हैं। तत्परिणामस्वरूप समीपी संघटकों के अन्यान्य स्वरों में संधि हो जाती है। ह्रस्व के स्थान पर दीर्घ ध्वनियाँ स्थान ग्रहण कर लेती हैं। यथा-सीयालों,ऊनालों आंठोंनी, दोओंनी, एकोंनी आदि।

समीकृत सम ध्वनियों का संधि में प्रायः लोप होता है। सामासिक पदों के संयोग में भी इस प्रकार की प्रवृत्ति उपलब्ध होती है।

ध्वनि संयोग में संश्लिष्ट पद का दूसरा उदाहरण आद्यंत समीपी संघटकों की अन्त्य एवं आदि ध्वनियों से ध्वनि संयोग निकटवर्ती तो होता हैं, पर संधि विधान से प्रभावित नहीं होता। इस प्रकार का नैकट्य बीकानेरी में समीपी संघटकों में एक संघटक एकाक्षरीय एवं ध्वनि लक्षण से प्रभावित है यथा चोंमासों चोंबारों आदि।

२. २. १. ३. २. विश्लिष्ट समस्त-संज्ञा-पद

बीकानेरी के अधिकांश उपलब्ध समस्त संज्ञा पद विश्लिष्ट हैं। यह विश्लिष्टता तब होती है जबकि सामासिक पदों की दोनों समीपी संघटक इकाइयों में प्रथम के उपान्त्य या अन्त्य एवं द्वितीय की आदि या द्वितीय ध्वनि पर बलाघात हो। प्राय: इस बलाघात की प्रवृत्ति का क्रम बीकानेरी में क्रमश: दीर्घ-ह्रस्व, महाप्राण, अल्पप्राण, सघोष-अघोष, संघर्षी—स्पर्शसंघर्षी, स्पर्श उच्चारण में देखने को मिलते हैं।

दीर्घ-ह्रस्व

(क) दीर्घ—दीर्घ	काकाकाक्यों, मोंमामोंम्यों
(ख) दीर्घ—ह्रस्व	बटाबट, लपालप, भचाभच
(ग) ह्रस्व—दीर्घ	देइदेवता, पछवाड़ों, ०बउवेटा

कभी-कभी इस प्रकार के समीपी संघटको की इकाइयों का योग होता है जिसमें प्रथम समीपी संघटक इकाई व्यंजनान्त है वहाँ ह्रस्वता की मात्रा अत्यल्प हो जाती है। इसी कारण इसे पृथक् वर्ग में प्रस्तुत किया गया है।

अति ह्रस्व-दीर्घ

खटमीठों, रजपूतों आदि। अति ह्रस्व ध्वनियों में यदि समीपी संघटकों की अन्त्य या आदि ध्वनि में से एक उत्क्षिप्त हो तो अति ह्रस्वता की मात्रा में अन्तर उपस्थित हो जाता है। दीर्घत्व ह्रस्व के नैकट्य को प्राप्त कर लेता है। यथा पाड़पाडोसी, भड़भून्जा

अनुनासिक ध्वनियों की भी यही स्थिति देखी जाती है—
गणपत, कनफड़ों, दीनदयाल। यही प्रवृत्ति लुंठित एवं पार्श्विक ध्वनियों में भी देखी जाती है। यथा—कालकूटियों।

महाप्राण-अल्पप्राण

प्रथम समीपी संघटक की प्रथम इकाई के अन्त्य वर्ण में महाप्राणता पर बल का प्रयोग होता है। यथा-मनखजमारों, हथलेवों आदि। द्वितीय समीपी संघटक के आदि में महाप्राणता के आधार पर भी ध्वनि संयोग में बल के परिणाम

भी यही प्रभाव लक्षित होता है। यथा-ऊंदरों-ऊंदरी ।

जहां कहीं सम्बन्ध सूचकों का लोप हुआ है, इस प्रकार के लुप्तक समास पदों के ध्वनि संयोग में पूर्ण विश्लिष्टता विद्यमान रहती है। भेद्य-भेदक, सम्बन्ध-सूचक प्रत्ययों के लोप में इसी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। यथा-
अश्वभंडार, धणी॰ग्रऊ, घरधणी, वैकुण्ठवास में क्रमशः / रा /, / और /, / सें /, / में / सम्बन्ध सूचक हैं।

संयोग में व्यवघात कभी-कभी विशेषण-विशेष्य संबंध के द्वारा भी उपस्थित होजाता है। अतः जिस प्रकार का संयोग विशेषण-विशेष्य क्रम से होना चाहिये उस प्रकार का संयोग विशेष्य में नहीं हो पाता। यथा-घनश्योंम ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि बीकानेरी समास संज्ञा पदों के समीपी संघटकों के ध्वनि संयोगो में मात्रा काल के अनेक स्तर हैं ।

२. २. १. ४. समस्त-संज्ञा-पद स्रोत मूलक विश्लेषण

इस शीर्षक के अन्तर्गत बीकानेरी के समस्त पदों के मूल स्रोतों पर विचार किया है। सामान्यतः स्रोत से आशय मूल शब्द की उत्पत्ति और तत्सम्बन्वित भाषा से है। इसे ऐतिहासिक विश्लेषण के अन्तर्गत रखा जाता हैं। वर्णनात्मक सामासिक संरचना में दूसरे प्रकार का स्रोत ही विद्वानों ने स्वीकार किया है, जिसके अनुसार प्रचलित भाषा में ही उसके स्रोतो को सार्थक स्वतंत्र रूपों की इकाई के रूप में खोजने का प्रयास किया जाता रहा है। प्रस्तुत लघुशोध-प्रबन्ध में विषयानुकूल द्वितीय प्रकार के स्रोत पर ही अपनी दृष्टि केन्द्रित रक्खी गई है। इसके अनुसार बीकानेरी में उपलब्ध स्वतंत्र रूपांश जिनका अधुनातम प्रयोग प्रचलित हैं- ध्वन्यात्मक विकार की दृष्टि से अपने मूल स्रोत से कितनी दूर हैं ? या मूल रूप में प्रयुक्त हैं। अतः ध्वनि विकार मात्रा एवं तज्जन्य स्वतंत्र रूपांश में मूल शब्द से दूरी, जिसके कारण शब्द-विशेष का मूल शब्द के साथ साम्य स्थापित करने में क्रमशः दुरूहता की मात्रा बढ़ती जाती है,-को विभिन्न स्तरों में विभाजित कर विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अध्ययन की सुविधा के लिए उनका वर्गीकरण निम्नलिखित पंक्तियों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है-

(१) तत्सम (२) अर्द्ध तत्सम (३) तद्भव (४) अर्द्ध तद्भव (५) अनुकारवाची (६) देशज (७) विदेशी

१- तत्सम

तत्सम शब्दों से मेरा आशय उन समस्त पदों से है जिनका ध्वन्यात्मक विकार से रहित बीकानेरी में प्रयोग उपलब्ध होता है।

२- अर्द्ध तत्सम

अर्द्ध तत्सम शब्दों में मैंने उन समस्त पदों को स्वीकार किया है जिनमें स्वतंत्र रूप ध्वनि विकार की अत्यल्पता के कारण अपने मूल रुप के अधिक सन्निकट दिखाई देते हैं।

३- तद्भव

तद्भव शब्दों की श्रेणी में ऐसे पदों को स्वीकार किया हैं, जिनमें ध्वनि विकार इतनी मात्रा में उपस्थित हुआ है कि उन शब्दों का मूल रुप के साथ ध्वन्यात्मक साम्य स्थापित नहीं किया जा सकता।

४- अर्द्ध तद्भव

अर्द्ध तद्भव की श्रेणी में ऐसे स्वतंत्र रूपों को स्वीकार किया गया है जो अपने मूल रूप से ध्वन्यात्मक विकार के परिणाम स्वरूप इतने दूर हो गये हैं कि विकास जन्य स्वतंत्र रूप एवं मूल रूप में पारस्परिक ध्वनि साम्य स्थापित करना असम्भव नहीं तो दुष्कर व श्रमसाध्य अवश्य है।

५- अनुकारवाची

ऐसे शब्द जो ध्वन्यात्मक अनुकरण के आधार पर निर्मित हुए हैं उन्हें इस वर्ग में स्वीकार किया गया है।

६. देशज

भरत ने तत्सम और तद्भवों के अतिरिक्त शब्दों को 'देशी' या देश्य भी कहा है।[1] छठी शताब्दी में चण्ड ने 'देशी–प्रसिद्ध' शब्द का प्रयोग अ-संस्कृत

१— भरत मुनि : नाट्य शास्त्र /१७/ ३/

तथा आ-प्राकृत शब्दों के लिये किया है[1] 'देशी' शब्द अपभ्रंश का वाचक भी हो गया था। हेमचन्द्र की 'देशी नाम माला' देशी शब्दों का कोष है। पर जिन शब्दों को प्राकृत वैयाकरणों ने देशी' सज्ञा दी है उनमें से कुछ की व्युत्पत्ति संस्कृत से भी है, और कुछ का स्रोत अन्य भाषाओं में हैं। एम० एन० उपाध्ये ने कुछ का स्रोत कन्नड़ में बताया है। परन्तु अधिक जटिलता में न जाकर हम सामान्य रूप से कह सकते हैं कि जिनकी व्युत्पत्ति का सही निर्धारण नहीं किया जा सके वे ही शब्द 'देशी' या देशज हैं। ऐसे शब्दों का भाषाओं की अपेक्षा बोलियों में बाहुल्य होता है। बीकानेरी में भी ऐसे शब्दों का प्राचुर्य है।

७. विदेशी

ऐसे शब्द जो विदेशी भाषाओं से गृहीत हुए हैं-इस वर्ग में स्वीकार किये गये हैं।

सामासिक संरचना के अन्तर्गत मैंने संघटकों की अधुनातम उपलब्ध प्रयोग प्रक्रिया को प्रस्तुत करने का यथा सम्भव प्रयास किया है जिसका आधार ध्वनि विकार और मात्राएं हैं।

१- तत्सम+तत्सम=तत्सम, यथा-
करण-करण, सुख-दुख, ०वेदव्यास,बाल-लीला, नाग-लीला।

२- तत्सम+तद्भव=तत्सम- तद्भव, यथा-
गणपत, घनश्योम, रूपचन्द, कुंजगली

३- तत्सम+विदेशी=तत्सम--विदेशी, यथा-
पंचकमेठी

४- तद्भव+तत्सम=तद्भव--तत्सम, यथा-
जनमभूमि, रत्तोंणी-व्यास

५- अर्द्ध तत्सम+अर्द्ध तत्सम=अर्द्ध तत्सम, यथा-
राजपूत, दूधपूत, कलजुग, मरतलोक

६- अर्द्ध तत्सम+तत्सम=अर्द्ध-तत्सम--तत्सम, यथा-
देइदेवता, रोंमराज्य

२- 'आब्जरवेशन्स आन हेमचन्द्र' देशी नाम माला 203598

७– तत्सम+अर्द्ध तत्सम=तत्सम–अर्द्ध तत्सम, यथा–
एकों नी, काली मरच्यों

८– अर्द्ध तत्सम+तद्भव=अर्द्ध तत्सम—तद्भव, यथा–
कालकोठरी, राजकंवरी, मणधारी

९– तद्भव+अर्द्ध तत्सम=तद्भव—अर्द्ध तत्सम, यथा–
चोंमासों, चोंवारों. मोरमुगट

१०– तद्भव+तद्भव=तद्भव, यथा–
क- जीवणों मरणों, दूदई, थाली-लोटों
ख- सूतों-सूनों, कोंनों-कोन, हायो-हाय, मनख-मनख

११– तद्भव+अर्द्ध तद्भव=तद्भव—अर्द्ध तद्भव, यथा–
घरज्वांई, हथलेवों, भूलचूक

१२– अर्द्ध तत्सम + अर्द्धतद्भव=अर्द्ध तत्सम—अर्द्धतद्भव, यथा–
रोंडखावणी, हाथकोंम

१३– अर्द्ध तत्सम+तत्सम=अर्द्ध तत्सम—तत्सम, यथा–
नरोगीकाया, देईदेवता,

१४– अर्द्ध तद्भव+तद्भव=अर्द्ध तद्भव—तद्भव, यथा–
खाटोंमीठों, खटमीठों,

१५– अर्द्ध तद्भव+अर्द्ध तत्सम=अर्द्ध तद्भव—अर्द्धतत्सम, यथा–
हालतों-चालतों, वउरूपीयों

१६– अर्द्ध तद्भव+अर्द्ध तद्भव=अर्द्धतद्भव, यथा–
क- आंठोंनी, च्यारोंनी, चोंरायों
ख- कोंडी–कोंडी
ग- गुत्थम–गुत्था
घ- आपरी–आपरी

१७– तत्सम+अर्द्धतद्भव=तत्सम—अर्द्धतत्सम, यथा–
गलाघोंट, राघावेंनजी

१८– अनुकारवाची +अनुकारवाची=अनुकारवाची
लट्-पट्, खट्-पट्, झट्-पट्, गड्-वड्, झमा-झमी, भच्चा-भच्ची

१९- अनुकारवाची + तद्भव = अनुकारवाची—तद्भव, यथा-
बड़बड़चन्द
२०- तद्भव + अनुकारवाची = तद्भव—अनुकारवाची, यथा-
अणत्रण
२१- अर्द्धतद्भव + अनुकारवाची = अर्द्ध तद्भव—अनुकारवाची, यथा-
गूंधबूंध
२२- देशज + अनुकारवाची = देशज—अनुकारवाची, यथा-
लातघमूका
२३- देशज + देशज = देशज, यथा-
(क) कचोली-समोसों,
(ख) होंडा होडी
(ग) सगों-सगों, डरती-डरती
(घ) झगलों-टोपी
२४- देशज + तद्भव = देशज—तद्भव, यथा-
सागी नणंद, व्याओतर-कुतड़ी, गेंलजाती
२५- देशज + अर्द्धतद्भव = देशज—अर्द्ध तद्भव, यथा-
वापखांवणी, होड्यों मारनी
२६- तद्भव + देशज = तद्भव—देशज, यथा-
वासणों-समोसों
२७- अर्द्ध तत्सम + देशज = अर्द्धतत्सम—देशज, यथा-
नीचों-गुंभारियों
२८- अर्द्ध तद्भव + विदेशी = (अंग्रेजी) = अर्द्ध तद्भव—विदेशी, यथा-
गलावों टकमेठी
२९- देशज + विदेशी = देशज—विदेशी, यथा-
भरथियों-ग्लास
३०- विदेशी + तद्भव = विदेशी—तद्भव, यथा-
गुलों मभाई

३१– अर्द्ध तत्सम + विदेशी (अरबी) = अर्द्धतत्सम – विदेशी, यथा –
लम्बावाल़

३२– तद्भव + विदेशी=तद्भव–विदेशी, यथा –
सोंवरीसूरत,

३३– विदेशी+विदेशी=विदेशी, यथा—
मीयां-बीबी, मीनाबजार, मोटर-कार

३४– अर्द्ध तद्भव+निरर्थक = अर्द्धतद्भव-निरर्थक, यथा—
तल़ाइ-वल़ाई, गाल़-वाल़

३५– निरर्थक+निरर्थक = निरर्थक, यथा –
झावड़-झूली, छापड़-छूलों, वड़-वटन्द

३६– देशज+निरर्थक=देशज-निरर्थक, यथा—
रवड़ी-ववड़ी

मैंने उपर्युक्त विश्लेपण में वर्णनात्मक आधार पर बीकानेरी के उपलब्ध समस्त संज्ञा-पदों को प्रस्तुत किया है। बीकानेरी में इसके अतिरिक्त अन्य समस्त संज्ञा-पद भी उपलब्ध हो सकते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप उनके स्रोत मूलक विश्लेपण के अन्तर्गत अन्य और वर्ग भी प्रस्तुत किये जा सकते हैं। शब्दों की मूल प्रवृत्ति का विश्लेपण वितरण एवं वैसादृश्य के आधार पर साम्य वैषम्य स्थापित करते हुए किया गया हैं। इनको कई स्रोतों में विभक्त किया गया है। यहां यह स्पष्ट कर देना अप्रासंगिक न होगा कि उक्त विवेचन स्रोत की ओर संकेत तो करता ही है, समस्त रचना पदों के स्वरूप पर भी प्रकाश डालता है।

२. २. १. ५. समस्त-संज्ञा-पद रचना प्रक्रिया

२. २. १. ५. १. प्रथम पद संज्ञा वाले समस्त-संज्ञा-पद

इस शीर्पक के अन्तर्गत रूप रचना की दृष्टि से समस्त संज्ञा-पदों का विश्लेपण प्रस्तुत किया जा रहा है। इसलिए समस्त संज्ञा-पदों की दोनों इकाइयों के व्याकरणिक रूप को केन्द्र विन्दु के रूप में अपनाया गया है। 'वितरण एवं वैसादृश्य' के आधार पर इस प्रकार के वर्गीकरण में निम्न उपलब्धियां हुई हैं। वर्गीकरण में प्रथम पद संज्ञा को केन्द्र विन्दु वनाया गया है।

१. घरबार, फलफूल, सलालोढ़ों, देईदेवता, दूवपूत, ऊंदरों-ऊंदरी, गोंड-भात, रोटी-बाटी, लूण-मरच, झगलों टोपी, होली-दीयाली,

उपर्युक्त समस्त संज्ञा-पदों पर दृष्टि डालने से विदित होता है कि इन समस्त संज्ञा-पदों के दोनों पद संज्ञा है। संयोजक द्वारा दोनों का मेल एवं संयोजक का लोप हुआ है। यह द्विपद प्रधान समस्त संज्ञा-पद हैं।

उपर्युक्त समस्त संज्ञा-पदों में दोनों शब्दों की प्रधानता के कारण लिंग-वचन के रूपों में स्वतंत्रता है। जहा पर दोनों शब्दों में लिंग भेद है वहाँ क्रिया के साथ अन्वय करने पर क्रिया बहुवचन एवं पुल्लिग होती है। इनके समीपी संघटकों में परिवर्तन भी सम्भव है। कुछ इस प्रकार के भी समस्त-संज्ञा पद हैं जो संयोजकों द्वारा एक होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से लाक्षणिकता को प्राप्त कर मुहावरों का रूप धारण कर लेते हैं। उनमें शब्द क्रम परिवर्तन असंभव प्रतीत होता है। सामाजिक परम्परानुगत प्रयोग प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप भी शब्दों के क्रम में परिवर्तन सम्भव नहीं होता क्योंकि इस प्रकार के शब्दों का नाद सौन्दर्य की दृष्टि से विशेष महत्त्व है।

२. खटपट, लटपट, रमक-झमक आदि।

उक्त सभी समस्त संज्ञा-पद अनुकारवाची हैं। यद्यपि प्रथम पद के समीपी संघटकों में प्रथम इकाई नाम शब्द है पर यहां इसका प्रयोग ध्वनि अनुकरण के रूप में हुआ है। द्वितीय समस्त संज्ञा-पद की इकाईयां अनुकरणात्मक हैं। इन समस्त पदों का सम्बन्ध संयोजक 'और' के द्वारा अभिव्यक्त हुआ है जो यहां पर लुप्त है।

३-४ बालगोठियों, दीनानाथ, नंदलाल, ०वेदव्यास, भोलानाथ, रुपचन्द आदि में समस्त संज्ञा-पद व्यक्ति वाचक रूप धारण करते हैं। इनमें कुछ पद विशेषण-विशेष्य संबंध बोध कराते हैं, यथा भोलानाथ आदि। कुछ शब्द भेदक-भेद्य संबंध के बोधक हैं यथा बालगोठियों, नंदलाल, आदि। ०वेदव्यास शब्द व्यक्ति वाची होते हुए भी 'और' संयोजक के द्वारा भिन्न इकाईयों से निर्मित समास बन सकता है। इस प्रकार विशेषण-विशेष्य सम्बन्ध सूचक पद में शब्द १ + शब्द २ = शब्द ३ हैं। भेद व भेद्य सम्बन्ध बोध कराते हुए समस्त पदों

की प्रथम इकाईयाँ विशेषण का वोध कराती हैं, यद्यपि ये दोनों पद अपने मूल रूप में संज्ञा-पद हैं तथापि दोनों ही पद विशेषण-विशेष्य के सम्बन्ध का वोध कराते हैं। रूपचन्द शब्द की प्रथम इकाई विशेषण है। पर अर्थ की दृष्टि से ये दोनों शब्द मिल कर एक हो गये हैं, जो व्यक्तिवाची संज्ञा का रूप धारण कर लेते हैं।

५. ०वैकुण्ठ०वास, सरग०वास

दोनों पद 'में' सम्बन्ध सूचक के द्वारा समस्तता को प्राप्त करते हैं, यहां पर इसका लोप हो गया हैं। प्रथम समस्त पद की प्रथम इकाई द्वितीय इकाई की मर्यादा बोध कराती है। अतः इसका विश्लेषण विशेषण-विशेष्य के अनुरूप है।

६. मरतलोक, मायाजाल, रोंमदुवाई, गणपत, मनख-जमारों,

सभी समस्त पद भेदक-भेद्य सम्बन्ध वोधक हैं। जिन समासों में द्वितीय पद प्रधान हैं, उनके लिंग-वचन का निर्धारण एवं क्रिया का सम्वन्ध द्वितीय पद के अनुसार ही होता हैं। इस प्रकार के योग को व्यधिकरण के नाम से अभिहित किया है।

७. कोंडी-कोंडी, मनख-मनख, लुगायों-लुगायों आदि।

उपर्युक्त समस्त पद द्विरुक्ति प्रधान हैं। अतः प्रथम पद की प्रधानता है। इकाई संज्ञा होते हुए भी विशेषण का कार्य करती है अन्य सभी प्रकार के सम्बन्ध प्रथम पद की प्रथम इकाई के अनुसार होते हैं।

८. मोटरकार आदि।

द्विरुक्ति प्रधान समस्त सज्ञा-पद होते हुए भी ध्वनि विकार उत्पन्न हुआ है। अर्थ में अतिशयता एवं विस्तार के आवेग की गति का वोध होता है। अन्य सभी प्रकार के संबंधों का विश्लेषण द्विरुक्ति प्रधान समस्त पदों के अनुरूप किया जा सकता है।

९. होडा-होडी, झमा-झमी, रोल-गदोल आदि।

दोनों पद संज्ञा वाची होते हुए भी अन्तिम पद निरर्थकता को प्राप्त कर लेता है अतः इसके सभी प्रकार के सम्बन्धों का विश्लेपण द्विरुक्ति प्रधान समस्त पदों के अनुसार व्यंजित किया जा सकता है।

(ख) संज्ञा+कर्तृवाचक संज्ञा

रंगरसियों, गऊ-घाती, मनख-मारणों आदि।

उक्त समस्त संज्ञा-पद भेद्य-भेदक सम्बन्ध बोधक हैं। रूप रचना की दृष्टि से इनका सम्बन्ध बोध इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—शब्द १+ शब्द २ =शब्द १-२। व्याकरणिक संबंध बोध कराने के सन्दर्भ में इस सूत्र का परिवर्तन शब्द १+ शब्द २ = शब्द ३ होगा।

(ग) संज्ञा+कृदन्त

१. जगतारण, ०गरधारी, रॉड खावणी, बापखावणी

इस वर्ग के सभी पद भेद्य-भेदक संबंध बोधक हैं। इनका व्युत्पन्न रूप कर्तृवाचक है। रूपात्मक दृष्टि से इनका सम्बन्ध शब्द १+शब्द २=शब्द १ से व्यक्त किया जा सकता है। व्याकरणिक सम्बन्ध बोध कराते समय इस सूत्र का रूप दूसरे प्रकार का होगा। कहीं-कहीं पर तो यह द्वितीय पद प्रधान भी लक्षित होता है।

२. हथलेवों, देवभावना आदि।

इस वर्ग में समस्त-संज्ञा-पद कर्तृवाचक संज्ञा का रूप धारण कर सामान्य संज्ञा का रूप धारण करते हैं। सभी प्रकार के सम्बन्धों का विश्लेषण विशेष्य वाची समस्त पदों के अनुरूप व्यक्त किया जा सकता है।

(घ) संज्ञा+विशेषण

घनस्यॉम

इस वर्ग में संज्ञा पद विशेपण-विशेष्य संबंध बोधक है किन्तु विशेष्य-विशेपण संबंध बोध कराने के कारण पृथक वर्ग में रखे गये हैं।

(ङ) संज्ञा+निरर्थक शब्द

१. रावड़ी-वावड़ी, पोँणी-वोँणी, पोथी-वोथी,

ये द्विरुक्ति प्रधान पद हैं जिसका द्वितीय पद रूप एवं अर्थ दोनों दृष्टियों से निरर्थक है ।

२. धक्का-धक्की

ध्वन्यात्मकता के कारण निरर्थकता की व्याप्ति हो गई है ।

(च) संज्ञा+अव्यय

होठोँ-वार (वाहर) आदि ।

इस वर्ग में भेद्य-भेदक संबंध बोधक समस्त-संज्ञा-पद की रचना हुई है ।

२. २. १. ५. २. प्रथम पद विशेषण वाले समस्त-संज्ञा-पद

रूपात्मक दृष्टि से जिन समस्त पदों का यहाँ विश्लेषण किया जा रहा है उनका प्रथम पद विशेषण है तथा द्वितीय पद इतर व्याकरणिक रूप लिए हुए हैं । इतर व्याकरणिक रूपों के योग से समस्त-पद का प्रयोग संज्ञा रूप में हुआ है । अतः जो समस्त पद विशेषण का रूप धारण किये हुए हैं, यहाँ उनका प्रयोग संज्ञावाची पद में हुआ है । इसलिए इन्हें इस वर्ग में स्थान दिया है । इनका संबंध निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया है –

विशेषण+संज्ञा = संज्ञा

एकोँनी, दोवोँनी, बउरूपीयोँ, चोँवारोँ

उक्त समस्त-पदों में प्रयुक्त शब्दों में विशेषण-विशेष्य संबंध हैं किन्तु पद संज्ञा बने हुए हैं। केवल एक या दो उदाहरण देकर हम स्पष्ट कर सकते हैं ।

'एकोँनी'

यहां 'एक' विशेषण है और 'ओँनी' संज्ञा, परन्तु 'एकोँनी' मुद्रा

विशेष के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द संज्ञा है । (आजकल इस शब्द का प्रयोग भी कम प्रचलित है क्योंकि यह मुद्रा प्रयोग में नहीं आती । अब प्रायः बोली में 'दसपाई' (दस नये पैसे) शब्द का प्रयोग प्रचलित है) 'बउरूपीयों" में बउ (बहु) रूप (सूरत-शक्ल) का वाचक है। इसमें एक पद विशेषण व दूसरा विशेष्य है, पर 'बउरूपीयों" बीकानेरी में एक व्यक्ति विशेष होता है जो अनेक वेश व रूप धारण करता है तथा उत्सवों पर मनोरंजन का साधन बनता है। यह शब्द 'चालाक' का भी वाचक बन रहा है । इसी प्रकार अन्य पद भी विशेषण विशेष्य की परिधि में अपने समस्त रूप में संज्ञा ही बने हुए हैं।

अध्याय/३

सर्वनाम–पद

३. १. सामान्य विवेचन

सर्वनाम उस विकारी शब्द को कहते हैं जो पूर्वापर सम्बन्ध से किसी भी संज्ञा के वदले में आता है ।[1]

जो सवके नाम वन जाते हैं, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं । मैं, तुम, यह, वह आदि शब्द 'सर्वनाम' हैं, ये किसी एक ही में संकेतित नहीं हैं ।[2]

व्याकरण शास्त्र में नाम-स्वतन्त्र रूपाँशों का विभाजन किया गया है । 'नाम' शब्दों की व्याप्ति मर्यादित करने एवं इतर स्थानापन्न रहने वाले स्वतंत्र रूपाँशों को प्रतिनिधित्व के अनुसार पृथक्-पृथक् वर्गों में स्थान दिया गया है । इसलिए जो भी शब्द स्वतंत्र रूपाँशों के स्थानापन्न हैं, वे सभी इसी वर्ग के अन्तर्गत आ जाते हैं । पुनर्विभाजन का कारण भेदकता वोधक सीमा स्थानापन्नता है । इस प्रकार उन स्थानापन्न रूपांशों का प्रयोग भी होने लगा जो केवल नाम रूपों के स्थान पर पुनरुक्ति के द्वारा होने वाले दोषों और भाषा की शिथिलता व हीनता दूर करने में सक्षम थे । ये नाम स्वतन्त्र रूपांशों के संवंधित और उसी के स्थानापन्न होने के कारण सहज ही सर्वनाम की अभिधा पा गये ।

१— श्री कामता प्रसाद गुरू : हिन्दी व्याकरण, पृ० ७२

२— किशोरीदास वाजपेयी : शब्दानुशासन, पृ० १७३

सर्वादीनि सर्वनामानि के अनुसार संस्कृत में सर्व आदि शब्दों को ही सर्वनाम कहते हैं । संस्कृत की इसी परम्परा के आधार पर हिन्दी में भी संज्ञा के स्थानापन्न शब्दों को ही, जिनका रूपान्तर संज्ञा के समान होता है, 'सर्वनाम' की संज्ञा दी गई है । परन्तु संज्ञा की अपेक्षा सर्वनाम की एक विलक्षणता यह है कि जहां संज्ञा से उसी वस्तु का वोध होता है जिसका वह नाम होता है,वहां 'सर्वनाम' से पूर्वापर सम्वन्ध के अनुसार किसी भी वस्तु का वोध हो सकता है । साथ ही सर्वनामों के प्रयोग से मुख्य रूप से दो लाभ हुए हैं ।

१– इनसे भाषागत शैथिल्य दूर हो गया ।
२– पुनरुक्ति दोष से मुक्ति मिल गई ।

यहां यह उल्लेख कर देना अप्रासंगिक न होगा कि बीकानेरी में शब्द-भंडार के स्रोत अनेक रहे हैं, पर वहां से केवल नामवाची या क्रिया शब्दों को ही ग्रहण किया गया है । सर्वनाम स्वतन्त्र रूपांशों का ग्रहण न तो अन्य भाषाओं से संभव है और न अनुकारता के आधार पर उनकी नव शब्द सृष्टि ही संभव है । सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांश तो बीकानेरी में केवल पूर्व-परम्परा से ही उपलब्ध हुए हैं । बीकानेरी की ध्वनि एवं रूप की दृष्टि से अवश्य इनमें थोड़ा बहुत विकार उपस्थित हुआ है ।

३. २. बीकानेरी सर्वनामों का वर्गीकरण

बीकानेरी में प्रयुक्त होने वाले उपलब्ध सार्वनामिक स्वतंत्र रूपाँशों को हम निम्न वर्गों के अन्तर्गत विभाजित कर सकते हैं –

१– प्रथम वर्ग :	पुरुष वाचक सर्वनाम	१. उत्तम पुरुष (हूं, म्हे)
		२. मध्यम पुरुष (तूं थे)
२– द्वितीय वर्ग :	१–संकेत वाचक	१. निकटवर्ती (ओं, आ)
		२. दूरवर्ती (वों वा)
	२– सम्वन्ध वाचक	(जको, जके)
	३– नित्य सम्वन्ध वाचक	(—)

४. प्रश्न वाचक (कूंण)
५. अनिश्चय वाचक (कोई)
६. आदर वाचक एवं निज वाचक (आप)
७. सर्व वाचक (सब)

३— तृतीय वर्ग : सार्वनामिक समस्त-पद (हूं-थूं, म्हे- थे)

३. २. १. प्रथम वर्ग : पुरुष वाचक सर्वनाम

अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के समान बीकानेरी में भी पुरुष-वाची सर्वनामों के केवल दो ही रूप उपलब्ध होते हैं —

१. उत्तम पुरुष
२. मध्यम पुरुष

अन्य पुरुष में निकटवर्ती एवं दूरवर्ती निश्चय वाचक सर्वनाम ही प्रयुक्त होते हैं।

३. २. १. १. उत्तम पुरुष

'हूं' बीकानेरी में उत्तम पुरुष सर्वनाम के एक वचन का अविकारी रूप है। बहुवचन में इसके दो रूप उपलब्ध होते हैं —

१. 'म्हे' श्रोतृ निरपेक्ष
२. आपों श्रोतृ सापेक्ष

बीकानेरी में प्रयुक्त होने वाले उपलब्ध उत्तम पुरुष सर्वनामों की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

	एकवचन	बहुवचन (श्रोतृ निरपेक्ष)	बहुवचन (श्रोतृ सापेक्ष)
कर्त्ता	हूं, म्हें	म्हे, म्हों	आपों
कर्म	मनें	म्हों नें	आपों नें
करण	म्हें सूं	म्हों सूं	आपों सूं

सम्प्रदान	म्हारैं	म्हौंरैं	आपौंरैं
अपादान	म्हैंसूं	म्हौंसूं	आपौंसूं
संवन्ध	म्हारी, रौं, रा	म्हौंरौं, म्हौंरा	आपौंरी, आपौंरौं आपौंरा
अधिकरण	म्हैंमें	म्हौंमें	आपौंमें

उत्तम पुरुष सर्वनाम के उपर्युक्त रूपों पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि सर्वनामों के विभक्ति प्रयोग की दृष्टि से दो रूप उपलब्ध होते हैं—

१– मूल रूप

२– विकारी रूप

मूलरूप से मेरा अभिप्राय उन सार्वनामिक रूपों से हैं जो वाक्यान्तर्गत किसी परसर्ग को ग्रहण नहीं करते हैं एवं विकारी रूप से तात्पर्य उन सार्वनामिक रूपों से है जो वाक्य में सदैव परसर्ग ग्रहण करते हैं। इस आधार पर उत्तम पुरुष सर्वनामों के मूल एवं विकारी रूपों व प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

			एकवचन	बहुवचन
(१)	(क)	मूल रुप	हूं	म्हे
	(ख)	विकारी रुप	म्हैं	म्हौं
(२)	(क)	मू० आ० वि० प्र०	/-ऊं/	/-ए/
	(ख)	ति० आ० वि० प्र०	/ -एँ,-अँ /	/-ओँ/

उपर्युक्त सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांशों के विश्लेषण के परिणाम स्वरूप हमें विदित होगा कि इनके अन्तर्गत /ऊं/, /म्-अँ/, /ए/, /ओं/, आदि स्वरों का योग स्पष्ट लक्षित होता है। इन प्रत्ययों के विसर्जन के उपरान्त हमारे समक्ष उत्तम पुरुष सर्वनाम का केन्द्रक रूप / ह् / सामने आता है। अतः / ह् / ही केन्द्रक रूप है। उत्तम पुरुष वाचक सार्वनामिक स्वतंत्र रूपाँशों में /ऊं/ एवं /ए/ मू. आ. वि. प्र. है एवं /ऐं/ एवं /ओं/ ति. आ. वि. प्र. है। मूल एवं तिर्यक आधार वि० प्रत्ययों में अनुनासिकता का आगमन /म्/ ध्वनि के कारण हुआ है। कभी-कभी दीर्घीकरण या ह्रस्वीकरण की प्रवृत्ति भी यहां पर कार्य करती

हुई दृष्टिगोचर होती है। बीकानेरी में भी आदर सूचकता का बोध कराने हेतु एक वचन में ही बहुवचन के रूपों का प्रयोग होता है ।

उपर्युक्त सर्वनामों (श्रोतृ निरपेक्ष) के रूपों पर दृष्टिपात करें तो स्पष्ट होगा कि कर्ता कारक एक वचन 'हूं' के अतिरिक्त शेष सभी रूपों में 'म्' विद्यमान है। अतः यदि यह कल्पना की जाय कि किसी समय बोली में कर्त्ता कारक एक वचन का रूप 'म्हूं' रहा होगा (जैसा कि मारवाड़ी की अन्य बोलियों में है) और 'हूं' पर बल अधिक होने से 'म्' का लोप हो गया होगा तो उत्तम पुरुष सर्वनाम का केन्द्रक रूप / म् / भी माना जा सकता है।

उत्तम पुरुष (श्रोतृ सापेक्ष) रूप में भी उक्त प्रत्ययों का ही योग लक्षित होता है। अतः इन प्रत्ययों का विसर्जन करने के उपरान्त हमारे समक्ष 'आप्' अवशिष्ट रहता है। यदि / प् / को श्रोतृ सापेक्ष बोधक मानलें तो इसका केन्द्रक रूप / आ / स्वीकार किया जा सकता है ।

३. २. १. २. मध्यम पुरुष

मध्यम पुरुष में प्रयुक्त सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांशों के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

	एक वचन	बहुवचन
कर्त्ता	तूं, थूं, तें,थें	थे, थों
कर्म	तनें, थनें	थोंनें
करण	थेंसूं	थोंसूं
सम्प्रदान	थारें	थोंरें
अपादान	थेंसूं	थोंसूं
सम्बन्ध	थारों थारी, थारा	थोंरों, थोंरी,थोंरा
अधिकरण	तेंमें, थेंमें	थोंमें

मध्यम पुरुष सर्वनाम के मूल एवं विकारी रूपों व प्रत्ययों का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

		एकवचन	बहुवचन
(१)	(क) मूल रूप	तूं, थूं	थे

(ख) विकारी रूप ते"थे" थों

(२) (क) मू० आ० वि० प्र० /-ऊं / /-ए /

(ख) ति० आ० वि० प्र० /-ए"-,अ"/ /-ओं"/

उपर्युक्त सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपांशों पर दृष्टिपात करने पर विदित होगा कि इन रूपों में भी उत्तम पुरुष के रूपों के अनुरूप ही प्रत्ययों का योग मिलता है। अतः इनके विसर्जन के उपरान्त हमारे समक्ष केवल / त् /, / थ् / ही सार्वनामिक केन्द्रक रूप उपलब्ध होता है। / थ् /, / त् /, का ही महाप्राण उच्चरित रूप है। अतः मध्यम पुरुष का सार्वनामिक केन्द्रक रूप / त् / ही माना जा सकता है। मूल एवं तिर्यक आ० वि० प्र० भी उत्तम पुरुष के अनुरूप ही है अतः पुनरुक्ति नहीं की गई है।मध्यम पुरुष सर्वनामों के मूल एवं तिर्यक आधार विधायक प्रत्ययों में भी अनुनासिकता प्रतिबंबित है । इसका मुख्य कारण उत्तम पुरुष सर्वनामों का अनुकरण एवं सरली करण की प्रवृत्ति है ।

३. २. २. द्वितीय वर्ग-संकेतवाचक (निश्चय वाचक)सर्वनाम

हिन्दी में अन्य पुरुष का काम निश्चय वाचक सर्वनामों से लिया जाता है।[1] बीकानेरी में भी अन्य पुरुष का काम निश्चयवाचक सर्वनामों से लिया जाता है तथा निश्चय वाचक सर्वनामों के दो ही रूप उपलब्ध होते हैं।

(१) निकटवर्ती ओं

(२) दूरवर्ती बों

३. २. २. १. निकटवर्ती

बीकानेरी में निकटवर्ती सर्वनाम 'ओं' के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	ओं (पु०), आ (स्त्री०), ईयें	अ , ईयों
कर्म	ईनें, ईयेंनें	ईयोंनें
करण	ईसूं, ईयेंसूं	ईयोंसूं
सम्प्रदान	ईरें, ईयेंरें	ईयोंरें
अपादान	ईसूं, ईयेंसूं	ईयोंसूं

१— धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० २०३

सम्बन्ध	ईरो (पु०), ईरी, (स्त्री०), ईरा ईयेरों, ईयेरी, ईयेरा	ईयोंरों, ईयोंरी,(स्त्री०) ईयोंरा
अधिकरण	ईमें, ईयेमें	ईयोंमें

३. २. २. २. दूरवर्ती

वीकानेरी में दूरवर्ती सर्वनाम 'वों' के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं —

	एक वचन	बहुवचन
कर्त्ता	वों (पु०), वा (स्त्री०)	वे, वों
कर्म	वेंनें	वोंनें
करण	वेंसूं	वोंसूं
सम्प्रदान	वेंरें	वोंरें
अपादान	वेंसूं	वोंसूं
सम्बन्ध	वेंरों, वेंरी, वेंरा	वोंरों,वोंरी, वोंरा
अधिकरण	वेंमें	वोंमें

उपर्युक्त सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपांशों के अन्तर्गत संयुक्त कारकों का बोध कराने वाले प्रत्ययों के विसर्जन के उपरान्त दूरवर्ती एवं निकटवर्ती सर्वनामों के मूल एवं विकारी रूपों एवं प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

निकटवर्ती

	एक वचन	बहुवचन
१. मूल रूप	ओं (पु०) आ (स्त्री०)	अ
२. विकारी रूप	ईयें	ईयों

दूरवर्ती

	एकवचन	बहुवचन
१. मूल रूप	वों (पु०) वा (स्त्री०)	वे
२. विकारी रूप	वें	वों

१. मू०आ० वि० प्र० /-ओँ/ (पु०) /-आ/ (स्त्री०) /-ए/
२. ति० आ० वि० प्र० /-एँ/ /-ओँ

निकटवर्ती सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपाँशों के विकारी रूपों का अन्वेषण करने पर विदित होगा कि ये रूपांश /-ई/ के साथ लिंग-वचन प्रत्यय /य/ के संयोग से निष्पन्न हुए हैं। रूपों में /-ई/ से परे स्वर होने से बीच में /य्/ श्रुति का आगम हुआ है। /य्/ के विसर्जन से विकारी रूपों में हमारे समक्ष /ई/ अवशिष्ट रहता है। अतः /ई/ को यदि हम तिर्यक् विधायक स्वीकार करलें तो मूल रूप में निकटवर्ती सार्वनामिक रूपाँशों का केन्द्रक रूप /अ/ ही अवशिष्ट रहता है। अतः /अ/ केन्द्रक रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

दूरवर्ती सार्वनामिक रूपाँशों में /ओँ/, /आ/ /एँ/, /ए/ /ओँ/ आदि स्वरों का संयोग मूल एवं विकारी रूपों के साथ हुआ है। इनके विसर्जन के उपरान्त हमारे समक्ष केवल /व्/अवशिष्ट रहता है। अतः दूरवर्ती सार्वनामिक केन्द्रक रूप /व्/ स्वीकार किया जा सकता है।

निकटवर्ती एवं दूरवर्ती दोनों ही सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांशों में /-ओँ/ /-आ/, /-आ/, /-ए/ मू. आ. वि. प्र. एवं /-एँ/ एवं /ओँ/ ति. आ. वि. प्रत्ययों का प्रयोग सम रूप से हुआ है।

३. २. २. ३. द्वितीय वर्ग : सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

बीकानेरी में सम्बन्ध वाचक सर्वनामों के उपलब्ध रूपों की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है —

	पुल्लिग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	जकोँ,जकेँ	जका,जके,जकोँ	जकी	जक्योँ
कर्म	जकेँनेँ	जकोँनेँ	जकीनेँ	जक्योँनेँ
करण	जकेँसूं	जकोँसूं	जकीसूं	जक्योँसूं
सम्प्रदान	जकेँरेँ	जकोँरेँ	जकीरेँ	जक्योँरेँ
अपादान	जकेँसूं	जकोँसूं	जकीसूं	जक्योँसूं
सम्बन्ध	जकेँरोँ	जकोँरा	जकीरी	जक्योँरी
अधिकरण	जकेँमेँ	जकोँमेँ	जकीमेँ	जक्योँमेँ

सम्बन्ध वाचक सर्वनाम के उपलब्ध रूपों के कारक प्रत्ययों को वियुक्त करने पर इसके मूल व विकारी रूपों एवं प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

		एकवचन		बहुवचन	
(१)	मूल रूप	जकों (पु०)	जकी (स्त्री०)	जके (पु०)	जक्यों (स्त्री०)
(२)	विकारी रूप	जकें		जकों (पु०)	जक्यों (स्त्री०)
(१)	मू०आ०वि०प्र०	/-ओं/(पु०)	/-आ/ (स्त्री०)	/-ए/ (पु०)	/-ओं/स्त्री०
(२)	ति०आ०वि०प्र०	/-एँ/		/-ओं/	

सम्बन्ध वाचक सर्वनामों के उक्त रूपों पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि इनके अन्तर्गत /-आ/, /-ई/, /-एँ/, /-ए/, /-ओं/, /-ओं/ आवद्ध अंशों का योग मूल व विकारी रूपों में हुआ है एवं स्त्रीलिंग बहुवचन में -ओं से पूर्व /-य/ श्रुति का आगम हुआ है । इनके विसर्जन के उपरात सम्बन्ध बोधक सार्वनामिक केन्द्रक रूप /जक्/ अवशिष्ट रहता है । /क्/ को सम्बन्ध बोधक प्रत्यय की संज्ञा दी जा सकती है । अतः सम्बन्ध बोधक सर्वनाम का केन्द्रक रूप /ज्/ माना जा सकता है । सम्बन्ध वाचक सर्वनाम में /-ओं/ (पु०) /-ई/ (स्त्री०) एवं /-ए/, /-आ/ (बहु०) मू. आ. वि. प्रत्यय है एवं /-एँ/, व /-अं/ /-ओं/ ति. आ. वि. प्रत्यय हैं ।

सूचना –

डॉ० कन्हैया लाल शर्मा ने सम्बन्ध वाचक सर्वनाम 'जकों' में 'ज्' को केन्द्रक रूप मानकर क्' को स्वार्थक प्रत्यय माना है । इसका कारण बताते इन्होंने लिखा है कि राजस्थानी की अन्य अधिकांश बोलियों में जो, जें, जीं, आदि रूप ही उपलब्ध होते हैं केवल बीकानेरी में ही यह /क/ उपलब्ध होता है अतः /क्/ स्वार्थक प्रत्यय ही माना जायेगा ।[1]

३. २. २. ४. नित्य सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

बीकानेरी में नित्य सम्बन्ध वाचक सर्वनाम का स्वतंत्र रूप उपलब्ध

---

१ — डॉ०कन्हैयालाल शर्मा : वीर सतसई की भाषा पृ० २१

नहीं होता उसके स्थान पर दूरवर्ती निश्चय वाचक सर्वनाम 'वो' का ही प्रयोग उपलब्ध होता है। यथा –

'जको अयो थो वो गयो'
'जो आया था वह गया'
'जको पढ़सी वो सुख पासी'
'जो पढ़ेगा वह सुख पायेगा'

३. २. २. ५. द्वितीय वर्ग : प्रश्नवाचक सर्वनाम

बीकानेरी में प्रश्नवाचक सर्वनाम के रूप में 'कूंण' रूप उपलब्ध होता है। इसके अतिरिक्त बोली में कंई, क्या, क्यों, कंयू, आदि रूप उपलब्ध होते हैं।

'कूंण रूप की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है–

'कूंण'

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कूंण	कूंण
कर्म	कैनें	कैनें
करण	कैसूं	कैसूं
सम्प्रदान	कैरें	कैरें
अपादान	कैसूं	कैसूं
सम्बन्ध	कैरो, कैरी (स्त्री०)	कैरा, रो, री
अधिकरण	कैमें	कैमें

उपर्युक्त प्रश्न वाचक सर्वनाम के उपलब्ध रूपों के आधार पर मूल एवं विकारी रूपों व प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

	एकवचन	बहुवचन
१. मूल रूप	कूंण	–
२. विकारी रूप	कैण	–

	एकवचन	बहुवचन
१. मू० आ० वि० प्र०	/-ऊं/	–
२. ति० आ० वि० प्र०	/-एँ/, /-अें/	–

उपर्युक्त सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांशों में ऊं, एँ, -अें आदि प्रत्ययों का योग हुआ है । इनके विसर्जन के उपरान्त हमारे समक्ष 'कण्' अवशिष्ट रहता है । यदि 'ण्' को व्यक्ति बोधक मान कर इसका विसर्जन कर दिया जाय तो हमारे समक्ष /क्/ केन्द्रक रूप में रह जाता हैं । इस प्रकार क् को प्रश्नवाचक सार्वनामिक केन्द्रक रूप में स्वीकार किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त बोली में कंई,क्या, क्यों, क्यूं, आदि रूप भी उपलब्ध होते हैं जो स्पष्टतः हिन्दी के प्रश्नवाचक सर्वनाम 'क्या' के ही विकृत व विकसित रूप है । 'कंई' रूप बोली में वस्तु वाचक सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त होता है ।

प्रश्नवाचक सर्वनामों में /-ऊं/ मूल आधार विधायक प्रत्यय एवं /-एँ/ अथवा अें ति० आ० वि० प्र० का प्रयोग हुआ है ।

३. २. २. ६. द्वितीय वर्ग : अनिश्चय वाचक सर्वनाम

बीकानेरी में प्रयुक्त अनिश्चय वाचक सर्वनामों के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं ।

'कोई'

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	कोई	कोई
कर्म	कईनें	कईनें
करण	कईसूं	कईसूं
सम्प्रदान	कईरें	कईरें
अपादान	कईसूं	कईसूं
सम्बन्ध	कईरों, रा, री	कईरों, रा, री
अधिकरण	कईमें	कईमें

इनके कारक बोधक प्रत्ययों के विसर्जन के उपरान्त उपलब्ध मूल एवं विकारी रूपों व प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता हैं ।

		एकवचन	बहुवचन
(१)	(क) मूल रूप	कोइ	—
	(ख) विकारी रूप	कई	—
(२)	(क) मू० आ० वि प्र० / –ओ/		—
	(ख) ति० आ० वि० प्र० /– अ /		—

अनिश्चय वाचक सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांशों का विश्लेषण करने के उपरान्त हम /-ओ/-को व्यक्ति बोधक एव /अ/ को तिर्यक विधायक के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। इनके विसर्जन के उपरान्त हमें / क् / अनिश्चय वाचक सार्वनामिक केन्द्रक रूप उपलब्ध होता है। मू० एवं ति० आ० वि० प्र० के रूप में /-ओ/ एवं /–अ/ का योग क्रमशः दृष्टिगत होता हो।

अनिश्चय वाचक सर्वनामों पर दृष्टिपात करने पर विदित होगा कि इसके मूल रूप में हिन्दी के समान /कोई/ रूप का प्रयोग हुआ है पर विकारी रूप में हिन्दी के समान /किसी/ का प्रयोग नहीं हुआ है इसका मुख्य कारण यह है कि बोली में अनिश्चय वाचक सर्वनाम के विकारी रूपों के दो रूप उपलब्ध हैं– /कई,/ कोई/ पर अधिक प्रचालित 'कई' ही है। यदि /कोई/ रूप को ही विकारी रूप में स्वीकार किया जाय तो मूल एवं विकारी रूपों में भेदकता हेतु /-०/ विभक्ति की कल्पना करनी होगी।

३. २.२.७. द्वितीय वर्ग:आदर वाचक एवं निज वाचक सर्वनाम

बीकानेरी में आदर वाचक सर्वनाम 'आप' के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

'आप'

	एक वचन	बहुवचन
कर्त्ता	आप	आप

कर्म	आपनें	आपनें
करण	आपनूं	आपनूं
सम्प्रदान	आपरें	आपरें
अपादान	आपनूं	आपनूं
सम्बन्ध	आपरों, री, रा	आपरों, री, रा
अधिकरण	आपनें	आपमें

उक्त सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांशों पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि आदर वाचक सर्वनाम के मूल एवं विकारी दोनों रूपों के एकवचन एवं बहुवचन में ' आप ' शब्द ही प्रयुक्त हुआ है। विकारी ' आपनें ' ' आपनूं, आपरों ' आदि रूपों में मूल रूप ' आप ' का ही प्रयोग हुआ है, जिसमें नें, नूं, रों आदि परसर्ग हैं। अतः इनके स्वरूप निर्धारण हेतु /-० / निर्दिष्ट विभक्ति की कल्पना की जा सकती है। तत्परिणाम स्वरूप हमें ये विकारी एवं मूल रूप उपलब्ध हुए हैं—

		एकवचन	बहुवचन
(१)	(क) मूल रूप	आप	आप
	(ख) विकारी रूप	आप	आप
(२)	मू० एवं वि० आ० वि० प्र०		। -० ।

इन रूपों के विश्लेषण के उपरान्त हमें /आ/ केन्द्रक रूप में उपलब्ध होता है एवं / प / को आदर बोधक की संज्ञा दी जा सकती है। बीकानेरी में निजवाचक सर्वनाम के रूप में 'आप' का ही प्रयोग उपलब्ध होता है। परन्तु ' आप ' का बोली में स्वतंत्र प्रयोग उपलब्ध नहीं होता है। आप का प्रयोग सदा सर्वदा पुरुष वाचक सर्वनामों(उत्तम मध्यम व अन्य पुरुष)के साथही होता है। यथा हूं आप, म्हें आप म्हांआप, म्हेआप,मनें आपनें,आदि। निजवाचकता का बोध उत्तम एवं मध्यम पुरुष के रूपों के प्रयोग से ही हो जाता है। यथा थूं थारो कॉम करलें =तुम अपना कार्य करलो। हूं म्हारों कॉम करलीस=मैं अपना काम करलू गा।निज वाचकता के बोध के लिये बोली में विदेशी शब्द 'खुद' का प्रयोग भी उपलब्ध होता है जिसके रूप आप के समान ही चलते है।

३. २. २. ८. द्वितीय वर्ग-सर्ववाचक सर्वनाम

सर्ववाचक सर्वनाम 'सब' की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है –

'सब'

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	सब	सब
कर्म	सबनें	सबनें
करण	सबसूं	सबसूं
सम्प्रदान	सबरें	सबरें
अपादान	सबसूं	सबसूं
सम्बन्ध	सबरों, रा, री,	सबरों, रा, री,
अधिकरण	सबमें	सबमें

उक्त सभी सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपांश सर्ववाचकता का अर्थ बोध कराते हैं। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि 'सब' में /व्/ आबद्ध अंश का तिर्यक् विधायक प्रत्यय के रूप में योग विद्यमान हैं। तिर्यक् रूपों को दूर करने पर हमारे समक्ष केवल /स/, रूप अवशिष्ट रहता है। इस प्रकार सर्ववाचक स्वतंत्र रूपांश का मूल केन्द्रक रूप /स्/ स्वीकार किया जा सकता है। सर्ववाचक सार्वनामिक सर्वनाम के मूल एवं विकारी रूपों में अभेदकता दृष्टिगत होती है अतः इनकी भेदकता सिद्धि हेतु /-०/ विभक्ति का योग स्वीकार किया जा सकता है।

३.२.३. तृतीय : वर्ग सार्वनामिक समस्त-पद

बीकानेरी में सार्वनामिक पद अपने समस्त-पद के रूप में भी उपलब्ध होते हैं। यह सामासिकता सार्वनामिक पदों के ही समीपी संघटकों के रूप में विद्यमान हैं। उपलब्ध सार्वनामिक समस्त-पद इस प्रकार हैं।

म्हे-थे, म्हों-थों, हूं-थूं, ईमें-वेमें, म्हारी-थारी, म्हारें-थारें, थोंरों-म्होंरों, थोंसूं-म्होंसूं, ओं-बों।

उक्त सर्वनाम संघटक पदों से समस्त-पद सर्वनामों की संरचना हुई है एवं इनके प्रथम तथा द्वितीय संघटक भी सर्वनाम ही हैं। इस सृष्टि में सार्वनामिक पदों के अन्तर्गत निर्विभक्तिक एवं सविभक्तिक रूपों का प्रयोग हुआ है । कहीं-कहीं इनके साथ भेदक-भेद्य सूचक आवद्ध रूपों का प्रयोग भी देखने को मिलता है,यथा-

म्हारी–थारी, म्हारें–थारें आदि । कहीं–कहीं इतर कारक सम्बन्ध वोध कराने वाले आवद्ध अंशों सहित पदों का योग समीपी संघटक के रूप में समस्त सृष्टि के अन्तर्गत हुआ है । यथा–ईनें–वेंनें

उपर्युक्त सामासिक पदों में समस्त-पद एवं समीपी संघटकों के रूपात्मक सम्बन्ध को दृष्टि में रखा जाय तो प्रतीत होगा कि समीपी संघटक भी सर्वनाम हैं एवं उपलब्ध सृष्टि भी हमारे समक्ष सर्वनाम समस्त-पद ही है ।

उपर्युक्त सर्वनाम समीपी संघटक पदों का सम्बन्ध संयोजक अव्यय / और / के द्वारा अभिव्यक्त किया गया है जो यहां पर लुप्त है ।

यौगिक विधान

उपर्युक्त सार्वनामिक समस्त-पदों के यौगिक विधान पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि सार्वनामिक समस्त-पदों का निर्माण संयोजक अव्यय के लोप के परिणाम स्वरूप हुआ है। इसलिये इनमें संश्लिष्टता का ध्वन्यात्मक विकार हमें देखने को नहीं मिलता । जहां पर दोनों समीपी संघटकों की पृथक्-पृथक् सत्ता दृष्टिगत होती है, वहाँ पर प्रायः सभी समस्त-पद विश्लिष्ट है ।

व्याकरणिक रूप एवं प्रयोग की दृष्टि से भी ये पद सर्वनाम स्वतंत्र रूपांश के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। ये पद अपना सार्वनामिक अंश खोकर संज्ञा का स्वरूप धारण करने में भी सक्षम हैं। इसलिये रूपात्मक दृष्टि से इन्हें इस प्रकार के प्रयोगों में अन्य पद संज्ञा स्वतंत्र रूपांश के अन्तर्गत स्वीकार किया जा सकता है, क्योंकि इन पदों का प्रयोग अपने मूल रूप में भी बीकानेरी में उपलब्ध होता हैं । बीकानेरी सार्वनामिक समस्त पदों की विशेषता है कि उनका व्याकरणिक रूप निर्धारण प्रयोग एवं प्रकरण पर ही आधृत है । इस हेतु समस्त पदों के अंत में व्युत्पादक /-०/ विभक्ति के प्रयोग द्वारा भेदक रेखा खींची जा सकती है तथा व्यु–

त्पादक प्रत्यय सार्वनामिक समस्त-पद रूपांश संज्ञा स्वतंत्र रूपांश के क्षेत्र में लाया जा सकता है।

सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांशों की द्विरुक्ति का भी समस्त-पद रूप में विशेष महत्व है। बीकानेरी में उपलब्ध होने वाले द्विरुक्ति के विभिन्न रूप निम्नलिखित हैं—

१—हूंइहूं, तूंइतूं, थूंइथूं, म्हेंइम्हें, म्हेइम्हे
२— वोंइवों, ओंइओं,
३— कई-कंई, कूंण-कूंण, कोई-कोई, जकों-जकों,
४— तू-तूं, थूं-थूं, हूं-हूं
१ २– यह द्विरुक्ति केवलता बोधक हैं।
३— यह द्विरुक्ति समेतार्थक शब्दों में भेदकता का बोध कराती है।
४— इस वर्ग में द्विरुक्ति दृढ़ निश्चय व आदेश का बोध कराती हैं।

उक्त सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांशों के अतिरिक्त बोली में आगलों, फलोंणों ढीकड़ों आदि विविध रूप भी उपलब्ध होते हैं।

उपर्युक्त सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांशों के विश्लेषण के आधार पर हम निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकते हैं—

१– सार्वनामिक केन्द्रक रूप निम्न लिखित हैं—

१— प्रथम वर्ग : पुरुष वाचक सर्वनाम—

(१)	उत्तम पुरुष	/ हू् / / म् /
(२)	मध्यम पुरुष	/ त् /

२– द्वितीय वर्ग : (१) संकेत वाचक सर्वनाम—

(१)	निकटवर्ती	/ अ /
(२)	दूरवर्ती	/ व् /

(२)	सम्बन्ध वाचक सर्वनाम	/ ज् /
(३)	नित्यसम्बन्ध वाचक सर्वनाम	—
(४)	प्रश्न वाचक सर्वनाम	/ क् /
(५)	अनिश्चय वाचक सर्वनाम	/ क् /

(६) आदर वाचक एवं निजवाचक सर्वनाम /अ/
(७) सर्ववाचक सर्वनाम /स्/

२— उपर्युक्त सभी सार्वनामिक स्वतंत्र रूपों के मूल एवं विकारी रूपों व प्रत्ययों को निष्कर्ष रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

मूल एवं विकारी रूप	मू० आ० वि० प्र०		ति० आ० वि० प्र०	
१— उत्तम पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
हूं, म्हें, म्हे, म्हों	/-ऊं/	/-ए/	/-एं-अं/	/-ओं/
२— मध्यम पुरुष—				
तूं, थूं, तें, थें, थे थों	/-ऊं/	/-ए/	/-एं, -अं/	/-ओं/
३— निकट एवं दूरवर्ती—				
ओं, आ, ईयें, अे, एं, ईयों, /ओं, /आ/	/-ए/,		/-एं-अे/	/-ओं/
वों, वा, वे, वें, वों				
४— सम्बन्ध वाचक—				
जको, जकें, जकी	/-ओं/(पु०),	/-ए/-आ/	/-एं-अे,/	/-ओं/
जके, जका, जक्यों	/-ई/(स्त्री०),	/ओं/(स्त्री०)		
५— प्रश्न वाचक—				
कूंण, केंण	/-ऊं/	/-ऊं/	/-एं-अे/	/-एं-अे/
६— अनिश्चय वाचक—				
कोई, कई	/-ओ/	/-ओ/	/-अ/	/-अ/
७— आदर व निजवाचक आप	/-०/	/-०/	/-०/	/-०/
८— सर्व वाचक सब	/-०/	/-०/	/-०/	/-०/

३— इनके लिंग-वचन एवं कारक आदि का निर्धारण जिन रूपों के ये स्थानापन्न हैं उन्हीं के अनुरूप किया जा सकता है।

४— समस्त पद के रूप में सर्वनामों का प्रयोग संज्ञावत एवं द्विरुक्ति मूलक प्रयोग सार्वनामिक रूप में हुआ हैं।

अध्याय/४

विशेषण-पद

४. १. सामान्य विवेचन

जिस विकारी शब्द से संज्ञा की व्याप्ति मर्यादित होती है, उसे विशेषण कहते हैं।[1]

विशेषण-पद वाक्यों में अपने विशेष्य की विशेषता को प्रकट करते हैं। वाक्यान्तर्गत विशेष्य पद संज्ञा भी हो सकता है और सर्वनाम भी। दूसरे शब्दों में विशेषण पदों का वाक्यगत कार्य संज्ञा अथवा सर्वनाम पदों की विशेषता प्रकट करना है। अर्थ की दृष्टि से विशेषण शब्दावली गुण, परिमाण, संकेत संख्यादि भेद-विभेदों में वर्गीकृत की जाती है, किन्तु यदि पद-रचनात्मक दृष्टि से विचार किया जाये तो स्पष्ट होगा कि लिंग-वचन और कारक सम्बन्धों को प्रकट करने वाले विभक्ति-प्रत्ययों की संयोजना में ये संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों से भिन्न नहीं। इसलिए संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दावली को 'नाम' के अन्तर्गत परिगणित किया जाता है।

"यल्लिगं यद्वचनं या विभक्ति विशेष्यस्य, तल्लिगं, तद्वचनं सैव विभक्ति विशेषणस्यापि" इस सूत्र से प्राचीन भारतीय आर्य भाषा संस्कृत में विशेष्य के लिंग,वचन एवं कारक के अनुरूप ही विशेषण में परि-

१— कामता प्रसाद गुरू : हिन्दी व्याकरण पृ० १२४

वर्तन होता है । मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि में भी यही प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है । परन्तु अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं (हिन्दी आदि) की भांति बीकानेरी में यह प्रवृत्ति नहीं है । बीकानेरी में कुछ विशेषण तो अपने विशेष्य के लिंग-वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तित होते हैं और कुछ विशेषण अपने विशेष्य के लिंग-वचन एवं कारक से सर्वथा अप्रभावित रहते हैं।

इस आधार पर बीकानेरी के समस्त विशेषण पदों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है –

१. विशेष्य के लिंग-वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तित विशेषण-पद
२. विशेष्य के लिंग-वचन एवं कारक से अप्रभावित विशेषण-पद

४. १. १. विशेष्य के लिंग-वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तित विशेषण-पद

इस वर्ग के अन्तर्गत बीकानेरी के प्रायः सभी ओंकारान्त[1] विशेषणों की गणना की जा सकती है, क्योंकि ओंकारान्त विशेषण शब्दावली अपने विशेष्य के लिंग-वचन-कारक के अनुरूप विभक्ति प्रत्यय को ग्रहण करती है । यथा –

	विशेषण	विशेष्य	लिंग
१.	कालो़ँ	घोड़ोँ	पुल्लिग
२.	काली़	घोड़ी	स्त्रीलिंग
३.	थोड़ोँ	रावड़ियोँ	पुल्लिग
४.	थोड़ी	रबड़ी	स्त्रीलिंग

१— पूर्णांक गणना वाची ओंकारन्त विशेषण (दो, सोँ आदि) इसके अपवाद हैं । ये अपने विशेष्य के लिंग-वचन एवं कारक से प्रभावित नहीं होते हैं । यथा दो आदमी, दो लुगायोँ आदि ।

परिवर्तन प्रक्रिया

ओंकारान्त पुल्लिग विशेषणों के अन्त्य '-ओं' का लोप करके तथा '-ई' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग विशेषणों के रूप बनाये जाते हैं । यथा –

	पुल्लिग-रूप	प्रत्ययहीन-रूप	स्त्रीलिंग-प्रत्यय	स्त्रीलिंग-रूप
१.	काळों	काळ्	-ई	काळी
२.	थोड़ों	थोड़्	„	थोड़ी
३.	दूसरों	दूसर्	„	दूसरी
४.	चोंखों	चोख्	„	चोखी

[सूचनाः– विकारी बहुवचन अर्थात् '-ओं' सहित रूप 'काळों' का प्रयोग बोली में तभी मिलता है जबकि विशेषण का संज्ञावत् प्रयोग होता है । यथा–

काळों मोंय सूं एक उठाय लें

'काले (घोड़े अथवा अन्य वस्तुओं) में से एक उठा लो'

४. १. २. विशेष्य के लिंग-वचन एवं कारक से अप्रभावित विशेषण-पद

इस वर्ग के अन्तर्गत बीकानेरी के आकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त एवं व्यंजनान्त विशेषणों की गणना की जा सकती है । यथा –

(क) आकारान्त विशेषण

१. ०बढ़िया घोड़ों — पुल्लिग एकवचन

२. ०बढ़िया घोड़ी — स्त्रीलिंग एकवचन

३. ०बढ़िया घोड़ा — पुल्लिग बहुवचन

४. ०बढ़िया घोड़्यों — स्त्रीलिंग बहुवचन

(ख) ईकारान्त विशेषण

१. मूंजी (कंजूस) आदमी — पुल्लिग एकवचन

२. मूंजी लुगाई — स्त्रीलिंग एकवचन
३. मूंजी आदम्यों — पुल्लिग बहुवचन
४. मूंजी लुगायों — स्त्रीलिंग बहुवचन

(ग) ऊकारान्त विशेषण

१. उडाऊ (खर्चीला) छोरों — पुल्लिग एकवचन
२. उडाऊ छोरी — स्त्रीलिंग एकवचन
३. उडाऊ छोरा — पुल्लिग बहुवचन
४. उडाऊ छोर्‌यों — स्त्रीलिंग बहुवचन

(घ) व्यंजनान्त विशेषण

१. सुपातर बेटों — पुल्लिग एकवचन
२. सुपातर बेटी — स्त्रीलिंग एकवचन
३. सुपातर बेटा — पुल्लिग बहुवचन
४. सुपातर बेट्यों — स्त्रीलिंग बहुवचन

४. २. सार्वनामिक विशेषण

बीकानेरी में पुरुष वाचक एवं निज वाचक सर्वनामों को छोड़ कर शेष सर्वनामों का व्यवहार विशेषण रूप में भी होता है । परिणामतः हम उन्हें सार्वनामिक विशेषण की संज्ञा प्रदान कर सकते हैं । बीकानेरी में सार्वनामिक विशेषणों के उपलब्ध रूप निम्नलिखित हैं –

१. निश्चयवाची सार्वनामिक विशेषण -ओं ।
यथा – ओं छोरों
२. अनिश्चयवाची सार्वनामिक विशेषण -कोई ।
यथा – कोई आदमी, कोई बात ।
३. प्रश्नवाची सार्वनामिक विशेषण –कूंण एवं कई ।
यथा – कूंण छोरों, कई बात
४. सम्बन्धवाची सार्वनामिक विशेषण – जकों ।
यथा – जकों वोंणीयों ।

५— संख्यावाची सार्वनामिक विशेषण—अता, जता।

यथा- अता घोड़ा, जता आदमी।

६— परिमाणवाची सार्वनामिक विशेषण—अतोंक, उतोंक

यथा- अतोंक धान, उतोंक आटों, कतोंक दूध।

७— गुणवाची सार्वनामिक विशेषण—अस्सों, वस्सों, जस्सों।

यथा- अस्सों घर (ऐसा घर), वस्सों घोड़ों (वैसा घोड़ा) जस्सोंआदमी (जैसा आदमी)।

आपोंरों, परायों, आगलों, लारलों आदि शब्द भी सार्वनामिक विशेषण ही हैं, क्योंकि इनका प्रयोग भी विशेषणवत् होता है।
यथा- आपोंरों छोरों (अपना लड़का), परायों टाबर(दूसरे का बच्चा), आगलों घोड़ों (आगे वाला घोड़ा), लारलों छोरों (पीछे वाला लड़का)।

३. ४. तुलनात्मक विशेषण

अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की भांति बीकानेरी में भी तरार्थी एवं तमार्थी विशेषण उपलब्ध नहीं होते है। बीकानेरी में तरार्थी विशेषण का भाव 'कम्' 'ज्यादा,' घणों', '०बेसी' आदि शब्दों को विशेषण के पूर्व रखकर एवं करणकारक के 'सूं' परसर्ग का प्रयोग करके प्रकट किया जाता है। यथा–

१– ओं छोरों वें छोरें सूं कम पढियोड़ों है।

२– आ छोरी वें छोरी सूं ज्यादा चोखो है।

३– ईयें दोनों सूं ओं वणों फूटरों है।

४– रोंम मदन सूं ०बेसी दूध पीवें।

कभी कभी तुलना के लिये 'उगणीत' 'ईक्कीस' एवं 'बीसा इक्कीसी आदि शब्दों का प्रयोग भी उपलब्ध होता है। यथा–

१– रोंम मोवन सूं इक्कीस पड़ें।

२– दोए पेंलवोनों री बीसा इक्कीसी है।

तमार्थी विशेषण का भाव बीकानेरी में 'सबमें' सगलों में 'सगलोंसूं' आदि शब्दों के प्रयोग द्वारा प्रकट किया जाता है। यथा–

१– ओं छोरों सबसूं चोखों है।

२– ओ घोड़ो सबसूं बढ़िया है।
३– धोळकी गाय सगळों में चोखी है।

४. ४. संख्यावाचक विशेषण

बीकानेरी संख्यावाचक विशेषणों को मुख्य रूप से हम तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं—

१– निश्चित संख्यावाची विशेषण।
२– अनिश्चित संख्यावाची विशेषण।
३– परिमाणवाची विशेषण।

४. ४. १. निश्चित संख्यावाची विशेषण

इस वर्ग के विशेषणों को भी हम अध्ययन की सुविधा के लिए निम्नलिखित पाँच उपवर्गों के अन्तर्गत विभाजित कर सकते हैं।

क- गणनात्मक विशेषण
ख- क्रमवाचक विशेषण
ग- आवृत्तिवाचक विशेषण
घ- प्रत्येक बोधक विशेषण
च- समुदाय बोधक विशेषण

उक्त सभी वर्गों एवं उपवर्गों का नीचे विस्तार से विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

४. ४. १. १. गणनात्मक विशेषण

गणनात्मक विशेषणों के भी दो अवान्तर किये जा सकते हैं—

अ- पूर्णांक बोधक
आ- अपूर्णांक बोधक

४. ४. १. १. १. पूर्णांक बोधक

बीकानेरी में पूर्णांक बोधक विशेषण निम्न लिखित हैं—

बीकानेरी	हिन्दी
एक	एक
दो	दो
तीन	तीन
च्यार	चार
पांच	पांच
छो	छः
सात	सात
आंठ	आठ
नो	नो
दस	दस
इग्यारें	ग्यारह
बरें	बारह
तेरें	तेरह
चवदें	चौदह
पनरें	पन्द्रह
सोलें	सोलह
सतरें	सत्रह
अठारें	अठारह
उगणीस	उन्नीस
०वीस	वीस
इक्कीस	इक्कीस
वाइस	बाईस
तेईस	तेईस
चोंईस	चौवीस
पच्चीस	पच्चीस
छाईस	छब्बीस
सत्ताईस	सत्ताईस

बीकानेरी	हिन्दी
अठ्ठाईस	अठ्ठाईस
गुणतीस	उन्तीस
तीस	तीस
इकतीस	इकतीस
बत्तीस	बत्तीस
तेतीस	तेंत्तीस
चोँतीस	चौतीस
पेँतीस	पैंतीस
छत्तीस	छत्तीस
सेँतीस	सैंतीस
अड़तीस	अड़तीस
गुणताल़ीस ~ गुन्ताल़ीस	उन्तालीस
चाल़ीस	चालीस
इकताल़ीस	इकतालीस
बंयाल़ीस	ब्यालीस
तंयाल़ीस	तियालीस
चम्मालीस	चवालीस
पेंताल़ीस	पैतालीस
छंयाल़ीस	छियालीस
सन्चास	सैंतालीस
अड़चास	अड़तालीस
गुणचास	उंचास
पच्चास	पचास
इक्कोँवन	इक्यावन
बोँवन	बावन
तेपन	
चोँपन	

बीकानेरी	हिन्दी
पचपन	पचपन
छप्पन	छप्पन
सत्तोंवन	सतावन
अठांवन	अठ्ठावन
गुणसठ	उन्सठ
साठ	साठ
इकसठ	इकसठ
बासठ	बासठ
तेसठ	तिरसठ
चोंसठ	चौसठ
पेंसठ	पैंसठ
छ्यांसठ	छियासठ
सड़सठ	सड़सठ
अड़सठ	अड़सठ
गुणन्तर	उनहत्तर
सत्तर	सत्तर
इकोत्तर	इकहत्तर
बवोत्तर	बहत्तर
तेवत्तर	तिहत्तर
चोंवत्तर	चौहत्तर
पचन्तर	पचहत्तर
छीयन्तर	छिहत्तर
सतन्तर	सतत्तर
अठन्तर	अठहत्तर
गुणियासी	उनासी

बीकानेरी	हिन्दी
अस्सी	अस्सी
इक्यासी	इक्यासी
बंयासी	बयासी
तंयासी	तिरासी
चोँरासी	चौरासी
पच्यासी	पचासी
छयासी	छियासी
सत्यासी	सत्तासी
अठ्यासी	अठासी
नंयासी	नवासी
नुव्वे	नव्वे
इकोँणमेँ	इक्यानवे
बोँणमेँ	बानवे
तेणमेँ	तिरानवे
चोँणमेँ	चौरानवे
पचोँणमेँ	पंचानवे
छनमेँ	छियानवे
सतोँणमेँ	सतानवे
अठोँणमेँ	अट्ठानवे
नन्योँणमेँ	निन्यानवे
सोँ	सौ

४. ४. १. १. २. अपूर्णांक बोधक

अपूर्ण संख्यावाचक विशेषणों से पूर्ण संख्या के किसी भाग [illegible] होता है ।[1] बीकानेरी में अनेक अपूर्ण बोधक संख्याओं का [illegible]

१— डा० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास पृ० २[illegible]

जाता है, जो पाव, आधा, पूणों आदि से या इनके योग से निर्मित होते हैं। वाक्य-रचना में ऐसी संख्याओं के साथ विशेष्य आता है

बीकानेरी में निम्नलिखित अपूर्ण बोधक विशेषण उपलब्ध होते हैं।

पाव	(पाव)
आधों	(अद्धं)
पूणों या पूणा	(पौन)
सवा	(सवा)
डेंढ या डोंढ	(डेढ)
ढाई या अढाई	(ढ़ाई)

बीकानेरी में साढी साढा. आदि शब्दों से भी अपूर्ण संख्यावाची शब्दों का निर्माण होता हैं। यथा– साढी पोंच ओंना, साढा चाळीस रुपिया, पूणा चंम्माळीस रुपिया इत्यादि।

४. ४. १. २. क्रम वाचक विशेषण

बीकानेरी में क्रम वाचक संख्याओं का निर्माण प्रथम चार अंकों के उपरान्त समान रूप से होता है, यद्यपि छठ्ठों रूप में असमानता है। संख्याओं के पीछे अविकारी पुल्लिग एकवचन में -वों-प्रत्यय जुड़ता है, शेष पुल्लिग विकारी रूपों में -वें प्रत्यय प्रयुक्त होता है। स्त्रीलिंग के रूपों में -वीं प्रत्यय प्रयुक्त होता है। बीकानेरी में कतिपय संख्याओं के क्रमवाचक विशेषण निम्नलिखित हैं—

पेंलों, पेंलड़ों	
दूजों, दूसरों	
तीजों, तीसरों	
चोंथों,	
पोंचवों	पोंच्+ ·व+ओं=पोंचवों
छठ्ठों	
सातवों	सात्+व+ओं=सातवों
आंठवों	

नव्वों

दसवों

४. ४. १. ३. आवृत्तिवाचक विशेषण

पूर्णांक बोधक विशेषणों के आगे 'गुणों' शब्द लगाने से आवृत्ति-वाचक विशेषणों का निर्माण होता है । बीकानेरी में गुणात्मक संख्याओं में 'दुगना' के भाव को 'दूणों' शब्द द्वारा भी व्यक्त किया जाता है । शेष गुणा-त्मक संख्याओं में त, चों, छौ आदि पूर्ण संख्यावाची शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यथा–

दूणों
दो ∽ दु + –गुणों = दुगुणों ∽ दुगणों
तीन ∽ त + –गुणों = तगुणों ∽ तगणों
च्यार ∽ चों + –गुणों = चोंगुणों ∽ चोंगणों
०बीस + –गुणों = ०बीसगुणों

४. ४. १. ४. प्रत्येक बोधक विशेषण

प्रत्येक बोधक विशेषण के द्वारा कई वस्तुओं में से प्रत्येक का बोध होता हैं। यथा–

'हरेक चीज नें सोच समझर कोंम में लेवणी चइजें

बीकानेरी में गणनात्मक विशेषणों की द्विरुक्ति से भी यही अर्थ ध्वनित होता हैं। यथा–

'दो-दो रोट्यों मंगतों नें ॱबोंट दों'
(प्रत्येक भीखमंगे को दो-दो रोटी बांट दो) ।

'पोंच-पोंच रुपिया मजूरी देसी'
(प्रत्येक को पांच-पांच रुपये मजदूरी देंगे'

अपूर्णांक बोधक विशेषणों की द्विरुक्ति से भी यही प्रयोजन सिद्ध होता है–

डेंढ डेंढ रुपियों दे दों

ढाई ढाई ओंना ०वेंच दों

४. ४. १. ५. समुदाय वोधक विशेषण

वीकानेरी में कुछ समुदाय वोवक विशेपण निम्नलिखित हैं-

१- जोड़ों	=	दो के लिये
२- चोंकड़ी	=	चार के लिये
३- छकड़ी	=	छः के लिये
४- पंजों	=	पाँच के लिये

इसके अतिरिक्त वीकानेरी में पूर्णांक वोधक विशेपणों के आगे निश्चित भाव प्रकट करने के लिए -ऊं अथवा -ओं लगाकर समुदाय वोधक विशेषणों का निर्माण होता है। यथा–

(-ऊं)

पूर्णांक वोधक विशेपण	प्रत्यय	समुदाय वोधक विशेषण
१— तीन	–ऊं	तीनूं
२— च्यार	–ऊं	च्यारूं
३— सात	–ऊं	सातूं

(–ओं)

पूर्णांक वोधक विशेषण	प्रत्यय	समुदाय वोधक विशेषण
१— तीन	–ओं	तीनों
२— पोंच	–ओं	पोंचों
३— आंठ	–ओं	आँठों

४. ४. २. अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

बीकानेरी में संख्यावाचक शब्दों के आगे 'एक' जोड़कर अनिश्चित संख्यावाची विशेषण का निर्माण किया जाता हैं। यथा–

१— दो + एक = दोएक
२— च्यार + एक = च्यारेक
३— सात + एक = सातेक
४— दस + एक = दसेक

[सूचना– बीकानेरी में स्वतंत्र रूप से अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण उपलब्ध
हीं होता है।]

इसके अतिरिक्त बीकानेरी में दो निकटवर्ती संख्याओं के योग से एवं साथ
ो दो दूरस्थ संख्याओं के योग से भी अनिश्चित संख्या वाचक विशेषणों के भाव
को प्रकट किया जाता है। यथा–

१– पोंच + छौ = पोंच-छौ
२– सात + आंठ = सात-आंठ
३– बारें + तेरें = बारें-तेरें
४– आंठ + दस = आंठ-दस
५– तीस + चालीस = तीस-चालीस
६– सों + दोयसों = सों-दोयसों

४. ४..३. परिमाण वाचक विशेषण

बीकानेरी में निम्नलिखित परिमाण वाचक विशेषण उपलब्ध होते हैं —

१- पूरों	(पूरा)	२- अधूरों	(अधूरा)
३- थोड़ों	(थोड़ा)	४- घणों	(वहुत)
५- वोंत	(वहुत)	६- घणोंसारों	(अत्यधिक)
७- सगलों	(सारा)	८- कमती	(कम)
९- ०वेसी	(ज्यादा)	१०- अत्तों	(इतना)
११- उत्तों	(उतना)	१२- कत्तों	(कितना)
१३- जत्तो	(जितना	१४- अत्तोंसारों	(इतना सारा)
१५- चणसोंक	(जरासा)	१६- ज्यादा	(अधिक)

४. ५. क्रियामूलक विशेषण

बीकानेरी में 'धातु' में '-त' एवं –ण कृत् प्रत्ययों के योग से क्रियामूलक विशेषणों की रचना होती है, जिसके पुल्लिग में –ओं, स्त्रीलिंग में –ई प्रत्यय लगते हैं। उक्त प्रत्ययों (त+ओं=तो, ण+ओं=णों)के अतिरिक्त भूतकालिक कृदन्त

रूपों के '-ओड़ों' प्रत्यय के योग से भी क्रियामूलक विशेषणों की रचना होती है। यदि धातु स्वरान्त हो तो, -तों एवं -णों प्रत्ययों के पूर्व 'व' श्रुति का आगम हो जाता हैं। -ओड़ों प्रत्यय के पूर्व स्वरान्त धातु में 'य' श्रुति का आगम हो जाता है एवं व्यंजनान्त धातुओं में -तों एवं-णों प्रत्ययों के पूर्व श्रुति का आगम नहीं होता परन्तु -ओड़ों प्रत्यय के पूर्व -' इय् ' का आगम हो जाता है। यथा-

स्वरान्त धातु एवं '-तों' प्रत्यय

खां+व+ -तों=खांवतों (क्रियामूलक विशेषण)

खांवतों आदमी	पुल्लिग एकवचन
खांवता आदमी	पुल्लिग बहुवचन
खांवती लुगाई	स्त्रीलिंग एकवचन
खांवती लुगायों	स्त्रीलिंग बहुवचन

व्यंजनान्त धातु एवं '-तों' प्रत्यय

पढ्+ -तों=पढतों

पढतों छोरों	पुल्लिग एकवचन
पढता छोरा	पुल्लिग बहुवचन
पढती छोरी	स्त्रीलिंग एकवचन
पढती छोर्यों	स्त्रीलिंग बहुवचन

स्वरान्त धातु एवं '-णों' प्रत्यय

रो + व् + -णों=रोवणों

रोवणों छोरों	पुल्लिग एकवचन
रोवणा छोरा	पुल्लिग बहुवचन
रोवणी छोरी	स्त्रीलिंग एकवचन
रोवणी छोर्यों	स्त्रीलिंग बहुवचन

व्यंजनान्त धातु एवं '-ओड़ों' प्रत्यय

खा+ य् + ओड़ों=खायोड़ों

खायोड़ो केलो	पुल्लिग एकवचन
खायोड़ा केला	पुल्लिग बहुवचन
खायोडी अनार	स्त्रीलिंग एकवचन
खायोड़ी अनार्‌यों	स्त्रीलिंग बहुवचन

व्यंजनान्त धातु एवं 'ओड़ो' प्रत्यय

मर् + इय् + ओडों = मरियोडों

मरियोड़ों ॰बोंन्दरों	पुल्लिग एकवचन
मरियोड़ा ॰ब्रोंन्दरा	पुल्लिग बहुवचन
मरियोड़ी ॰ब्रोंन्दरी	स्त्रीलिंग एकवचन
मरियोयी ॰ब्रोंन्दर्‌यों	स्त्रीलिंग वहुवचन

[सूचना–

१— उपर्युक्त प्रत्ययों –तों,–णों, –ओड़ों में मूलप्रत्यय -त्, -ण्, -ओड् ही है जिनमें -ओं, -आ, -ई आदि लैंगिक वाची प्रत्ययों का योग हुआ है ।

२— क्रियामूलक विशेषण अपने विशेष्य के लिंग–वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तित होते हैं । अतः क्रियामूलक विशेषणों को वर्ग १ 'अपने विशेष्य के लिंग-वचन-कारक के अनुरूप परिवर्तित विशेषण' के अन्तर्गत स्थान दिया जा सकता है ।]

अध्याय/५

नामपदों के निर्माणकारी प्रत्यय

५. १. सामान्य विवेचन

संस्कृत संज्ञा प्राय: तीन अंशों से मिलकर बनती है – धातु, प्रत्यय तथा कारक चिन्ह ।[1] धातु और प्रत्यय से मिलकर मूल शब्द बनता है और फिर उसमें आवश्यकतानुसार कारक चिन्ह लगाये जाते हैं ।[2] आधुनिक भारतीय आर्यभाषओं में संस्कृत कारक-चिन्ह प्राय: लुप्त हो गये हैं । आधुनिक भाषाओं व बोलियों में कारक रचना का सिद्धान्त ही भिन्न हो गया है । गत अध्यायों में संज्ञा के मूल एवं विकारी रूपों व कारक चिन्हों पर विस्तार से विचार किया गया है । इस अध्याय में बीकानेरी में नामपदों के निर्माणकारी प्रत्ययों पर विचार किया गया है ।

शब्द के जिस अंश में स्वतंत्र अस्तित्व-द्योतक कोई अर्थ गर्भित नहीं होता और वाक्य में स्वतंत्रता पूर्वक प्रयुक्त होने की क्षमता जिसमें नहीं होती तथा जो प्रकृति– मूल प्रकृति अथवा व्युत्पन्न प्रकृति अथवा पद-प्रकृति– के आश्रय से

१— बीम्स- कंपैरेटिव ग्रैमर आव् दी माडर्न एरियन लेंग्वेज आव् इण्डिया, भाग २, पृष्ठ १

२— धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० २२२

उनके पूर्व अथवा पश्चात् आकर अर्थवान् होता है, उसे प्रत्यय कहते हैं।[1]

इस परिभाषा के आधार पर डॉ० उप्रैति ने प्रत्ययों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है —

(१) व्युत्पादक प्रत्यय— पूर्व प्रत्यय, पर प्रत्यय (२) व्याकरणिक प्रत्यय- विभक्ति प्रत्यय, पश्चाश्रयी। पश्चाश्रयी के उन्होंने पुनः दो उपभेद किये हैं — परसर्ग एवं निपात।[2]

डॉ० मुरारी लाल उप्रैति द्वारा वर्गीकृत प्रत्ययों के वर्गीकरण में पूर्व, पर एवं विभक्ति प्रत्यय तो प्रत्यय सीमा में आते हैं परन्तु परसर्ग एव निपातों को प्रत्यय की सीमा में स्वीकार करना सर्वथा भ्रामक व अवैज्ञानिक है। इसके निम्नलिखित कारण हैं —

(१) प्रत्यय धातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व अथवा पर में जुड़कर 'पद' रचना करते हैं परन्तु परसर्ग एवं निपात तो केवल संज्ञा सर्वनाम एवं विशेषण पदों के विकारी रूपों के पश्चात आते हैं इनसे 'पद' रचना नहीं होती एवं मूल रूपों के साथ इनका प्रयोग नहीं होता।

(२) क्रिया-पदों के पश्चात् परसर्गों का प्रयोग नहीं होता।

(३) वाक्यान्तर्गत निपात तो निक्षिप्त होते हैं एव यदि निपातों को वाक्य से निकाल भी दिया जाय तो पद रचना एवं वाक्य गठन में किसी प्रकार का अन्तर उपस्थित नहीं होता। पर यदि प्रत्ययों को वाक्य में से निकाल दिया जाय तो पद रचना एवं वाक्य गठन में अन्तर उपस्थित हो जायगा। यथा— 'वेकसूर लड़का तो मर गया' वाक्य में 'वे-' पूर्व प्रत्यय एव -आ विभक्ति प्रत्ययों को निकाल दिया जाय तो वाक्य होगा। 'कसूर लड़क तो मर गय' परन्तु यदि 'तो' निपात को निकाल दिया जाय तो पद-रचना

१— डॉ० मुरारी लाल उप्रैति : हिन्दी में प्रत्यय विचार पृ० २३

२— " " " " २३-२४

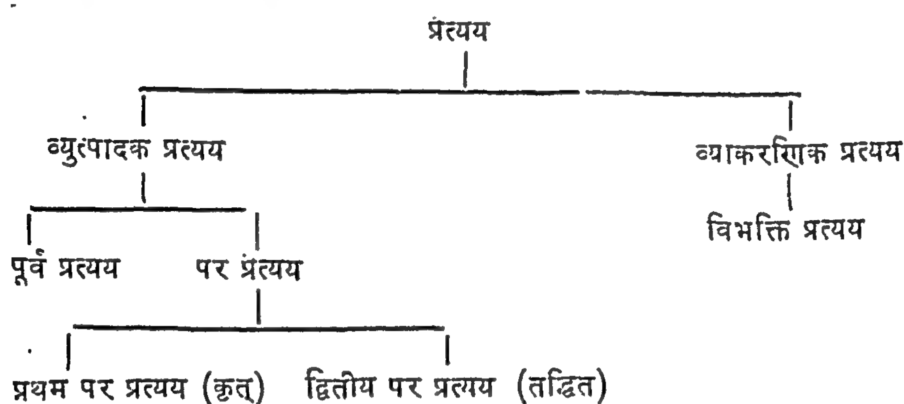
एवं वाक्य अर्थ में कोई अन्तर उपस्थित नहीं होगा यथा – 'लड़का मर गया'।

(४) प्रत्ययों में 'पद' एवं अभिनव शब्द सृष्टि करने की क्षमता होती है पर निपातों एवं परसर्गों के द्वारा अभिनव शब्द सृष्ट नहीं होते।

(५) संस्कृत आदि प्राचीन आर्य भाषाओं में प्रत्ययों को मुख्य रूप से चार वर्गों में विभाजित किया गया है -- सुप्, तिङ्, कृत् एवं तद्धित। सुप् एवं तिङ् व्याकरणिक कोटि के प्रत्यय हैं एवं कृत् तथा तद्धित व्युत्पादक प्रत्यय हैं। निपात एवं परसर्ग इनमें से किसी भी श्रेणी में नहीं आ सकते।

इस प्रकार परसर्गों एवं निपातों को प्रत्यय की सीमा में स्वीकार करना [illegible] है। वस्तुतः प्रत्यय वे आबद्ध रूप हैं जो प्रकृति (धातु-प्रातिपदिक) के पूर्व अथवा पर में संयुक्त होकर अभिनव शब्द सृष्टि करते हैं एवं जिनका प्रयोग भाषा-व्यवहार में स्वतंत्र रूप से नहीं होता। इस आधार पर इन प्रत्ययों को [illegible] वर्गों में वर्गीकृत कर सकते हैं (१) व्युत्पादक प्रत्यय — वे प्रत्यय जो किसी धातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व अथवा पर में संयुक्त होकर अभिनव शब्द की सृष्टि करते हैं व्युत्पादक प्रत्यय कहलाते हैं। व्युत्पादक प्रत्यय के दो भेद होते हैं (१) पूर्व प्रत्यय (२) पर प्रत्यय [illegible]

/-ए/ विभक्ति तिर्यक् कारक, पुल्लिंग एक वचन की द्योतक है। /पढ़/ धातु के पश्चात् लगने वाली /-ई/ विभक्ति अन्य पुरुष, एक वचन, स्त्रीलिंग, भूतकाल आदि की द्योतक है। इस प्रकार विभक्ति प्रत्ययों के योग से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण आदि 'पद' सिद्ध होते हैं। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर बीकानेरी नामपदों के निर्माणकारी प्रत्ययों का वर्गीकरण एवं प्रत्यय विधान इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —



५. २. १. व्युत्पादक प्रत्यय : पूर्व प्रत्यय

बीकानेरी में पूर्व प्रत्यय का प्रयोग संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण एवं धातुओं के पूर्व होता है एव इनके योग से प्रकृत्यर्थ में अभिनवता आ जाती है। पूर्व प्रत्ययों का प्रयोग सर्वनामों के पूर्व उपलब्ध नहीं होता। बीकानेरी में उपलब्ध पूर्व प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

/अ-/, /अन-/ /अध-/, /अल-/, /ऊ-/, /ओं-/, /क-/, /कु-/, /दर-/, /दु-/, /दुर-/, /न-/, /पड़-/, /पर-/, /वि-/, /॰वें-/, /ला-/, /स-/, /सर-/, सु-/

उपर्युक्त पूर्व प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

५. २. १. १. संज्ञापदों के निर्माणकारी पूर्व प्रत्यय

(क) पूर्व प्रत्यय + संज्ञा = व्युत्पन्न संज्ञा रूप

पूर्व प्रत्यय	संज्ञा →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	अर्थ
अं-	न्याव	अन्याव	'हीनता'
अ-	काल्	अकाल्	"
अध-	कचरों	अधकचरों	'अर्द्ध'
अन-	हित	अनहित	अभाव
अल-	मस्त	अलमस्त	निश्चय
ऊ-	खल्	ऊखल्	वस्तु वा०
ओं-	गुण ∽ गण	ओंगण	हीनता
क-	पूत	कपूत	"
कु-	ठोंड़	कुठोंड़	"
कु	टावर	कुटावर	"
दु-द्-	भाग ∽ हाग ∽ वाग	द्वाग	"
दुर-	आसीस	दुरासीस	"
पड़-	पोतों	पड़पोतों	'पूर्वपीढ़ी'
पर-	देस	परदेस	'पराया'
बे-	ईजत/ई	बेजती	'विना'
बे-	रहम ∽ रेम/ई	बेरेंमी	"
़वें-	राग	़वेंराग	'अभाव'
ला-	परवाह ∽ परवा/ई	लापरवाई	'निषेध'
स-	पूत	सपूत	'अच्छा'
सर-	पंच	सरपंच	'प्रधानता'
सु-	मोंणस	सुमोंणस	'श्रेष्ठता'

(ख) पूर्व प्रत्यय + धातु = व्युत्पन्न संज्ञा रूप

पूर्व प्रत्यय	धातु →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	अर्थ
अ-	पच्/ओं	अपचों	'विना'
अण-	बोल/आ	अणबोला	"
अण-	वण	अणवण	"

५. २. १. २. विशेषण पदों के निर्माणकारी प्रत्यय

(क) पूर्व प्रत्यय + संज्ञा = व्युत्पन्न विशेषण रूप

पूर्व प्रत्यय	संज्ञा	→ व्युत्पन्न विशेषण	अर्थ
अ-	थाग	अथाग	अभाव
अ-	चेत	अचेत	"
अन-	मोल	अनमोल	"
अण-	समझ	अणसमझ	"
कु-	ढ़व	कुढ़व	हीनता
दु-	वल़/ओं	दुवलों	हीनता
न-	धड़क	नधड़क	'बिना
न-	पूत/ई	नपूती	"
नु-	गुरु/गुर/ओं	नुगरों	"
बे-	धड़क	बेधड़क	"
बे-	तुक	बेतुक	"
बें-	राग/ई	बेंरागी	अभाव
स-	जल़	सजल़	सहित
स-	पूत/ई	सपूती	"

(ख) पूर्व प्रत्यय + विशेषण = व्युत्पन्न विशेषण रूप

पूर्व प्रत्यय	विशेषण	व्युत्पन्न विशेषण रूप	अर्थ
अ-	छूत/ओं	अछूतों	अभाव
कु-	मारग/ई	कुमारगी	हीनता
कु-	नोंम/ई	कुनोंमी	"
गुण[1]	तीस	तीसं	"

१— 'गुण' पूर्व प्रत्यय केवल संख्यावाची विशेषणों के पूर्व ही लगता है जो [illegible] 'ऊन' से विकसित है। बीकानेरी में 'उन्नीस' विशेषण के स्थान पर 'गुणतीस' रूप मिलता है। इस रूप में गुण' में विपर्यय हुआ है।

स-	नोँम/ई	सनोँमी	श्रेष्ठता

(ग) पूर्व प्रत्यय + धातु = व्युत्पन्न विशेषण रूप

पूर्व प्रत्यय	धातु →	व्युत्पन्न विशेषण रूप	अर्थ
अ-	टल्	अटल	अभाव
अ-	चूक्	अचूक	"
अन-	पढ़्	अनपढ़	"
अन-	जोँण्	अन्जोँण	"

५. २. २. पर प्रत्यय

बीकानेरी में पर प्रत्ययों का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण एवं धातुओं के पश्चात् होता है एवं इनके योग से अनेक प्रकार के संज्ञा, विशेषण आदि रूप व्युत्पन्न होते हैं ।

५. २. २. १. प्रथम पर प्रत्यय (कृत्)

जो प्रत्यय धातु में संलग्न होकर संज्ञाओं एवं विशेषणों का निर्माण करते हैं वे प्रथम पर प्रत्यय (कृत्) कहे जाते हैं एवं इनसे निर्मित शब्द कृदन्त कहलाते हैं । बीकानेरी में प्रायः स्वरान्त धातुओं में पर प्रत्यय लगने से पूर्व 'व' अथवा 'य' श्रुति का आगम हो जाता है एवं व्यंजनान्त धातुओं में पर-प्रत्यय लगने से पूर्व श्रुति का आगम दृष्टिगत नहीं होता । बीकानेरी में उपलब्ध प्रथम पर प्रत्यय निम्नलिखित है ।

/-०/, /-अक/, /-अत/, /-अण/, /-अण/ई/, /-अस/, /-अंत/, /-अंद/, /-आ/ई/, /-आक/, /-आप/ओँ/, /-आर/ई/ /-आव/, /-आव/ओँ/, /-आव/अण/ई/, /-आवट/, /-इय/-ओँ/, /-उ/, /-एज/, /-एर/ओँ/, /-ओड़/, /-ओड़/ई/, /-ओट/ई/ /-ओँण/, /-ओँण/ई/, /-ओँण/-ओँ/, /-ओत/ई/, /-क/ई/, /-कार/, /-ट/आ/ /-ट/ई/, /-ण/ई/, /-त/आ/, /-त/ई/, /-त/इय/ओँ/, /-न/ई/,/ /-न/ओँ/, /-व/ई/, /-वार/ओँ/, /-वैय/ओँ/, /-स/ओँ/, /-अक्कड़/, /-आ/ऊ/, /-आक/इय/ओँ/, /-आव/आण/ओँ/, /-इयल/, /-इय/आ/, /-एल/, /-ओकडोँ/, /-ओ/अँ/,

उपर्युक्त पर प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

५. २. २. १. १. संज्ञापदों के निर्माणकारी प्रथम पर-प्रत्यय (कृत्)

(क) धातु + पर प्रत्यय = व्युत्पन्न संज्ञा रूप

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न	संज्ञा रूप
/-०/	तप्	-०	तप	भा०वा०सं०
	जप्	-०	जप	,,
	नाच्	-०	नाच	,,
/-अक/	वेँठ्	-अक	वेँठक	स्थान० वा०
	वेँस्	-अक	वेँसक	,,
/-अत/	तप्	-अत/ई	तपती	भा०वा०सं०
	वल्	-अत	वलत	,,
	रम्	-अत	रमत	,,
/-अण/	चल्	-अण	चलण	,,
	घड़क्	-अण	घड़कण	,,
	०वेल	-अण	०वेलण	,,
/अण/ई/	मीच्	-अण/ई	मीचणी	,,
/-अस/	मल ~ माल	-अस	मालस	,,
/-अंत/	भड़्	-अंत	भड़ंत	,,
/-अंद/	तड़्	-अंद	तड़ंद	,,
	बड़्	-अंद	वड़ंद	,,
/-आ/ई/	कर्	-आ/ई	कराई	,,
	जड़्	-आ/ई	जड़ाई	,,

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	
/-आ/ई/	पढ्	-आ/ई	पढाई	भा० वा०सं०
	धो /व/	-आ/ई	धोवाई	"
	सीं /व/	-आ/ई	सींवाई	"
/-आक/	तड़्	-आक	तड़ाक	"
	फट्	-आक	फटाक	"
/-आप/ओं/	पूज्	-आप/ओं	पूजापों	"
	चढ्	-आप/ओं	चढापों	"
/-आर/ई/	पूज्	-आर/ई	पूजारी	कर्ता० वा०
	पचक्	-आर/ई	पचकारी	करण० "
/-आव/	घूम	-आव	घूमाव	भा०वा०स०
	धड़क्	-आव	धड़काव	"
/-आव/ओं/	बुल्	-आव/ओं	बुलावों	"
	पछत्	-आव/ओं	पछतावों	"
/-आव/अण/ई/	पें र्	-आव/अण/ई	पें रावणी	"
/-आवट/	जम्	-आवट	जमावट	"
	थक्	-आवट	थकावट	"
	॰बण्	-आवट	॰बणावट	"
/-इय/ओं/	रमत्	-इय/ओं	रमतियों	"
/-ई/	हस्	-ई	हसी	"
	बोल्	-ई	बोली	"
/-ऊ/	चा	-ऊ	चाऊ	व्यक्ति०वा०स०
/-एज/	बों घ ∽ बंध्	-एज	बंधेज	भा०वा०सं०
/-एर/ओं/	॰बास ∽ ॰बस	-एर/ओं	॰बसेरों	"
/-ओड़/	हल्	-ओड़	हलोड़	"

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न	संज्ञा रूप
/-ओट/ई/	कस्	-ओट/ई	कसोटी	भा० वा० सं०
	मस्	-ओट/ई	मसोटी	,,
/-ओड़/ई/	पक्	-ओड़/ई	पकोड़ी	वस्तु वा० सं०
/-ओँण/	लग्	-ओँण	लगोँण	भा० वा० सं०
	चढ्	-ओँण	चढ़ोँण	,,
/-ओँण/ई/	केँ ∽ क्	-ओँण/ई	कोँणी	,,
/-ओँण/ओँ/	बछ्	-ओँण/ओँ	बछोणोँ	वस्तु ,,
/-ओत/ई/	कट्	-ओत/ई	कटोती	भा० वा० सं०
/-क/ई/	झप्	क/ई	झपकी	,,
/-कार/	फट्	-कार	फटकार	,,
	दुत्	-कार	दुतकार	,,
/-ट/आ/	खर् ∽ खर्	-ट/आ	खराटा	,,
/-ट/ई/	झप्	-ट/ई	झपटी	,,
/-ण/ई/	कर्	-ण/ई	करणी	,,
	चट्	-ण/ई	चटणी	,,
/-त/आ/	कर्	-त/आ	करता	कर्तृ. वा० स०
	धर्	-त/आ	धरता	,,
/-त/ई/	चढ्	-त/ई	चढ़ती	भा० वा० स०
	बल्	-त/ई	बलती	,,
/-त/इय/ओँ/	भर्	-त/इय/ओँ	भरतियोँ	वस्तु वा० स०
/-न/ई/	चाल्	-न/ई	चालनी	,,
	मल्	-न/ई	मलनी	भा० वा० स०
/-न/ओँ/	झर्	-न/ओँ	झरनोँ	कर्म वा० सं०

/-व/ई	धो	-व/ई	धोवी	कर्तृ वा० सं०
/-वार/ओँ/वाड़/ओँ	बाँट ∽ ०वंट	-वार/ओँ	०बंटवाड़ोँ	भा० वा० सं०
/-वैय/ओँ/	गा ∽ ग	-वैय/ओँ	गवैयोँ	कर्तृ वा० सं०
	खा ∽ ख	-वैय/ओँ	खवैयोँ	,,
/-स/ओँ	घस्	-स/ओँ	घस्सोँ	,,

१. २. २. १. २. विशेषण पदों के निर्माणकारी प्रथम पर प्रत्यय (कृत्)

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय	→ व्युत्पन्न विशेषण
-अक्कड़	घूम ∽ घुम	-अक्कड़	घुमक्कड़
/-अण/ओँ/	सो /व/	-अण/ओँ	सोवणोँ
	खा /व/	-अण/ओँ	खावणोँ
/-आऊ/	जड़्	-आऊ	जड़ाऊ
	चल्	-आऊ	चलाऊ
	०बक्	-आऊ	०बकाऊ
/-ऊ/	खा	-ऊ	खाऊ
/-आक/	तर्	-आक	तराक
/-आक/इय/ओँ/	जीम्	-आक/इय/ओँ	जीमाकियोँ
/-आक/ओँ/	लड़्	-आक/ओँ	लड़ाकोँ
/-आव/अण/ओँ	डर	-आव/अण/ओँ	डरावणोँ
/-इयल/	मर्	-इयल	मरियल
	अड़्	-इयल	अड़ियल
/-इय/आ/	घट्	-इय/आ	घटिया
	बढ़्	-इय/आ	बढ़िया

/-ऊ/	चा	-ऊ	चाऊ
	अकड़	-ऊ	अकड़ू.
	रट् ~ रट्ट	-ऊ	रट्टू
/-एल/	०वगड्	-एल	०वगडेल
	छोँट् ~ छट्ट	-एल	छन्टेल
/-ओकडोँ/	खा	-ओकडोँ	खाओकडोँ
	पी	-ओकडोँ	पीओकडोँ
	चट्	-ओकडोँ	चटोकडोँ
/-ओड़ोँ/	ली /य/	-ओडोँ	लीयोड़ोँ
	खा /य/	-ओड़ोँ	खायोडोँ
	चूंट् /इग/	-ओड़/ओँ	चूंटियोडोँ
	गल् /इय/	-ओड़/ओँ	गलियोडोँ
/-कार/	.जोँण	-कार	जोँणकार
/-ण/ओँ	खा /व/	-ण/ओ	खावणोँ
/-ण/ इय/ओँ	गा /व/	-ण/इय/ओँ	गावणियोँ
/-व ओँ/	ढल्	-व/ओँ	ढ़लवोँ
/-वै/ओँ/	गा ~ ग	-वै/ओँ	गवैयोँ

५. २. २. २. द्वितीय पर प्रत्यय (तद्धित)

जो प्रत्यय सज्ञा, सर्वनाम, विशेपण, क्रिया-विशेपण आदि शव्दो के अन्त्य भाग मे संलग्न होकर पुनः विविध संज्ञा, सर्वनाम, विशेपण आदि पदों की संरचना करते है, वे द्वितीय पर प्रत्यय (तद्धित) कहलाते है। वीकानेरी में उपलब्ध द्वितीय पर प्रत्ययो को योग की दृष्टि से निम्नलिखित वर्गो मे विभाजित किया जा साकता है—

१— संज्ञा से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

२— सर्वनाम से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

३— विशेपण से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

४— क्रिया-विशेपण से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

५— संज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय
६— सर्वनाम से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय
७— विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय
८— क्रिया-विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

५. २. २. २. १. संज्ञा से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में संज्ञा से संज्ञा व्युत्पन्न करने वाले पर प्रत्यय निम्नलिखित है—

/-अक//, /-अण/, /-अल/, /-अंग/आ/, /-आ/ई/, /-आक/ओँ/ /-आड़/, /-आप/ओँ/, /-आयत/, /-आर/, /-आर /ई/, /-आर/ ओँ/, /-आल/ई/, /-इय/आ/, /-इय/ओँ/, /-इंद/ओँ/, /-ई/, /-ईन/ओ/,/ईच/ /-ओँ/,/-एड़/ओ/-एल/,/-ओं/ई/,/-ओट/ओँ/,/-ओड़/ओँ/,/-ओँण/ओँ//-ओण/ाई/ /-ओ/ ई/-ओत/ई/, /-ओल/ई/, /-क/, /-क/ई/, /-कार/, /-ग/ई/,/-गर/, /-गार/, /-गीर/, /गर/ई/, /-ड़/ओँ/, /-च/ई/, /चार/ओँ/, /-ज/ओँ/, /-ट/ओँ/, /-त/ /आ/, /-त/ओँ/, /-दोँन/, /-न/ई/, /-नोँम/, /-ण/ई/, /-पण/, /-पण/ओँ/, /-पाल/, /-ब/ओँ/, /-भ/ओँ/, /-यार/ई/, /-र/ई/, /-र/ओँ/, /-ल/ई/, /-ल/ओँ/, /-वाड़/ओँ/

उपर्युक्त पर प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार है—

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	
/-अक/	ढोल	-अक	ढोलक	वस्तु० वा० स०
/-अण/	धोबी ~ धोब्	-अण	धोबण	स्त्री०
	भंगी ~ भंग्	-अण	भंगण	,,
/-अण/	पग ~ पा /य/	-अल	पायल आभूषण वा० स०	
/-अंग/आ/	आड ~ अड्	-अंग/आ/	अड़ंगा भा० वा० स०	
/-आ/ई/	लोग ~ लुग	-आ/ई/	लुगाई स्त्री० व ० स०	
	ठाकर ~ ठकर	-आ/ई/	ठकराई भा० वा० स०	
	पडंत	-आ/ई/	पंडताई भा० वा० स०	

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/-आक/ओं/	फट	-आक/ओं/	फाटकों वस्तु० वा०सं०
	धम	-आक/ओं/	धमाकों ,,
/-आड़/	जोग ∽ जुग्	-आड़/	जुगाड़ भा० वा० सं०
	लात ∽ लत्	-आड़	लताड़ ,,
/-आप/ओं/	रोंड ∽ रंड	-आप/ओं/	रंडापों भा० वा० सं०
/-आयत/	पंच	-आयत	पंचायत भा० वा० स०
/-आर/	लो /व/	-आर	लोवार व्यवसाय वा०सं०
	सोनों ∽ सोन	-आर	सोनार ,,
/-आर/ई/	जूओं ∽ जू	-आर/ई	जूआरी व्यवसाय वा०सं०
/-आर/ओं/	०वोंणियों ∽ ०बणज	-आर/ओं/	वणजारों कर्तृ वा० सं०
/-आल/ई/	हाथ ∽ हथ	-आल/ई	हथाली अंगवा०स०
/-इय/आ/	लोटों ∽ लुट	-इय/आ/	लुटिया लघु वा०स०
/-इय/ओं/	रोकड़	-इय/ओं/	रोकड़ियों व्यवसाय वा०
	आडत	-इय/ओं/	आडतियों ,,
	जोंग	-इय/ओं	जोंगियों वस्त्र वा० सं०
/इंद/ओं/	०बास	-इंद/ओं/	०वासिन्दों कर्तृ० वा०स०
	रात	-इंद/ओं/	रातिन्दों रोग० वा० स०
/-ई/	खेत	-ई	खेती भा० वा० स०
	चोर	-ई	चोरी ,,
	तेल	-ई	तेली व्यवसाय वा० स०
	परख	ई-	परखी वस्तु० वा० स०
/-ईन/ओं/	माह ∽ म	-ईन/ओं/	मईनों भा० वा० सं०
/-ईच/ओं/	०बाग ∽ ०बग	-ईच/ओं/	०वगीचों वृहद् वा०सं० ,,
/-एड़/ओं/	कोंम	-एड़/ओं/	कोंमेड़ों सम्बन्ध वा०सं०
/-एल/	फूल ∽ फुल	-एल	फुलेल सम्बन्ध वा०सं०
/-ओ/ई/	नणंद	-ओ/ई/	नणदोई ,,

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/ओ/ई/	वें न /द/	-ओ/ई	वेन्दोई [1],संबंध वा० सं०
/-ओट/ओं/	लिंग ∽ लंग	-ओट/ओं	लंगोटों वस्त्र वा० सं०
/-ओड़/ओं/	हाथ ∽ हथ	-ओड़/ओं।	हथोडों करण वा० सं०
/-ओंण/ओं/	घर	-ओंण/ओं/	घरोंणों भा० वा० सं०
/-ओंण/ई/	सेठ	-ओंण/ई/	सेठोंणी स्त्री० वा० सं०
	जेठ	-ओण/ई/	जेठोंणी ,,
	देवर ∽ देर	-ओंण/ई/	देरोंणी ,,
/-ओत/ई/	बाप	-ओत/ई/	बापोती भा० वा० सं०
	काठ ∽ कठ	-ओत/ई/	कठोती सम्बन्ध वा० सं०
/-ओल़/ई/	नीम ∽ नीम्ब	-ओल़/ई/	नीम्बोली ,,
/-क/	कण	-क	कणक अन्न वा० सं०
/क/ई/	धम	-क/ई	धमकी भा० वा० सं
/-कार/	फूं	-कार	फूंकार भा० वा० सं०
	हूं	-कार	हूंकार ,,
/-गर/ई/	नेता	-गरी	नेतागरी भा० वा० सं०
/-ग/ई/	˳वैंद	-ग/ई	˳वैदगी संबंध वा० सं०
/-गर/	सौंदों ∽ सौंदा	-गर	सौंदागर ,,
	जादू	-गर	जादूगर कर्तृ वा० सं०
/-गार/	याद	-गार	यादगार सम्बन्ध वा० सं०
/-गीर/	पेसों ∽ पेसा	-गीर	पेसागीर सम्बन्ध वा० सं०
/-ड़/ओं/	धोबी	-ड़ों	धोबीड़ों हेयार्थ वा० सं०
/-च/ई	तबलों ∽ तबल	-च/ई/	तबलची व्यवसाय वा० सं०
/-चार/ओं/	भाई	-चारों	भाईचारों भा० वा० सं०
/-ज/ओं/	भाई ∽ भती	-ज/ओं	भतीजों सम्बन्ध वा० सं०
/-ट/ओं	झपट	-ट/ओं	झपट्टों भा० वा० सं०
/-त/आ/	जन	-त/आ/	जनता समुदाय वा० सं०
/-त/ओं	राई ∽ राय	त/ओं	रायतों व्यंजन वा० सं०

१— वेंन्दोई में 'द' श्रुति का आगम नणदोई के सादृश्य पर हुआ है।

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	
/-दोँन/	पोँन	दोँन	पोँनदोँन	पात्र वा०
	अन्तर	दोँन	अन्तरदोँन	,,
/-न/ई/	मोर	नी	मोरनी	स्त्री० ,,
/-नोँम/ओँ/	खोलोँ ∽ खोला	नोँम/ओँ	खोलानोँमोँ	संबंध ,,
/-ण/ई/	भील	-ण/ई	भीलणी	स्त्री० ,,
	चोँन्द ∽ चोँन	-ण/ई	चोँनणी	वस्तु० ,,
	हाथी ∽ हथ	-ण/ई	हथणी	स्त्री० ,,
/-पण/	सगोँ ∽ सग	-पण	सगपण	सम्बन्ध ,,
	बाल	-पण	बालपण	भा०वा०सं०
/पण/ओँ/	मनख	-पण/ओँ	मनखपणोँ	सम्बन्ध ,,
/पाल/	खेत ∽ खेतर	-पाल	खेतरपाल	स्वामी० ,,
/-व/ओँ/	मल़	-व/ओँ	मल़वोँ	सम्बन्ध ,,
/-म/ओँ/	सूर	-म/ओँ	सूरमोँ	गु०वा०सं०
/-यार/ई/	पोँणी ∽ पण	-यार/ई	पणयारी	सम्बन्ध ,,
/-र/ई/	वोँस ∽ बंस	-र/ई	वंसरी	,,
/-र/ओँ/	देव	-र/ओँ	देवरोँ	,,
/-ल/ई/	सूत	-ल/ई	सूतली	,,
	डफ	-ल/ई	डफली	लघुवा०सं०
/-ल/ओँ/	भाई ∽ भाय	-ल/ओँ	भायलोँ	सम्बन्ध ,,
	छाज	-ल/ओँ	छाजलोँ	वस्तु वा०
/-वाड़/ओँ/	राज ∽ रज	-वाड़/ओँ	रजवाड़ोँ	सम्बन्ध ,,

५. २. २. २. २. सर्वनाम से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में सर्वनाम से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नलिखित है —

-ओं, प/ओं

इनका वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार है—

पर प्रत्यय	सर्वनाम	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	
/ओं/	आप	-ओं	आपों	भा०वा०सं०
/-प/ओं/	आप ∽ अपण	-प/ओ	अपणापों	”

५. २. २. २. ३. विशेषण से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में विशेषण से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

/-अक/, /-अण/ /-अत/, /-अस/, /-आ/ई/, /-आप/ओं/, /-आर/ओं/, /-आवट/, /-आस/, /-इय/ओं/, /-ई/, /-एल/ओं/, /-ओण/, /-क/ओं/, /-ग/ई/, /-ज/, /-ज/ओं/, /-ठ/, /-थ/, /-पण/, /-म/ई/, /-य/ओं/, /-स/,

इनका वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	
/-अक/	पाँच ∽ पंच	-अक	पंचक	समुदाय ”
/-अण/	झूठ	-अण	झूठण	भा०वा०सं०
/-अत/	खलाफ	-अत	खलाफत	”
/-अस/,	बारें ∽ बार	-अस	बारस	तिथि ”
	तेरें ∽ तेर	-अस	तेरस	”
/-आ/ई/	एक ∽ इक	-आ/ई/	इकाई	भा० व०सं०
	फीटों ∽ फीट	-आ/ई/	फीटाई	”
/-आप/ओं/	बूढों ∽ बूढ़	-आप/ओं	बूढ़ापों	”
/-आर/ओं/	अंध	-आर/ओं	अंधारों	संबंध वा
/-आवट/	तर	-आवट	तरावट	भा०वा०स
	जम	-आवट	जमावट	”

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न	संज्ञा रूप
/-आस/	खारों ∽ खार	-आस	खारास	भा०वा०सं०
	बाड़ों ∽ बाड़	-आस	बाड़ास	,,
/-इय/ओं/	पीलों ∽ पील	-इय/ओं	पीलीयों	रोग०व०
/-ई/	लाल	-ई	लाली	भा०वा०सं०
/-एल/ओं/	आधों ∽ अध	-एल/ओं	अधेलों	मुद्रा ,,
/-ओं/	दो ∽ दू	-ओं	दूओं	सम्बन्ध ,,
/-ओंण/	लम्बों ∽ लम्ब	-ओंण	लम्बोण	भा०वा०,,
	नीचों ∽ नीच	-ओंण	नीचोंण	,,
/-क/ओं/	च्यार ∽ चों	-क/ओं	चोंकों	सम्बन्ध ,,
	एक	-क/ओं	एकों	सवारी ,,
/-ग/ई/	सादों ∽ साद	-ग/ई	सादगी	भा०वा० ,,
/-ज/	दो ∽ दू	-ज	दूज	तिथि ,,
/-ज/ओं/	पाँच ∽ पं	-ज/ओं	पंजों	समूह ,,
/-ठ/	छौ ∽ छ	-ठ	छठ	तिथि ,,
/-थ/	च्यार ∽ चों	-थ	चोंथ	,,
/-पण/	॰बड़ों ∽ ॰बड	-पण	॰बडपण	भा० ,,
/-म/ई/	दस	-म/ई	दसमी	तिथि ,,
/-य/ओं	सात	-य/ओं	सात्यों	,,
/-व/ओं/	बारें ∽ बार	-व/ओं	बारवों	संस्कार ,,
/-स/	चौदें ∽ चौद	-स	चौदस	तिथि वा० ,,

५.२.२.२.४. क्रिया-विशेषण से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में क्रिया-विशेषण से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्न-लिखित हैं —

/-अत/, /-इय/ओँ/, /-ई/, /-कार/, /-वार/,

उपर्युक्त पर प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार है —

पर प्रत्यय	क्रिया-विशेषण	पर प्रत्यय→	व्युत्पन्न	संज्ञा रूप
/-अत/	जरुर	-अत	जरुरत	भा०वा०सं०
/-इय/ओँ/	फटफट	-इय/ओँ/	फटफटियोँ	सम्बन्ध ,,
/-ई/	रोज	-ई	रोजी	भा०वा०सं०
/-कार/	पेस	-कार	पेसकार	कर्तृ ,,
	रोज ～ रुज	-कार	रुजकार	भा०वा० सं०
/-वार/	पैदा	-वार	पैदावार	,,

५. २. २. २. ५. संज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में संज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

/-अल/, /-अस्वी/, /-अंग/, /-आ/ई/, /-आती/, /-आर/ऊ/, /-आल/आ/, /-इयल/, /-इय/आ/, /-इंद/ओँ/, /-ई/, /-ईन/, /-ईल/ओँ/, /-ऊ/, /-एड़/ई/, /-एर/, /-एल/ऊ/, /-एल/, /-ओँ/, /-ओँन/आ/, /-कार/, /-की/, /-खोर/, /-गार/, /-ची/, /-दार/, /-नाक/, /-बाज/, /-मंद/, /-ल/ओँ/, /-लू/, /-वर/, /-वोँन/, /-वार/, /-वी/,

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/-अल/	चोटी ～ चोट	-अल	चोटल
	घाव ～ घय	-अल	घायल
/-अस्वी/	तेज	-अस्वी	तेजस्वी
	तप	-अस्वी	तपस्वी
/-अंग/	०दड़	-अंग	दड़ंग
/-आ/ई/	पूरब ～ पुरब	-आ/ई	पुरवाई
/-आती/	०बर	-आती	०बराती

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/-आर/ऊ/	दूध	-आर/ऊ	दूधारू
/आल/आ/	घूंघरों ∽ घुघर	-आल/आ	घुघराला
/-इयल/	दाढ़ी ∽ दढ़	-इयल	दढ़ियल
/-इय/आ/	केसर	-इय/आ	केसरिया
	दूध	-इय/आ	दूधिया
/इंद/ओं/	॰बायु ∽ ॰बा	-इंद/ओं	॰बाइंदों
/-ई/	॰बास	-ई	॰बासी
	देस	-ई	देसी
/-ईन/	संग	-ईन	संगीन
	रंग	-ईन	रगीन
	सोंख	-ईन	सोंखीन
/-ईल/ओं	जेंर	-ईल/ओं	जेंरीलों
	एँब	-ईल/ओं	एँबीलों
/-ऊ/	घर	-ऊ	घरू
/-एड़/ई/	भोंग ∽ भंग	-एड़/ई	भंगेड़ी
/-एर/	॰दल	-एर	॰दलेर
/-एल/ऊ/	घर	-एल/ऊ	घरेलू
/-एल/	॰बगड़	-एल	॰बगड़ेल
/-ओं/	एकतरफ	-ओं	इकतरफों
/-ओंन/आ/	जन	-ओंन/आ	जनोंना
	मरद	-ओंन/आ	मरदोंना
/-कार/	सला	-कार	सलाकार
/-की/	सन	-की	सनकी
/-खोर/	घूंस	-खोर	घूंसखोर
/-गार/	गुना	-गार	गुनागार
/-ची/	अफीम	-ची	अफीमची
/-दार/	रस	-दार	रसदार

/-दार/	दल़	-दार	दल़दार
/-नाक/	खतरों ∽ खतर	-नाक	खतरनाक
/-बाज/	रंडी	-बाज	रन्डीबाज
	घोखों ∽ घोखा	-बाज	घोखाबाज
/-मंद/	अकल	-मंद	अकलमंद
/-ल/ओँ/	लाड	-ल/ओँ	लाडलों
	घूंघ	-ल़/ओँ	घूंघल़ों
/-लू/	दया	-लू	दयालू
/-वर/	ताकत	-वर	ताकतवर
/-वोँन/	धन	-वोँन	धनवोँन
	रूप	-वोँन	रूपवोँन
/-वार/	उम्मीद	-वार	उम्मीदवार
/-वी/	माया	-वी	मायावी

५. २. २. २. ६. सर्वनाम से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में सर्वनाम से विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय निम्नलिखित है— त/ओँ/,-स/ओँ/, -स/ई/

उपर्युक्त पर प्रत्ययों का विश्लेषण इस प्रकार है—

पर प्रत्यय	सर्वनाम	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/-त/ओँ/	ओँ ∽ अ	-त/ओँ	अत्तोँ
	वोँ ∽ व	-त/ओँ	वत्तोँ
	कूंण ∽ क	-त/ओँ	कत्तोँ
/-स/ई/	आप	-स/ई	आपसी
/-स/ओँ/	ओँ ∽ अ	-स/ओँ	अस्सोँ
	वोँ ∽ व	-स/ओँ	वस्सोँ

त/ओँ/, -स/ओँ/प्रत्यायों का द्वित्व (स्स/ओँ-त्त/ओँ आदि) क्रमशः -तं एवं-सं पर बल अधिक होने के कारण हुआ है।

५. २. २. २. ७. विशेषण से विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय

वीकानेरी में विशेपण से विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय निम्न लिखित हैं— /-आ/ई/, /-आय/ओँ/, /-इय/ओँ /-ए/, /-एल/, /-ओ/, /-ओन/, /-खर/, /-ती/, /-णी/, /-म/ओँ/, /-लोँ/, /-व/ओँ /,

उपर्युक्त प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेपण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता हैं—

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/-आ/ई/	चोँथोँ ∽ चोँथ	-आ/ई	चोँथाई
/-आय/ओँ	परं	-आय/ओँ	परायोँ
/-इय/ओँ/	पच्चीस	-इय/ओँ	पच्चीसियोँ
/-ए/	दो	-ए	दोए
/-एल/ओँ/	एक	-एल/ओँ	एकेलोँ
/-ओ/	सात	-ओ	सातो
	पोँच	-ओ	पोँचो
/-ओन/	०वीस	-ओन	०वीसोन
	पचास	-ओन	पचासोन
/-खर/	घणोँ ∽ घण	-खर	घणखर
/-ती/	कम	-ती	कमती
/-णी/	तपस्वी ∽ तपस्व	-णी	तपस्वणी
/-म/ओँ/	नौ ∽ न	-म/ओँ	नमोँ
/-लोँ/	हेठोँ ∽ हेठ	-लोँ	हेठलोँ
/-व/ओँ	नौ ∽ न	-व/ओँ	नवोँ

५. २. २. २. ८. क्रिया-विशेषण से विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय

वीकानेरी में क्रिया-विशेपण से विशेपण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्न-लिखित है—

पर प्रत्यय	क्रियाविशेषण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/-आवर/	गरद	-आवर	गरदावर
/-ई/	ऊपर	-ई	ऊपरी
	चटपट	-ई	चटपटी
/-वाज/	जल्दी ~ जल्द	-वाज	जल्दवाज

५. ३. व्याकरणिक प्रत्यय : विभक्ति प्रत्यय

जिन आवद्ध रूपों के प्रातिपदिक अथवा धातु में जुड़ने पर 'पद' रचना होती हैं उन आवद्ध रूपों को विभक्ति प्रत्यय कहते हैं। विभक्ति प्रत्ययों द्वारा रचित पदों को मुख्य रूप से तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है--नामपद, क्रियापद, क्रियाविशेषण-पद । प्रवन्ध सीमानुसार यहाँ केवल नामपदों की निर्माण कारी विभक्तियों पर ही विचार किया गया है।

जव किसी प्रातिपदिक अथवा धातु में कोई विभक्ति प्रत्यय लगता है तो उसके द्वारा एक साथ कई व्याकरणिक कोटियों का वोध होता है, यथा--

'घोड़ें नें खूंटें सूं वाँध दे' वाक्य में /घोड़ें/ /खूंटें/ पद द्रष्टव्य है। इन पदों में /-एँ/ विभक्ति का योग हुआ है। इस विभक्ति के द्वारा एक साथ पुल्लिग, एकवचन विकृत कारक का वोध होता है। वीकानेरी में कुछ विभक्तियां इस प्रकार की भी है जो विविध व्याकरणिक सम्वन्ध वोध कराने के साथ-साथ व्युत्पादन क्षमता भी रखती है। उदाहरणार्थ/ ̥वींटी/पद प्रस्तुत किया जा सकता है /इस पद में /-ई/विभक्ति एक ओर तो स्त्रीलिंग, एकवचन, मूलकारक का वोध कराती है एवं दूसरी ओर इससे आभूषणार्थक वोध भी होता है ।

५. ३. १. संज्ञापदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

वीकानेरी प्रातिपदिकों में लिंग, वचन, कारक के अनुरूप विभक्तियों का योग होता है एवं इनके योग से संज्ञापद निर्मित होते है। जैसा कि गत अध्यायों में उल्लेख किया जा चुका है कि वीकानेरी में दो लिंग, दो वचन एवं तीन कारक रूप हैं। इस प्रकार एक संज्ञापद के तीनों कारकों में लिंग एवं वचन की दृष्टि से

बारह रूप सिद्ध होते हैं – छै पुल्लिग रूप एवं छै स्त्रीलिंग रूप परन्तु यह नियम उन संज्ञापदों के लिए है जिनके स्त्रीलिंग एवं पुल्लिग रूप दोनों वचनों में प्रयुक्त होते हैं क्योंकि बीकानेरी में कुछ इस प्रकार के सज्ञापद भी हैं जो या तो केवल पुल्लिग में प्रयुक्त होते हैं या केवल स्त्रीलिंग में।

बीकानेरी में संज्ञापदों के विभक्ति रूप भिन्न-भिन्न हैं। इस दृष्टि से बीकानेरी के समस्त संज्ञापदों को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है– पुल्लिग एवं स्त्रीलिंग। इनके अन्तर्गत विविध अन्त्य वाले संज्ञापदों को उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है। यथा —

५. ३.१.१. पुल्लिग संज्ञापदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

(क) आकारान्त पुल्लिग संज्ञा रूप — इस वर्ग के अन्तर्गत बीकानेरी के सभी आकारान्त पुल्लिग संज्ञा रूप आते हैं। बीकानेरी में आकारान्त पुल्लिग संज्ञा रूपों में निम्नलिखित विभक्तियां लगती है।

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-०
ति० आ० वि० प्र०	-०	-ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	-ओं

(ख) ईकारान्त पुल्लिग संज्ञा रूप — इस वर्ग के अन्तर्गत बीकानेरी के सभी ईकारान्त पुल्लिग रूप आते हैं। इन रूपों में लगने वाली विभक्तियां निम्नलिखित है-

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-०
ति० आ० वि० प्र०	-०	-य्/ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	-य्/ओं

ईकारान्त शब्दों में -ओं, -ओं आदि विभक्ति प्रत्यय लगने से पूर्व 'य' श्रुति का आगम हो जाता है।

(ग) ऊकारान्त पुल्लिग संज्ञा रूप — इस वर्ग के अन्तर्गत बीकानेरी के

समस्त ऊकारान्त पुल्लिग शब्द आते हैं। इनमें लगने वाली विभक्तियाँ निम्न-लिखित हैं—

	एकवचन	वहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-०
ति० आ० वि० प्र०	-०	-व्/ओं
स० आ० ति० प्र०	-०	-व्/ओं

ऊकारान्त शब्दों में विभक्ति प्रत्यय जुड़ने से पूर्व 'व' श्रुति का आगम हो जाता हैं।

(घ) एकारान्त पुल्लिग संज्ञा रूप — इस वर्ग में बीकानेरी के समस्त एकारान्त पुल्लिग संज्ञा रूप आते हैं।इनमें लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्न-लिखित हैं—

	एकवचन	वहुवचन
मू० आ०वि० प्र०	-०	-आ
ति० आ० वि० प्र०	-०	-ओं
स० आ० वि० प्रा०	-०	-ओं

(ङ) ओंकारान्त पुल्लिग संज्ञा रूप — इस वर्ग के अन्तर्गत बीकानेरी के समस्त ओंकारान्त पुल्लिग संज्ञा रूप आते हैं। इनमें जुड़ने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्नलिखित हैं –

	एकवचन	वहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-आ
ति० आ० वि० प्र०	-एँ, अे	-ओं
स० आ० वि० प्र०	-आ	-ओं

(च) व्यंजनान्त पुल्लिग संज्ञारूप — इस वर्ग के अन्तर्गत बीकानेरी के समस्त व्यजनान्त शब्द आते हैं। व्यंजनान्त पुल्लिग संज्ञा रूपों में लगने वाली विभक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	वहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-ओं
ति० आ० वि० प्र०	-०	-ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	-ओं

५.३.१.२. स्त्रीलिंग संज्ञापदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

(क) आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा रूप—

इस वर्ग में वीकानेरी के समस्त आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा रूप आते हैं। इन रूपों में लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	वहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-य/ओं
ति० आ० वि० प्र०	-०	-य्/ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	-य्/ओं

(ख) ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा रूप—इस वर्ग के अन्तर्गत वीकानेरी के समस्त ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा रूप आते हैं। इनमें लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	वहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-य्/ओं
ति० आ० वि० प्र०	-०	-य्/ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	-य्/ओं

(ग) ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा रूप—इस वर्ग में वीकानेरी के समस्त ऊकारान्त स्त्रीलिंग सज्ञा रूप आते हैं। इनमें लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्नलिखित हैं–

	एकवचन	वहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-व्/ओं
ति० आ० वि० प्र०	-०	व्/ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	व्/ओं

(घ) व्यंजनान्त स्त्रीलिंग संज्ञा रूप—इस वर्ग में वीकानेरी के समस्त व्यजनान्त

स्त्रीलिंग रूप आते हैं। इनमें लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्न लिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	य्/ओं
ति० आ० वि० प्र०	-०	य्/ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	-य्/ओं

स्त्रीलिंग के बहुवचन रूपों में -ओं विभक्ति प्रत्यय लगने से पूर्व य् श्रुति का आगम होता है परन्तु ऊकारान्त बहुवचन में 'य' के स्थान पर 'व' का आगम होता है।

५. ३. २. सर्वनाम पदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

सर्वनाम पदों के मूल एवं तिर्यक् आधार विधायक प्रत्ययों का विश्लेषण अध्याय तीन में किया जा चुका हैं अतः पुनरुक्ति नहीं की गई है। सर्वनाम पदों के संबोधन कारक रूप नहीं होते।

५. ३. ३. विशेषण पदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

बीकानेरी में कुछ विशेषण पदों में विभक्तियां अपने विशेष्य के लिंग,वचन एवं कारक के अनुरूप लगती है एव कुछ विशेषण अपने विशेष्य की विभक्तियों से सर्वथा अप्रभावित रहते हैं। बीकानेरी में समस्त ओंकारान्त विशेषण पदों में अपने विशेष्य के लिंग, वचन एवं कारक के अनुरूप विभक्तियां लगती है। ओंकारान्त विशेषणों के विभक्ति प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पुल्लिग एवं स्त्रीलिंग

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	आ,-य्/ओं
ति० आ० वि० प्र०	-एँ	ओं, -य्/ओं

बीकानेरी के आकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त एवं व्यंजनान्त विशेषण अपने विशेष्य के लिंग, वचन एवं कारक के अनुरूप विभक्तियां ग्रहण नहीं करते अतः उन विशेषण पदों में /-०/ विभक्ति का योग स्वीकार किया जा सकता है।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर बीकानेरी नामपदों के निर्माणकारी प्रत्ययों के अध्ययन को निष्कर्ष रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

बीकानेरी में संज्ञा एवं विशेषण पदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्ययों को निष्कर्ष रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

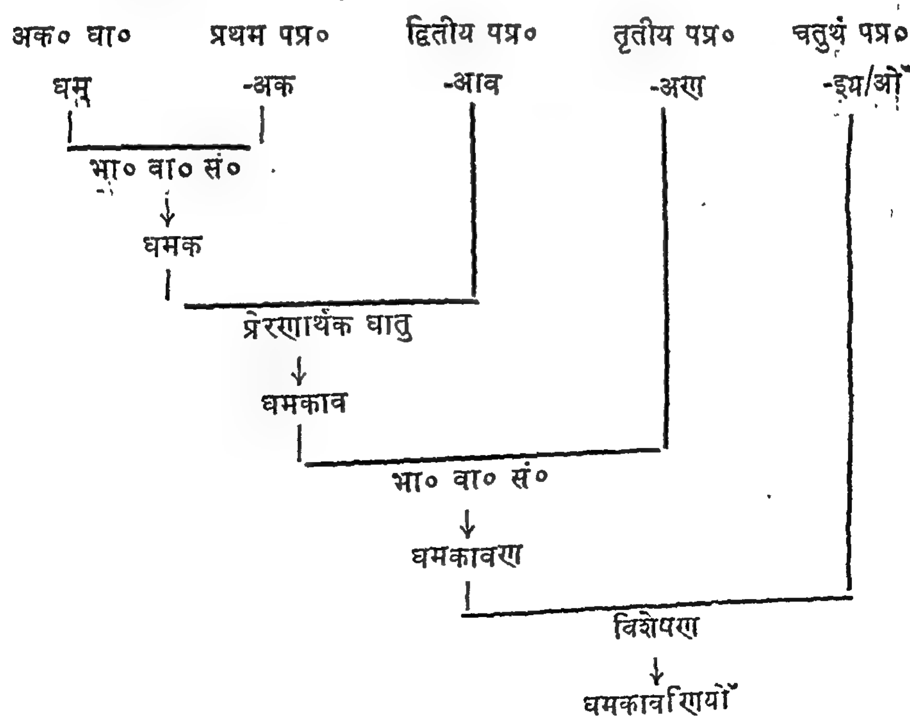
मू० एवं वि० सं० वि० रू०,	मू० आ०वि० प्र०,		ति० आ०वि० प्र०,		स०आ०वि०प्र०	
(१) आकारान्त पु० सं०	एक०	बहु०	एक०	बहु०	एक०	बहु०
राजा, राजाओं	/-०/,	/-०/,	/-०/,	/-ओं/,	/-०/	/-ओं/
(२) ईकारान्त पु० सं०						
दरजी, दरज्यों	/-०/,	/-०/,	/-०/,	-य्/ओं/,	/-०/,	/य्/ओं/
(३) ऊकारान्त पु० सं०						
आलू, आलवों	/-०/,	/-०/,	/-०/,	/-व्/ओं/,	/-०/,	/-व्/ओं/
(४) एकारान्त पु० सं०						
दूबे, दूबा, दूबों	/-०/,	/-आ/,	/-०/,	/-ओं/,	/-०/,	/-ओं/
(५) ओंकारान्त पु० सं०						
छोरों, छोरा, छोरें	/-०/,	/-आ/,	/-एँ/,	/-ओं/,	/-आ/,	/ओं/
(६) व्यंजनान्त पु० सं०						
घर्, घरों	/-०/,	/-०/,	/-०/,	/-ओं/,	/-०/,	/-ओं/
(७) आकारान्त स्त्री० सं०						
मां, मायों	/-०/,	/-य्/ओं/,	/-०/,	/-य्/ओं/,	/-०/,	/-य्/ओं/
(८) ईकारान्त स्त्री०/सं०						
छोरी, छोर्यों	/-०/,	/-य्/ओं/,	/-०/,	/-य्/ओं/,	/-०/,	/-य्/ओं/
(९) ऊकारान्त स्त्री० सं०						
०बऊ, ०बवों	/-०/,	/-व्/ओं/,	/-०/,	/-व्/ओं/,	/-०/,	/व्/ओं/
(१०) व्यंजनान्त स्त्री० सं०						
पाग्, पाग्यों	/-०/,	/य्/ओं/,	/-०/,	/-य्/ओं/,	/-०/,	/-य/ओं/
(११) आ. ई. ऊ. व्यं. वि.						
केसरिया, ऊपरी, घरू सुपातर्	/-०/,	/-०/,,	/-०/	/-०/,	/-०/,	/-०/
(१२) ओंकारान्त वि०						
धोंलों, धोली	/-०/	/-आ/(पु०)	/-इय/एँ/	/-ओं/ (पु०)	/-०/	/-ओं/
धोंला आदि		/-य्/ओं/(स्त्री०)		/य्/ओं/ (स्त्री०)		/-य्/ओं/

बीकानेरी में पूर्व एवं पर प्रत्ययों के अतिरिक्त मध्य प्रत्ययों का योग भी उपलब्ध होता है। मध्य योग के अन्तर्गत स्वर विकार हीं अर्थ अभिनवता का आधार बनता है। यथा—

संज्ञा रूप	मध्य प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
पग (पैर)	अ > आ	पाग
॰वड़ (वट वृक्ष)	अ > आ	॰वाड़
खीर	ई > आ	॰खार
पेटी	ए > आ	पाटी
डंडो॑	अं > ओं	डों॑डो॑

विश्लेषित प्रत्ययों के योगक्रम के आधार पर कहा जा सकता है कि कुछ प्रत्यय इस प्रकार के हैं जो एक ओर तो व्याकरणिक कोटियों के विभिन्न अर्थों का बोध कराते हैं तो दूसरी ओर विभिन्न अभिनवार्थक भी हैं।

बीकानेरी में मूल शब्द के पश्चात् अधिकतम चार पर प्रत्ययों का योग संभव है। चार पर प्रत्ययों के योग के उदाहरण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। यौगिक प्रक्रिया के साथ आने वाले चार पर प्रत्ययों का समीपी संबंध निम्न प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता है—



उपसंहार

पिछले अध्यायों में बीकानेरी-नामपदों का सर्वांगीण वर्णनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन की उपलब्धियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बीकानेरी नामपदों का निर्माण एवं विकास परम्परा पाणिनीय पद्धति पर आधृत होते हुए भी सर्वथा भिन्न है। पाणिनीय व्याकरण के अनुसार प्रातिपदिक अंश में 'सुप्' प्रत्यय जुड़ने पर 'सुबन्त' पद रचना होती है, यथा- अजन्त पुल्लिग शब्द 'राम' में 'सु' प्रत्यय जुड़ने पर 'रामः' पद निष्पन्न होता है एवं इसी राम शब्द के लिंग, वचन, कारक के अनुसार चौबीस रूप सिद्ध होते हैं परन्तु आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं एवं बोलियों की भांति बीकानेरी में संज्ञा पदों के केवल तीन ही रूप- मूल, विकारी, एवं सम्बोधन- अवशिष्ट रहे हैं। मूल रूप अपने प्रातिपदिक रूप में ही वाक्यान्तर्गत प्रयुक्त होते है। विकारी रूप वाक्यान्तर्गत तिर्यक् विभक्ति प्रत्ययो व परसंर्गों को ग्रहण करते हैं। सम्बोधन रूपों का प्रयोग केवल भावावेश में ही होता है। प्रश्न यह उठता है कि जब मूल रूप वाक्यान्तर्गत प्रातिपदिक रूप में ही प्रयुक्त होता है तो 'पद' एवं प्रातिपदिक में क्या अन्तर हुआ? क्योंकि संस्कृत में प्रयोगार्हं शब्द ही 'पद' है? उत्तर स्वरूप हम कह सकते है कि आ० भा० आ० भा० व बोलियों का उदय सरलीकरण की प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप हुआ है। बीकानेरी बोली भी आ०भा० आ० भा० की ही एक बोली है अतः इसमें जटिल एवं दुरूह परम्परा को नहीं अपनाया गया हैं। प्रातिपदिक अंश जब वाक्यान्तर्गत मूल रूप में प्रयुक्त होता है तो वहां /–०/ विभक्ति के योग से पद रचना स्वीकार की जा सकती है।

इतना ही नहीं बीकानेरी संज्ञापदों में केवल पुल्लिग ओंकारान्त शब्दों के ही मूल एवं विकारी रूपों में एकवचन एवं बहुवचन के अनुरूप भिन्न-भिन्न रूप उपलब्ध होते हैं शेष आकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त, व्यंजनान्त पुल्लिग एवं स्त्रीलिग दोनों ही संज्ञाओं के केवल दो ही रूप व्यवहार में आते हैं। उनके मूल

एवं विकारी रूपों में भेदकता सिद्धि हेतु /–०/ विभक्ति की कल्पना करनी पड़ती है।

संस्कृत में कारक बोधक चिन्ह संश्लिष्ट एवं वचन के अनुरूप भिन्न-भिन्न होते हैं परन्तु बीकानेरी में कारक बोधक चिन्ह विश्लिष्ट एवं एकवचन व वहुवचन में एक ही रूप को धारण करते हैं। लिंग विधान की दृष्टि से बीकानेरी में मुख्य रूप से केवल दो ही लिंग उपलब्ध होते हैं – पुल्लिग एंव स्त्रीलिंग। परन्तु कुछ सज्ञाएं ऐसी भी हैं जो या तो केवल पुल्लिग में ही प्रयुक्त होती है या केवल स्त्रीलिंग में। वचल केवल दो ही हैं– एकवचन, बहुवचन। सर्वनाम पदों की रचना प्रक्रिया संज्ञा पदों के अनुरूप ही है जिनके वे स्थानापन्न हैं। विशेषण पदों में केवल ओकारान्त विशेषण ही अपने विशेष्य के अनुरूप लिंग, वचन, कारक बोधक विभक्ति प्रत्यय ग्रहण करते है शेष विशेषण-पद अपने विशेष्य से सर्वथा अप्रभावित रहते हैं।

प्रत्ययों के द्वारा पदों का निर्माण संस्कृत की परिपाटी के अनुरूप ही है। कृत् एवं तद्धित प्रत्ययों से पदों की रचना होती है। साराँश में बीकानेरी-नामपद रचना एवं विश्लेषण की दृष्टि से संस्कृत वैयाकरणों की परिपाटी से प्रभावित होते हुए भी अपनी कुछ निजी वैशिष्ट्य रखते हैं, जिनका उपयुक्त विवेचन यथा स्थान कर दिया जाता है।

⊖–⊖

सहायक ग्रन्थ-सूची

(क) संस्कृत के ग्रन्थ

(१) ऋग्वेद	:	सायरण भाष्य
(२) वाल्मीकि रामायण	:	वाल्मीकि
(३) महाभारत	:	गीता प्रेस, गोरखपुर
(४) अष्टाध्यायी	:	पाणिनि
(५) नाट्य शास्त्र	:	भरत मुनि
(६) सिद्धान्त कौमुदी	:	बालमनोरमा टीका
(७) प्राकृत प्रकाश	:	वररुचि
(८) शब्द कल्पद्रुम	:	पूना संस्करण
(९) भाव प्रकाश	:	निर्णय सागर प्रेस
(१०) कालिदास ग्रन्थावली	:	सं० सीताराम चतुर्वेदी
(११) संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन	:	डॉ० भोलाशंकर व्यास

(ख) हिन्दी के ग्रन्थ

(१२) हिन्दी व्याकरण	:	पं० कामता प्रसाद गुरू
(१३) हिन्दी शब्दानुशासन	:	पं० किशोरीदास वाजपेयी
(१४) भाषा-विज्ञान-कोष	:	भोलानाथ तिवाड़ी
(१५) राजस्थानी भाषा	:	सुनीति कुमार
(१६) हिन्दी भाषा:उद्गम और विकास	:	डॉ० उदयनारायण तिवाड़ी
(१७) हिन्दी भाषा का इतिहास	:	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा
(१८) हिन्दी भाषा उद्‌भव, रूप और विकास	:	डॉ० हरदेव बाहरी
(१९) हिन्दी भाषा रूप और विश्लेषण	:	डॉ० चन्द्रभान रावत
(२०) भाषा–विज्ञान	:	डॉ० श्याम सुन्दर दास
(२१) हिन्दी कारकों का विकास	:	शिवनाथ
(२२) हिन्दी में प्रत्यय विचार	:	डॉ० मुरारी लाल उप्रैति
(२३) हिन्दी समास रचना का अध्ययन	:	डॉ० रमेशचन्द्र जैन
(२४) हिन्दी भाषा रूप और विकास	:	डॉ० सरनाम सिंह
(२५) भाषा–विज्ञान	:	भोलानाथ तिवाड़ी

(२६) हिन्दी शब्द सागर : डॉ० श्यामसुन्दर दास

(२७) हिन्दी-विश्वकोश : ,,

(२८) शेखावाटी बोली का वर्णनात्मक अध्ययन : कैलाश चन्द्र अग्रवाल

(२९) राजस्थानी भाषा और साहित्य : हीरालाल माहेश्वरी

(३०) राजस्थानी व्याकरण : प्रो० नरोत्तमदास स्वामी

(३१) राजस्थानी भाषा और साहित्य : डॉ० मोतीलाल मेनारिया

(३२) मारवाड़ी व्याकरण : सीताराम लालस

(३३) वीर सतसई की भाषा : डॉ० कन्हैयालाल

(३४) पुरानी राजस्थानी : तेसीतोरी

(३५) राजस्थानी भाषा की रूपरेखा पुरुषोत्तम मेनारिया

(३६) राजस्थानी शब्द-कोश : सीताराम लालस

(३७) बीकानेर के राज्य घराने का केन्द्रीय सत्ता से संबंध : डॉ० करणीसिंह

(३८) बीकानेर राज्य का इतिहास : गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

(३९) बीकानेर एक परिचय : गौरी शंकर आचार्य

(४०) राजस्थान का इतिहास : कर्नल टाड

(४१) हाडोती बोली और साहित्य : डॉ० कन्हैयालाल शर्मा

(ग) अंग्रेजी के ग्रन्थ

(४२) एल. एस. आई. भाग ९ : डॉ० ग्रियर्सन

(४३) ए माडर्न इंगलिश ग्रामर : जेस्पर्सन

(४४) डिक्सनरी ऑफ लिंग्विस्टिक्स : पाई

(४५) लैंग्वेज : ब्लूमफील्ड

(४६) आब्जरवेशन ऑन हेमचन्द्र : देशी नाम माला

(घ) पत्र पत्रिकाएं

(४७) राजस्थान भारती

(४८) शोध-पत्रिका

(४९) विश्वम्भरा

(५०) इण्डियन लिंग्विस्टिक्स

(५१) लैंग्वेज